क़ुरआन
सार

जन जन की भाषा में

राजेन्द्र कुमार गुप्ता

प्रकाशक
महात्मा रामचन्द्र पब्लिकेशन्स
फतेहगढ़ (उ.प्र.) 209601, भारत

पुस्तक शीर्षक : **क़ुरआन सार**

प्रकाशन वर्ष : प्रथम बार : 2007
द्वितीय बार : 2008

प्रकाशित प्रतियां : 400 प्रथम बार
300 द्वितीय बार

प्रकाशक : महात्मा रामचन्द्र पि लकेशन लीग,
फतेहगढ़ (उ.प्र.) 209601 भारत की ओर से

मुद्रक : **सेन्चुरी कम्प्यूटर एण्ड प्रिन्टर्स**
फोन : 310057, मो. : 94-1380-3287

मूल्य : रु. 150/-

© **सर्वाधिकार** : **राजेन्द्र कुमार गुप्ता**

ISBN 978-81-904595-1-8

Introduction

Hindus and Muslims have lived together in the Indian sub-continent for more than thirteen centuries. During this period, they had ample opportunites of studying each other's scriptures, translating them into mutually comprehensible languages, commenting upon them in a dispassionate and objective manner and entering into constructive interfaith dialogue towards mutual understanding and respect.

Unfortunately, these opportunities were honoured more in missing than in utilization. Al-Beruni, the great Muslim scientist and historian, who came to India in the 13th century and stayed on to give and take knowledge in India, was perhaps the first scholar to write with empathy of the Hindu religions, and its scriputres, and of Indian philosophy. During the 13th/14th centuries saints like Nizamuddin Aulia and poets like Amir Khusraw contributed substantially towards inter-faith understanding and dialogue. Thereafter, there is a long gap until the Moghul times. Akbar with his syncretic views encouraged inter-faith dialogue and many scholars of his court, such as Abul Fazl and Faizi translated and commented upon the Ramayan and Mahabharat. Thereafter, we have poets such as Jaisi, Khan Khanan and others who were real lovers of Indian literature. There was even Abdur Rahman Chishti who wrote an erudite and sympathetic commentary called "Haqaiq" on the Bhagwat Gita. There was of course Dara Shikhoh, the son of Shahjahan who not only encouraged inter-faith dialogue like his great grand father, but also wrote commentaries on the Upanishads and other Indian scriptures.

I have not come across any non-Muslim erudite commentary on the Quran or the Hadees. Europeans and Americans have written and continue to write profusely on both these subjects, sometimes

objectively but more often with thier own axes to grind. It is therefore with great happiness and satisfaction that I encountered Rajendra Kumar Gupta, an eminent product of the best composite culture of India and a representative of the syncretic tradition establised by our *rishis,* sufis and mystic poets. Gupta belongs to the eminent order of the Ramchandriya-Naqshbandiya mystic order, establised by the joint inspiration of Mazhar-Jan-e-Janan and Ramchandra, both great mystics of the 18th/19th centuries. Gupta has written a passionate hagiography of the saints of that Order, called "Yogis in Silence", a book that all those who are interested in the interfaith understanding between various faiths of India should make it a point to read. He also wrote two more books called 'Sufism Beyond Religion" and "Science and Philosophy of Spirituality". Whatever Gupta writes, he brings to the subject of sense a great passion and commitment, which is the hallmark of a sincere man. Even though he belongs to the civil service of India, dealing with very sensitive and critical subjects for the country, his devotion to sprituality and his deep sense of divinity is evidenced from his three writings mentioned above.

His new venture "Quran Sar", is not, and does not aspire to be a translation of the Quran. Nor has he undertaken to interpret the Quran as a whole or word for word. "Quran Sar" is an expression of Gupta's understanding of the main passages of the Quran, and is meant to convey to the Hindi reader the essence of the various chapters of the Quran in easy, day to day language. Two of the great translators refused to use the term translation of their ventures. One called it "The meaning", and the other called it "the interpretation". Gupta, likewise, prefers to call his efforts "essence". Such articulation should convey to those who are coming to read Quran for the first time the underlying message of of the Holy Book and its emphasis on the unity of mankind, the validity of the revelation vouchsafed to mankind before Prophet Muhammad, the ethical laws which govern the

relationship between man and God, man and man, and man and society.

Gupta has once again contributed with his essence towards an inter-faith understanding and I hope this "essential" venture would lead to better appreciation and understanding of the community of ideals between the two major communities of India, viz. Hindus and Muslims.

Moosa Raza
Trustee - India Islamic Cultural Centre, and
Former Secretary, Government of India

''प्रस्तावना''

भारतीय उप महाद्वीप में हिन्दू और मुस्लिम दोनों तेरह शताि दयों से भी अधिक समय से साथ-साथ रहते आये हैं। इस दौरान उन्हें एक-दूसरे के धर्मग्रंथों का अध्ययन करने, पारस्परिक समझ के अनुरूप भाषाओं में अनुवाद करने और तटस्थ तथा यथार्थ भाव से रचनात्मक अन्तरधर्मीय संवाद के बहुत से अवसर मिले जिससे पारस्परिक आदर व समझ को बल मिला।

लेकिन दुर्भाग्य से इन प्रयासों को यथोचित सम्मान यदा-कदा ही प्राप्त हो पाया। तेरहवीं शता दी के महान वैज्ञानिक एवं इतिहासकार अल-बरूनी जिन्होंने ज्ञान का आदान-प्रदान करने हेतु भारत भ्रमण किया था, ऐसे प्रथम विद्वान थे जिन्होंने हिन्दू धर्म, शास्त्रों और हिन्दू दर्शन को अनुभूत कर उनके बारे में लिखा। तेरहवीं-चौदहवीं शता दी में हजरत निजामुद्दीन औलिया जैसे संत एवं अमीर खुसरों जैसे प्रतिभा के धनी कवि ने अन्तरधर्मीय संवाद और समझ में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान किया। इसके लम्बे समय बाद अपने समन्वयवादी विचारों के साथ अकबर ने अन्तरधर्मीय संवाद को प्रोत्साहन दिया और उसके दरबार के बहुत से विद्वानों जैसे अबुल फजल एवं फैजी ने रामायण एवं महाभारत जैसे ग्रंथों का अनुवाद और समीक्षा की। उनके बाद जायसी और खान खानन जैसे कवियों का उदाहरण आता है जो भारतीय साहित्य के सच्चे प्रेमी थे। यही नहीं, अ दुर रहमान चिश्ती ने भगवदगीता पर ''हाकिक'' नाम से विद्वातापूर्ण एवं मर्मस्पर्शी टीका लिखी और शाहजहां के सुपुत्र दारा-शिखो ने अपने पर-दादा की तरह ना केवल आपसी संवाद को प्रोत्साहित किया बल्कि उसने उपनिशदों एवं अन्य ग्रंथों पर टीकाएं भी लिखीं। किसी गैर मुस्लिम द्वारा क़ुरआन या हादिस पर लिखी कोई पांडित्यपूर्ण टीका मेरी नजरों में अभी तक नहीं आयी। यूरोपीय और अमेरिकी लेखकों ने अवश्य लिखा है, और वे निरन्तर लिखते रहते हैं, कभी-कभार यथार्थ भाव से, लेकिन अधिकतर पूर्वाग्रहों से ग्रसित हो कर। अत: मेरे लिये यह अत्यंत प्रसन्नता एवं संतुष्टि का विषय है कि मेरी मुलाकात राजेन्द्र कुमार गुप्ता से हुई, जो बेहतरीन भारतीय मिश्रित संस्कृति के एक उत्कृष्ट परिणाम और ऋषियों, सूफी एवं रहस्यवादी कवियों के एक प्रतिनिधि के रूप में मेरे सामने आये। गुप्ता प्रतिष्ठित रामचंद्रिया न शबंदिया सूफी सिलसिले से संबंधित हैं। यह सूफी सिलसिला हजरत मिर्ज़ा ज़ानज़ाना एवं रामचंद्र जी जो अठाहरवीं-उन्नीसवीं सदी में महान सूफी

संत हुए हैं, की संयु त प्रेरणा से स्थापित हुआ। गुप्ता ने इस सिलसिले के संत महात्माओं के जीवन चरित्र पर "Yogis in Silence" नाम से एक भावपूर्ण पुस्तक लिखी है जिसे उन सभी को जो भारत के विभिन्न धार्मिक आस्थाओं के बीच समन्वय में रुचि रखते हों, अवश्य पढ़नी चाहिए। उनकी दो और पुस्तकें "Sufism Beyond Religion" एवं "Science and Philosophy of Spirituality" भी प्रकाशित हो चुकी हैं। गुप्ता के लेखन में भाव प्रवणता एवं प्रतिबद्धता का सम्मिश्रण है जो एक निष्कपट लेखक के प्रमाण चिन्ह हैं। भारतीय सिविल सर्विस में संवेदीनशील कार्य करते हुए आध्यात्मिक और देवीय भाव के प्रति इनका गहन समर्पण उनके उपरो त लेखन कार्य से परिलक्षित होता है।

उनके इस नये कार्य क़ुरआन सार में उनकी आकंक्षा क़रआन का अनुवाद करना नहीं है। यह कार्य ना तो क़ुरआन का अनुवाद है, ना ही क़ुरआन की सम्पूर्ण-रूपेण व्याख्या या उसका श दार्थ। क़ुरआन सार में गुप्ता ने क़ुरआन के मुख्य अंशों को अपनी समझ के अनुसार प्रस्तुत किया है जिसका उद्देश्य क़ुरआन के विभिन्न सूरो: का सार, हिन्दी पाठकों के लिए सरल एवं रोजमर्रा की भाषा में पेश करना है। क़ुरआन के अंग्रेजी भाषा के दो मुख्य अनुवादक ममार्दुक पिकथल एवं ए.जे. आर्बरी दोनों ने अपने कार्यों को क़ुरआन का अनुवाद कहलाने से इंकार किया। एक ने इसे "The meaning" (अर्थ) और दूसरे ने उसे "The interpretation" (व्याख्या) कहा। इसी तरह गुप्ता अपने कार्य को "Essence" (सार) कहते हैं। यह घोषणा इंगित करती है कि क़ुरआन को पहली दफा पढ़ने वाले पाठकों को यह पुस्तक इस पवित्र ग्रंथ में अन्तरनिहित संदेश, मानवता की एकता पर बल, मानव जाति के लिए पैगम्बर मुहम्मद के समक्ष उदघोषित दिव्य ज्ञान की प्रमाणिकता, मनुष्य के परमात्मा, अन्य मनुष्यों एवं समाज के साथ संबंधों को अनुशासित करने वाले सदाचार के नियम का सार जानने समझने का अवसर प्रदान करती है।

गुप्ता ने एक बार फिर से इस क़ुरआन सार द्वारा अन्तरधर्मीय आस्थाओं के बीच आपसी समझ व समन्वय के लिए योगदान किया है। मैं आशा करता हूँ कि यह सारभूत प्रयास भारत की दो मुख्य कौमों - हिन्दू एवं मुसलमानों को एक-दूसरे को और बेहतर ढंग से समझने व सराहने में सहायक होगा।

मूसा राजा
ट्रस्टी - इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर
एवं भारत सरकार के पूर्व सचिव

Foreword

The present compilation is an attempt to put the essence of the 'Quran' in poetry form in the language of the common man. According to the author, R.K. Gupta, a disciple of Naqshbandi Sufi Master Thakur Ram Singhji of Sanganer (Jaipur), not many people have read the Quran themeselves. Whatever knowledge of the Quran they have is acquired from others. The author has, therefore, attempted to make the present compilation for the common readers to see for themselves what the Quran says. The author has written other books such as "Yogis in Silence - The Great Sufi Masters"; Sufism Beyond Religion"; "The Science and Philosophy of Spirituality"; Prem Pravartak Sufi" and "Sufi Santmat-Darshan aur Vigyan".

The inspiration to translate the Quran was not a pre-meditated thought for the author, it occured to him, all of a sudden, as a divine inspiration in February 2007 and he commenced the work within a day or two. Although it seemed a herculean task, but with the help of God the words to convey the meaning of the verses started to flow. The divine grace can be seen from the fact that the entire work took less than two months to be completed.

The Quran is the word of God Almighty. The objective of the Quran is to make man aware of the Creation plan of God. That is, to tell man that God created him as an eternal creature and divided his life span into two periods for reward or punishment as merited by his stay on earth. In the present world of trial, any man or woman, to be eligible for reward needs to have two qualifications; one is to acknowledge the Creator and the other is to lead a principled life, as per the guidelines laid down in the Quran.

The Quran comprises of 114 Surahs or chapters and 6236

Ayats or verses. The author has translated these into 1669 poetic verses. Making the effort to present the translation in straightforward sytle, the order of the Surahs and Ayats have been maintained, although at many places the Ayats have been clubbed together in an attempt to put their essence in a poetry form.

The Quran has been preserved in its entirety for all time to come. Although written originally in Arabic, it has been made accessible, thanks to translations, to those who have no knowledge of Arabic. While no substitule for the original, translations serve the signle purpose of spreading the word of God far beyond the Arabic-speaking people. The present compilation is different from the others in as much as this translation is in a simple language and in poetry form, conveying the essence of the divine revelation.

I would like readers to read this compliation for themselves to find out about the Creation Plan of God as set forth in the Quran.

Wahiduddin Khan

President, Centre for Peace and Spirituality

June 2007

New Delhi, India

''प्रा कथन''

प्रस्तुत संकलन क़ुरआन के सार को जन-साधारण की भाषा में, कविता के रूप में पेश करने का एक प्रयास है। लेखक आर.के गुप्ता जो न शबंदी सूफी संत ठाकुर रामसिंह जी (सांगानेर - जयपुर) के शिष्य हैं, के अनुसार कम ही लागों ने क़ुरआन को स्वयं पढ़ा होगा। उन्हें जो थोड़ी बहुत जानकारी इस बारे में होती है, वह दूसरों के कहने सुनने से। अत: लेखक ने इस प्रयास द्वारा सामान्य पाठकों के लिये क़ुरआन को स्वयं जानने का एक अवसर उपल ध करवाया है। उन्होंने इसके अलावा अन्य पुस्तकें यथा "Yogis in Silence - The Great Sufi Masters"; Sufism Beyond Religion"; ''प्रेम प्रवर्तक सूफी'' और ''सूफी संत मत-दर्शन और विज्ञान'' भी लिखी है।

क़ुरआन की यह प्रस्तुति लेखक के कोई पूर्व संकल्प का क्रियान्वयन न होकर, फरवरी 2007 में यकायक एक दिव्य प्रेरणा का साकार होना है। तुरन्त ही लेखक ने एकाध दिन में इस पर कार्य शुरू कर दिया। हालांकि यह कार्य अत्यंत कठिन प्रतीत हो रहा था, लेकिन अल्लाह की मेहरबानी से उचित श दों का प्रवाह होने लगा। इस कार्य में ईश्वरीय कृपा का आभास इस बात से भी अनुभूत किया जा सकता है कि पूरे कार्य के सम्पन्न होने में दो महीने से भी कम समय लगा।

क़ुरआन सर्वशि तमान अल्लाह का फरमान है, इसका उद्देश्य मनुष्य को परमात्मा की सृष्टि रचना की व्यवस्था से अवगत कराना है, अर्थात् उसे यह बतलाना है कि परमात्मा ने मनुष्य को एक शाश्वत प्राणी के रूप में बनाया है जिसका जीवनकाल दो भागों में बांटा गया है:-एक मृत्यु से पहले का आजमाइश वाला निश्चित जीवनकाल और दूसरा मृत्यु उपरांत हमेशा की जिंदगी जिसमें वह यहां बिताये जीवन अनुसार पुरस्कार या दंड का भोग करता है। इस संसार में जहां आदमी और औरतों की आजमाइश होती है, भलाई पाने के लिए दो चीजें उनमें होना जरूरी है:-एक तो सृष्टिकर्ता के अस्तीत्व को स्वीकारना, और दूसरा क़ुरआन में वर्णित सिद्धांतों पर आधारित नियमित जीवन जीना।

क़ुरआन में 114 सूर: एवं 6263 आयतें शामिल हैं। लेखक ने इनका 1669 पदों में अनुवाद किया है। इस अनुवाद को सीधे-सरल तरीके से प्रस्तुत करने के प्रयास में

लेखक ने सूर: और आयतों का क्रम वैसे ही रखते हुए अधिकतर जगहों पर कई आयतों को इकट्ठा कर उनका सार पद रूप में अनुवादित किया है।

क़ुरआन को आने वाले व. त के लिए समग्र रूप से सुरक्षित कर रखा गया है। यद्यपि मूल रूप से क़ुरआन अरबी भाषा में है, लेकिन इसके अनुवादकों के प्रयासों द्वारा यह अरबी भाषा से अनभिज्ञ लागों तक पहुंचता रहा है। मूल रूप का स्थानापन्न न होने पर भी, अनुवादकों ने जो एक सबसे मुख्य कार्य साधा है वह है अल्लाह के फरमान को गैर-अरबी भाषी लागों में दूर-दूर तक पहुंचाना। प्रस्तुत कार्य औरों से कुछ अलग है, योंकि यह अनुवाद कवितामय और सरल भाषा में ईश्वरीय फरमान का सार लोगों तक पहुंचाता है।

मैं चाहूँगा की पाठक इसे स्वयं पढ़े और क़ुरआन में वर्णित परमात्मा की सृष्टि व्यवस्था के विषय में जानें।

वहीदुदीन खान,
प्रेसीडेंट, सेंटर फार पीस एण्ड स्पिरिच्यूलिटी

जून 2007
न्यू देहली, इंडिया

विनम्र निवेदन

परमात्मा की कृपा से पवित्र क़ुरआन का जन साधारण की भाषा में पदानुवाद करने का विचार इस नाचीज गुलाम के ज़ेहन में 21 फरवरी, 2007 को यकायक उतरा। तुरन्त ही इस विचार ने मूर्त रूप भी धारण कर लिया, और उसकी कृपा से यह कार्य शुरू हो गया।

मेरा ऐसा मानना है कि कम ही लोग पवित्र ग्रंथों का अध्ययन कर पाते हैं, ज्यादातर लोग तो किसी और से सुनकर बातों पर यकीन कर लेते हैं। मैं समझता हूँ कि स्वयं पढ़ना इससे कई ज्यादा संतोषजनक और लाभदायक होता है।

इस कार्य से पहले भी श्रीमद्भगवतगीता का जन-जन की भाषा में पदानुवाद इस गुलाम के माध्यम से हो चुका है, और इसी क्रम में पवित्र क़ुरआन का जन-जन की भाषा में यह पदानुवाद आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसका उद्देश्य पवित्र क़ुरआन पर कोई विद्वतापूर्ण टीका लिखना या उसका प्रामाणिक अनुवाद करना ना होकर, जन-साधारण की बोल-चाल की भाषा में पवित्र क़ुरआन का संदेश-सार प्रस्तुत करना भर है। जाने-अनजाने यदि इस कार्य में कोई ऐसी त्रुटि हो गई हो, जिससे आप सहमत ना हों, या जिससे किसी की भावनाओं को जरा सी भी ठेस पहुंचती हो, तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ, मेरा उद्देश्य, पवित्र क़ुरआन का मानवता के लिए जो संदेश है, उसे मोटे तौर पर साधारण भाषा में पाठकों तक पहुंचाना है।

पवित्र क़ुरआन जैसे गूढ़ ग्रंथ के सही मायने किसी और भाषा या श दों में, विशेषकर पद-रूप में व्य त करना, केवल परमात्मा की कृपा पर ही निर्भर है। इस कार्य में कितनी सफलता मिली यह वो ही जाने। जगह-जगह 'हम', 'वह', 'वो', 'उस', 'जिस' श दों द्वारा ख़ुदा को संबोधित किया गया है, जिसे संदर्भानुसार पाठक आसानी से समझ लेंगे।

परमात्मा श दों की जगह उसके पीछे उनमें निहित भावों को तवज्जोह देता है, ऐसा मेरा मानना है। अगर किसी जगह ऐसे श दों का प्रयोग हो गया हो जो पवित्र क़ुरआन की आयतों का भावार्थ सही रूप से प्रकट ना कर पायें हों तो मैं पाठकों से विनम्र निवेदन करता हूँ कि वे सही अर्थ को ही ग्रहण करने की कृपा करे।

इस कार्य को पूरा करने में मिले सहयोग एवं प्रोत्साहन के लिए अपनी पत्नि श्रीमती अनीता एवं परिवार का आभारी हूँ। श्री गुरु भगवान का यह कृपा प्रसाद उन्हीं के चरणों में समर्पित है। पाठक अपने सुझाव rkgupta51@yahoo.com या 011-22718010 पर दे सकते हैं। वे वैब-साइट www.geocities.com/sufisaints देखने के लिए भी आमंत्रित हैं जिस पर सूफी संत-महात्माओं के विषय में जानकारी उपल ध है।

सादर

राजेन्द्र कुमार गुप्ता

पुस्तक परिचय

पवित्र क़ुरआन के विषय में थोड़ा बहुत सभी जानते हैं। यह ग्रंथ ख़ुदा की आयतों का संकलन है। ये आयतें पैगम्बर मुहम्मद साहब पर लगभग तेइस वर्षों के दौरान नाज़िल हुईं। कभी-कभी बहुत थोड़ी सी आयतें और कभी पूरी का पूरी सूरतें। पैगम्बर मुहम्मद साहब पर लगभग चालीस वर्ष की आयु में ये आयतें उतरनी प्रारंभ हुईं।

शुरु में इन आयतों को कण्ठस्थ ही याद कर लिया जाता था। उन्हें लिखित रूप में संकलित करने का विचार पैगम्बर मुहम्मद साहब के कई वर्षों बाद क्रियान्वित हुआ। यह विचार सबसे पहले हज़रत उमर फ़ारुक के दिल में पैदा हुआ, जिन्होंने उसे हज़रत सिद्दीक से अर्ज किया और फिर यह कार्य जैद बिन साबित साहब के जिम्मे सौंपा गया। बाद में हज़रत उमर फ़ारुक की ख़िलाफ़त के जमाने में इसके पढ़ने-पढ़ाने और दूर देशों में क़ुरआन एवं फ़ि ह की शिक्षा की व्यवस्था हुई।

प्रस्तुत पुस्तक पवित्र क़ुरआन का सार, जन जन की भाषा में पेश करने का प्रयास है। क़ुरआन मजीद में 114 सूरतें और 6236 आयतें हैं जिनका सार इस पुस्तक में 1669 पदों में दिया गया है। निम्न पद क़ुरआन सार की एक झलक प्रस्तुत करते हैं:

हो जाएगी हर चीज फ़ना,
लौट जाएगा सब उसको,
बाकी रहेगी बस नेकी,
बेहतर बदला मिलेगा उनको।

क़लम बना लो सब पेड़ों की,
सात समुन्दर स्याही कर लो,
ख़त्म ना होगीं उसकी सिफ़तें,
चाहे कितनी कोशिशें कर लो।

ऐ मुहम्मद पढ़ा करो क़ुरआन,
और नमाज़ अदा किया करो,
जानता ख़ुदा जो तुम करते,
ज़िक्र ख़ुदा का किया करो॥

किए जिसने जमीं-आसमां पैदा,
या पैदा फिर नहीं कर सकता,
करता जब वह जिसका ईरादा,
हो जाती, जब कहता ''हो जा''।

'हे मालिक'

ले कर तेरा नाम, करें हर काम शुरु,
तू बड़ा मेहरबान, रहम वाला है तू।

1. सूर : फ़ातिह :

सभी गुणों का वो ही ख़ज़ाना,
सब तारीफ उसी की है,
इस दुनिया में जो कुछ है,
सब बख़्शीश उसी की है।

तू बड़ा मेहरबान रहम वाला,
मालिक तू ही दुनिया का,
तेरी ही इबादत करते हम,
सही राह तू हमें दिखा।

2. सूर : बक़र :

पवित्र कलाम ख़ुदा का यह,
ईमान वालों को राह दिखाता,
लाता जो इस पर यकीन,
अधिकारी वह निजात पाने का,

ईमान और नेक आमाल वालों को,
दे दो ख़ुशख़बरी जन्नत की,
काफ़िर और गुमराह हैं जो,
वो राह तकेंगे दोज़ख़ की।

जिनका ईमान ना हो स्थिर,
उनको हिदायत है बेमानी,
ख़ुद को ही धोखा देते वो,
करते घमंड, पाखंड, नादानी।

कैसे नकार सकते तुम उसको,
जिसने बख़्शी तुमको जान,
वही मारता वो ही जिलाता,
फिर लौटोगे उसके स्थान।

उसने ही जमीं-आसमां बनाया,
जल बरसा धन-धान्य उगाया,
वो ही सबका सृष्टिकर्ता,
उसकी इबादत नूर का साया।

आदम-हव्वा को रचा उसने ही,
अपने रूप में उनको ढ़ाला,
कहा फ़रिश्तों को करो सज्दा,
पर काफ़िर शैतान ना माना।

जन्नत में बसे आदम-हव्वा को,
वर्जित था एक पेड़ का फल,
बहलाया-फुसलाया शैतान ने उनको,
हु म हुआ जाओ यहां से निकल।

कहती यह तौरात को सच्चा,
यह किताब है यकीने ईमान,
सच्ची इसकी सभी आयतें,
देतीं सबको सच्चा ज्ञान।

नमाज़ पढ़ना, जकात देना,
फ़र्ज़ बन्दगी में साथ देना,
शुक्रिया हर हाल में उसका,
क़ियामत के दिन से डरना।

उसने ही मूसा को बचाया,
दरिया से उन्हें राह दिलाई,
पत्थर से चश्मा बह निकला,
कौम को उनकी निजात दिलाई।

किसी भी कौम मजहब के हों,
होगा भला नेक लोगों का,
जो निकल जाते हद से बाहर,
होता बुरा अंत में उनका।

कुछ लोग नहीं जानते सच्चाई,
लेते वो गुमान से काम,
कुछ लोग अपनी मनमर्जी से,
लिखते कुछ भी, ख़ुदा के नाम।

बुरे काम और गुनाहगारों को,
अन्त में दोज़ख़ होगा नसीब,
नेक काम और ईमानवालों को,
मिलेगी भलाई, जन्नत होगी करीब।

बख़्शी किताब मूसा को उसी ने,
और भेजे नबी कई उनके बाद,
ईसा को बख़्शी खुली निशानियां,
मिला जिब्रील से मदद का हाथ।

जिनको तुम्हारा जी नहीं चाहता,
झुठलाते तुम नबियों की बात,
कुछ को करते रहे कत्ल,
कुछ की मानी नहीं तुमने बात।

काफ़िरों पर ख़ुदा की लानत,
ग़ज़ब उन पर ख़ुदा का अ़जाब,
नबियों और ख़ुदा के शत्रु पर,
निश्चित पड़ेगी ख़ुदा की गाज।

क़ादिर है ख़ुदा हर बात पर,
जमीं और आसमानों का बादशाह,
कोई नहीं उसके सिवा सहायक,
सब पर रहती उसकी निगाह।

पूरब पश्चिम सब उसका है,
मौजूद हर तरफ़ उसकी जात,
वह बा-ख़बर वुस्अ़त वाला,
सबका मालिक सबसे पाक।

ख़ुदा ही सबका सृष्टिकर्ता,
जो कुछ है सब उसका है,
जब जिस की करता वह इच्छा,
फ़रमाना काफी बस उसका है।

कहो, उसकी हिदायत ही सच्ची,
अच्छा उसकी राह पे चलना,
कोई ख़ुश हो या नाख़ुश हो,
ईमान का दामन पकड़े रखना।

खरे उतरे आज़माइश में इब्राहीम,
ख़ुदा ने उनको पेशवा बनाया,
कहा ज़ालिम ना होंगे हकदार,
नेकों पर होगा रहम का साया।

ख़ाना-ए-काबा किया मुकर्रर,
अम्न को पाने का स्थान,
और जहां खड़े हुए इब्राहीम,
उसे नमाज़ पढ़ने का स्थान।

हु म ख़ुदा का हुआ उन्हें,
रखो इस घर को पाक-साफ,
ईमान वालों को होगी बरकत,
काफ़िरों को आख़िर में अ़जाब।

दीने इब्राहीम है बस एक ख़ुदा,
पसन्द उसको है प का ईमान,
फ़र्क़ नहीं करता वो नबियों में,
हिदायत है जिनकी सच्चा ईमान।

मिलेगा सब को आमालों का बदला,
फ़र्ज़ है करना उसी की इबादत,
जिसे चाहता वो सही राह दिखाता,
हद में रहना देता है राहत।

हु म दिया काबा की तरफ,
घूम कर पढ़ना ह़क़ है नमाज़,
जहां भी हो इबादत के व. त,
उधर मुंह फेर कर पढ़ना नमाज़।

करी मुकर्रर इबादत के लिए,
हर फ़िर्क़े की एक दिशा,
कण-कण की उसको है ख़बर,
उसे याद रखो, करो शुक्रिया।

लो मदद सब्र और नमाज़ से,
ख़ुदा सब्र करने वालों के साथ,
कद्र नेक आमाल वालों की करता,
नाफ़रमानों को लानत और अ़जाब।

जमीं और आसमां बनाने में,
दिन-रात का चक्र चलाने में,
छिपी हैं उसकी ढ़ेरों निशानियां,
मेंह बरसाने, फसल उगाने में।

नहीं है कोई उसका शरीक,
ताकत सब ख़ुदा ही को है,
इस पर यकीन नहीं जिनको,
दोज़ख़ का अ़जाब उन्हीं को है।

उचित है खाना हलाल चीजों का,
चलो ना शैतान के कदमों पर,
छोड़ों बातें जो ठीक ना हो,
करो शुक्रिया उसकी नैमतों पर।

रखो ख़ुदा पर सच्चा भरोसा,
फ़रिश्तों, नबियों, किताब पर ईमान,
करो यथायोग्य सबकी सहायता,
डटे रहो जंग के मैदान।

जुल्म करने वालों से निपटना,
बेहतर है लेकिन करना माफ़,
गुनाहगार को यदि हो पछतावा,
वारिस को दे पूरा इंसाफ़।

फ़र्ज़ है तुम पर वसीयत करना,
रिश्तेदारों को दस्तूर के माफ़िक,
ना बदलो पर किसी की वसीयत,
प्रयास सुलह का करना वाजिब।

फ़र्ज़ हैं रोजे तुम पर लोगों,
ताकि आ जाए तुम को सलीका,
रमजान के महीने उतरा क़ुरआन,
हिदायतें सिखाती जीने का तरीका।

ऐ पैगम्बर, गर पूछे कोई,
कहो कि हूं मैं तुम्हारे पास,
सुनता हूं दीन-हीनों की दुआ,
ना छोड़े कोई मेरी आस।

जायज़ है तुम पर गृहस्थ जीवन,
लेकिन उसमें भी संयम रखो,
मारो ना माल तुम औरों का,
ना औरों को तुम लालच दो।

पूछते जो लोग तुम से,
नया चांद यों घटता-बढ़ता,
कह दो यह ख़ुदा की कुदरत,
व. त मालूम करने का ज़रिया।

लड़ते हैं तुम से जो लोग,
राहे ख़ुदा में लड़ों उन से,
उचित नहीं पर ज्यादती करना,
पसंद नहीं करता ख़ुदा उन्हें।

दीन से करना गुमराह,
भारी है सभी गुनाहों पर,
जैसे को तैसा वाजिब है,
रहम ख़ुदा का दीन पर।

हज की नीयत जो कर ले,
बरते संयम आचरण में अपने,
करे उस के हु म का पालन,
ज़िक्रे ख़ुदा जुबां पर अपने।

बाहर-भीतर होता अन्तर जिनमें,
ख़ुदा को पसंद नहीं वो लोग,
देते जान जो नेकी में,
रहम ख़ुदा का पाते वो लोग।

चाहत जिनको ऐशो-आराम की,
मिलती उनको धन-दौलत,
जिनको चाहत परवरदिगार की,
ख़ुश होंगे वो व. ते रुख़सत।

एक ही था मज़हब सब का,
फिर अल्प-ज्ञान से बदले मत,
राह दिखाने आये पैगम्बर,
उतरी किताबें और मिली राहत।

ख़र्च ख़ुदा की राह में अच्छा,
जिसका हक़ हो दर्जा-ब-दर्जा,
उसको खबर है पल-पल की,
रखता नहीं वो किसी का क़र्ज़ा।

गुनाह दीन वालों को बहकाना,
हक़ को छोड़ काफ़िर हो जाना,
दोनों जहां हो जाते बरबाद,
मिलता उन्हें दोज़ख़ में ठिकाना।

जिनका ईमान न हो प का,
हों कितने ही उनमें गुण,
बेहतर उन से इमां वाले,
चाहें उन में कुछ हों अवगुण।

बेकार है झूठीं क़समें खाना,
जो ऊपरी हो वो बात ही या,
नफ़ा ना देवे जो औरों को,
उस बात की कुछ औकात है या?

रखेंगे ना ताल्लुक, जो खालें क़सम,
करें इन्तिजार वो महीने चार,
ख़ुदा मेहरबान है बख़्शने वाला,
जो करते उस पर पुनः विचार।

छिपाए ना बीबी, जो हो उम्मीद,
उनके लिए बेहतर सुलह करना,
औरत का भी वैसा ही हक़,
होता हक़ जैसा मर्दों का।

दो बार तलाक़ कहने के बाद,
रखो निकाह क़ायम या छोड़ो साथ,
जायज़ नहीं दख़ल करना महर में,
अच्छी नहीं हद से बाहर बात।

तलाक़ के बाद हलाल ना बीबी,
करे ना जब तक दूसरा निकाह,
जो दूसरा भी दे देवे तलाक़,
जायज़ फिर उसे पहले से निकाह।

इद्दत पूरी होने के बाद,
रोको ना निकाह दूसरे शौहर से,
नसीहत है यह यकीन वालों को,
वाक़िफ़ है ख़ुदा सब ख़बरों से।

दूध पिलाएं दो बरस माताएं,
पाएं खाना, कपड़ा बा-दस्तूर,
हक़ ना किसी का मारा जाए,
पाए ना सज़ा कोई बेकसूर।

शौहर यदि गुजर जाए,
रुको चार महीने दस दिन,
दूसरा निकाह फिर जायज़ हैं,
इद्दत पूरी होने पर लेकिन।

नमाज़ अदा करना है फ़र्ज,
हाज़िर होना, अदब के साथ,
जैसे हो जिस हाल में हो,
करो अपने ख़ुदा को याद।

करता सब पर वो मेहरबानियां,
पर शुक्र नहीं करते सब लोग,
जानता सब वो, सब सुनता है,
हु म से उसके जीते मरते लोग।

वो ही सब को रोजी देता,
कम देता चाहे ज्यादा देता,
राह में उसकी करता जो ख़र्चा,
कई गुना उसको वापस देता।

वही हराता, वही जिताता,
जिसको चाहे वह यश देता,
व. त-व. त पर भेजता पैगम्बर,
सही राह भी वही दिखाता।

आयतें ये ख़ुदा की सच्ची,
ऐ मुहम्मद, तुम हो पैगम्बर,
कुछ से उसने बातें की,
दी कुछ को फ़ज़ीलत औरों पर।

एक वही इबादत के लायक,
सर्वश्रेष्ठ, शाश्वत, सबका मालिक,
सब उसकी मर्जी से चलता,
सब पर उसको क़ाबू हासिल।

उसने की हिदायतें ज़ाहिर,
बच सको ताकि गुमराही से,
जो उस पर लाते ईमान,
औरों की इबादत से बचते।

सब सुनता सब जानता वो,
कर देता वो सबको पुरनूर,
जीवन-मृत्यु खेल उसी का,
हर हिकमत से वो भरपूर।

जो औरों की करते सेवा,
दिल से अपने फ़र्ज़ मान के,
पाते कई गुना बदला उसका,
कमी नहीं भंडार में उसके।

पवित्र और बेहतर वस्तुऐं,
औरों की सेवा में खर्च करो,
मंजूर उसे ख़ैरात ज़ाहिर में,
बेहतर ख़ैरात यदि गुप्त करो।

मत लो सूद किसी से तुम,
जो लेंगे सूद, दोज़ख़ जाएंगे,
बरकत नहीं लेने में सूद,
जो करते ख़ैरात बरकत पाएंगे।

वाजिब है असल का वापस लेना,
ना इसमें नु सान किसी का कुछ,
गर क़र्ज़दार तंगदस्त हो तो,
दे दो कुछ मोहलत उसको तुम।

बेहतर इस से भी यह होगा,
गर कर दो उसका कर्ज़ा माफ़,
एक दिन लौट कर जाओगे,
पाओगे उस से तुम इंसाफ़।

जब लो क़र्ज़ा, लिखवाकर लो,
दो मर्दों को करो गवाह,
गर दो मर्द ना हों हाज़िर,
एक मर्द, दो औरत करो गवाह।

लिखने वाला लिखने में,
पूरा पूरा करे इंसाफ़,
अमानतदार, उसे लौटाने में,
भूले भी ना करे इंकार।

जो किताब नाज़िल हुई,
रखते रसूल उस पर ईमान,
फ़रिश्तों, नबी और किताब पर,
मोमिन सब रखते ईमान।

नहीं लादता बोझ किसी पर,
वह उसकी हिम्मत से ज्यादा,
फल मिलता बुरा बुराई का,
भले कामों का उम्मीद से ज्यादा।

3. सूर : आले इम्रान

केवल उसी की करो इबादत,
सर्वश्रेष्ठ है वो, सब पर क़ादिर,
और किताबों की करती तस्दीक,
करी किताब वह तुम पर नाज़िल।

नहीं छिपा उस से कुछ भी,
ना जमीन ना आसमान में,
वही रंग रूप देता तुम को,
जन्म तुम्हारा होने से पहले।

करते अर्थ का वो अनर्थ,
जिनके दिल में होता खोट,
जो ईमान पर क़ायम रहते,
करते क़बूल नसीहत वो लोग।

जो लाते ना उस पर ईमान,
कैसे बच सकते उसके अ़जाब से,
ना औलाद, ना धन-दौलत,
कुछ काम ना आते आख़िर में।

रखते जो भरोसा उस पर,
करता ख़ुदा उन को आबाद,
जैसे बद्र के मैदान में,
दिखी दोगुना उन की तादाद।

दुनिया भर के ऐशो-आराम,
छूट जाएंगे सभी यहां,
परहेजगार जन्नत में जाकर,
पाते सभी बख़्शीश वहां।

जो मुश्किल में करते सब्र,
सच बोलते, इबादत करते,
गुनाह माफ़ करता वह उनके,
जो उसकी राह चला करते।

दीन उस को मंजूर इस्लाम,
काम तुम्हारा बस देना पैगाम,
माने ना माने, उनकी मर्जी,
हाथ उसी के उनका अंजाम।

आयतों को जो नहीं मानते,
करते ना-हक़ क़त्ल नबियों को,
होगा उनका ना कोई सहायक,
अ़जाब दुखदायी मिलेंगे उनको।

राजा को रंक, रंक को राजा,
जिसे चाहे तू जो कर दे,
सब का मालिक, सब करने वाला,
सब भलाई है हाथ में तेरे।

दोस्त बनाओ ना काफ़िर को,
करो पैरवी पैगम्बर की,
मानो हु म ख़ुदा, रसूल का,
बख़्शेगा गुनाह, देगा माफ़ी।

चुनता वह कुछ लोगों को,
जीवन जीते जो उसके नाम,
उनके घर में होते पैदा,
नबी ख़ुदा के, अहले ईमान।

कहा फरिश्तों ने मरयम से,
चुना है तुमको परवरदिगार ने,
देते हम तुमको ख़ुशख़बरी,
जन्मेंगे ईसा मसीह तुम से।

पूछा मरयम ने होगा कैसे,
मुझको बेटा बिन याहे,
कहा, उसका बस फ़रमाना काफ़ी,
कर दे वह जब जैसा चाहे।

होगा ख़ुदा का वह खास,
देगा सदुपदेश वह लोगों को,
पैगम्बर बन परवरदिगार का,
सही राह दिखाएगा लोगों को।

बनी इस्राईल से कहा ईसा ने,
इबादत एक उसी की वाजिब,
लेकिन उन्होंने बात ना मानी,
करने लगे क़त्ल की साज़िश।

फ़रमाया ख़ुदा ने तब ईसा को,
जो साथ तुम्हारे वो नफ़ा पाएंगे,
लेकिन जो ईमान ना लाए,
दोनों जहां में वो सज़ा पाएंगे।

आदम की तरह से ईसा की,
मिट्टी से सृष्टि की उसने,
क़ालिब बना कर मिट्टी से,
कहा 'इंसान हो जा' उससे।

कहा, ऐ मुहम्मद, यकीन करो,
करी असलियत ज़ाहिर तुम पर,
गर कोई फिर भी करे झगड़ा,
तो लानत ख़ुदा की झूठों पर।

कह दो कि ऐ अहले किताब,
इबादत करो ना ख़ुदा के सिवा,
ना बनाओ शरीक किसी को उसका,
कारसाज ना कोई ख़ुदा के सिवा।

ना थे यहूदी, ना ईसाई,
सबसे बे-ताल्लुक थे इब्राहिम,
उतरी किताबें उनके बाद,
जन्में थे पहले इब्राहीम।

बस उसकी हिदायत ही सच्ची,
नाजिल यह किताब अनूठी है,
जिसे चाहे रहमत से नवाजे,
उसके ही हाथ बुज़ुर्गी है।

होता कोई ईमान का प का,
कोई करता चोरी अमानत में,
कुछ करते झूठे क़समें-वादे,
पाएंगे अ़ज़ाब वो आख़िर में।

मर्जी से या बेमर्जी से,
है सब उसके ताबे में,
जमीं-आसमां में जो भी है,
लौटेंगे उसी को आख़िर में।

वाजिब नहीं फ़र्क़ नबियों में,
फ़रमाबरदार हैं वो सब उसके,
फिर जाते जो लाकर ईमान,
लानत में वो जकड़े रहते।

जो चीजें तुम को हों प्यारी,
राह में उसकी ख़र्च करो,
हासिल होगी तुम को नेकी,
मन में अपने यकीन करो।

एक ख़ुदा के हो रहे इब्राहीम,
करो पैरवी उनके दीन की,
मुकर्रर किया इबादत के लिए जो,
वहां इबादत करते थे ख़ुदा की।

जो इस मुबारक घर में आता,
अमन-शांति और बख़्शीशें पाता,
जिसमें सामर्थ्य हज करने की,
हु म उसे यह फ़र्ज़ निभाना।

वाजिब है तुम्हें उससे डरना,
मरो जब तुम तो मुसलमां मरना,
रखो याद हिदायतें उसकी,
और जो की उसने वो मेहरबानियां।

ऐ मोमिनों, तुम हो बेहतर,
करते पैरवी नेक राह की,
अहले किताब गर लाते ईमान,
होती उनकी बहुत बेहतरी।

कुछ इनमें हैं ईमान पर क़ायम,
जो आयतें पढ़ते, सज्दा करते,
नेक हैं ये, नेकी पर क़ायम,
रहते हैं ये मेरी नज़र में।

ना बनाओ राजदार किसी गैर को,
होगा उसका परिणाम ना अच्छा,
ज़ाहिर है दुश्मनी उनकी जुबा़न से,
कपट सीने में और भी ज्यादा।

रखना चाहिए ख़ुदा पर भरोसा,
मदद करता वो ईमान वालों की,
जैसे बद्र के मैदान में उसने,
मदद भेजकर जीत दिला दी।

ख़ुदा से डरते, सूद ना लेते,
रोकते गुस्सा, करते जो रहम,
मांगते अपने गुनाहों की माफ़ी,
करता उन पर ख़ुदा रहम।

होते रहे पहले भी पैगम्बर,
गुजरे वो भी सख़्त राहों से,
डटे रहे, हिम्मत ना हारी,
हुए सुर्ख़रू वो दोनों जहां में।

जो करते शिर्क ख़ुदा के साथ,
वो काफ़िर हैं, मत बात सुनो,
केवल मदद ख़ुदा की सच्ची,
आज़माइश में उसकी खरे उतरो।

जिसकी मौत जहां आनी है,
निश्चित है, सब उसके हाथ,
जानता है वो सबके दिल की,
सब पर उसको है अधिकार।

जीने-मरने का वो मालिक,
जो उसकी राह में मरते हैं,
बेहतर हैं वो पाते रहमत,
वरना सब यूं ही मरते हैं।

कर लो जब ईरादा प का,
रखो भरोसा केवल उस पर,
रखता है भरोसा वो सबका,
छोड़ देते जो सब उस पर।

नामुमकिन है ख़ुदा के पैगम्बर,
करें किसी चीज में भी ख़ियानत,
जो हों उसकी राजी में रजा,
कर सकते वो कैसे ख़ियानत।

किया एहसान मोमिनों पर ख़ुदा ने,
उन्हीं में से एक भेजे पैगम्बर,
सिखाते दानाई, पढ़ाते हैं किताब,
गुमराही से बचाते, दयालु पैगम्बर।

शैतान डराता, ख़ौफ़ दिखलाता,
पर सच्चा मोमिन नहीं डिगता,
मिलती मोहलत जो काफ़िरों को,
कंकड़ से मोती वह बिनता।

जो कहते दिखलाओ चमत्कार,
लाएंगे ईमान ना बिना उसके,
कह दो पहले भी कितने पैगम्बर,
ना हक़ किए क़त्ल तुमने।

ज़ाहिर ख़ुदा की कुदरत है,
जमीं-आसमां, चांद-सूरज में,
करते हर घड़ी, जो याद उसे,
जन्नत पाते वो हर सूरत में।

4. सूर : निसा

किया है उसने ही पैदा,
तुमको आदम और हव्वा से,
फैला दिया धरती पर सारी,
रखता है नज़र वो तुम पे।

जितने दुनिया में इंसान,
सब आदम-हव्वा की संतान,
अपने हाथों घड़ता सबको,
और फूंकता उनमें वो जान।

जो जिसका है उसको लौटा दो,
बेइंसाफी है सख़्त गुनाह,
गर डरते हो रह ना सकोगे,
तो जायज़ तुमको चार निकाह।

नादानों की धन-दौलत,
वाजिब नहीं हड़प लो तुम,
करो भरण-पोषण उनका,
ले सकते कुछ ख़िदमत तुम।

मरने वालों की दौलत में,
औरत, मर्द सबका हिस्सा,
नन्हें बच्चे गर हों वारिस,
मारो न कभी उनका हिस्सा।

फ़रमाया इर्शाद ख़ुदा ने,
दौलत में कितना किसका हिस्सा,
लेकिन उसे बांटने से पहले,
अदा करो वसियत और क़र्ज़ा।

गर बदकारी कोई करे,
मुकर्रर है उसके लिए सज़ा,
गर नादानी से हो गलती,
करता तौबा क़बूल ख़ुदा।

मंजूर नहीं उसे जौर-जबरदस्ती,
हो भली तरह रहना-सहना,
जो दे चुके, वापस मत लो,
गर चाहो दूजी के संग रहना।

जो बीत गया, सो बीत गया,
उचित नहीं अब वो दस्तूर,
कुछ ऐसे रिश्ते हैंजिनमें,
निकाह ख़ुदा को नहीं मंजूर।

नाहक ना खाओ माल किसी का,
जायज़ रजामंदी से तिजारत करना,
जुल्म जो करता औरों पर,
निश्चित है उसे जहन्नम मिलना।

बख़्शी है ख़ुदा ने मर्दों को,
कुछ बेहतरी औरत पर,
मर्द कमाते, ख़र्चा करते,
घर का जिम्मा औरत पर।

गर कोई राह भटक जाए,
समझा कर लाओ सही राह पर,
उचित दण्ड देना जायज़ है,
जो ना समझे जान-बूझकर।

मियां-बीबी में जो हो अनबन,
बेहतर है सुलह करा देना,
बरकत करता उस कोशिश पर,
मकसद जहां बात बना देना।

नहीं करता ख़ुदा पसंद उनको,
बड़बोले, जो करते हों घमंड,
मां-बाप यतीमों की सेवा,
जो करते, करता ख़ुदा पसंद।

मंजूर नहीं उसको कंजूसी,
जो भी है सब उसका दिया,
जो करते उसकी राह में ख़र्च,
मिलता कई ज्यादा उनको सिला।

नहीं उसे पसंद ना-पाकी,
ऐसे में नमाज़ अदा ना करो,
पानी से करो या मिट्टी से,
जैसे हो, ख़ुद को पाक करो।

नाज़िल ख़ुदा ने की यह किताब,
करती तस्दीक जो पहली की,
करते जो शिर्क, ख़ुदा के साथ,
माफ़ी नहीं उनके गुनाहों की।

बुतों और शैतान की पूजा,
जो करते उन पर है लानत,
बेहतर है सीधी राह पे चलना,
एक ख़ुदा ही इबादत के लायक।

जब करो फ़ैसला इंसाफ़ करो,
सब कुछ देखता, सुनता है वो,
फ़रमाबरदारी ख़ुदा और रसूल की,
उनकी भी, हुकूमत में हों जो।

जानता ख़ुदा या किसके दिल में,
ना उनकी बातों का ख्याल करो,
जब तक ना यकीं हो मानेंगे,
तब तक ना उनका इंसाफ़ करो।

जो करते नसीहत का पालन,
मिलता है बड़ा बदला उनको,
सीधी राह भी वो पा जाते,
मिलता नबियों का साथ उनको।

मोमिनों कमर कस कर निकलो,
जब निकलो उसकी राह में तुम,
धन-दौलत तो कुछ भी नहीं,
जन्नत में भी नफ़ा पाओगे तुम।

मोमिन लड़ते हैं ख़ुदा के लिए,
बुतों के वास्ते लड़ते काफ़िर,
लड़ो बेबसों के हक़ के लिये,
करो शैतान पर जीत हासिल।

कुछ कहते, यों फ़र्ज़ किया,
लड़ना ख़ुदा की राह, हम पर,
कह दो, मौत तो लाजिम है,
चाहे रहो ना तुम हक़ पर।

कुछ कहते नफ़ा पहुंचता ख़ुदा से,
और तकलीफें, ऐ मुहम्मद, तुम से,
कह दो, दोनों रंज और राहत,
जो कुछ मिलता, सब उससे।

भेजा गया है तुम को पैगम्बर,
लोगों को हिदायत देने के लिए,
गर माने तुम्हें, ख़ुदा खुश होगा,
ना माने, वो जाने उसके लिए।

फिर जाते हैं कुछ नसीहत से,
करते मश्विरे तुम्हारे ख़िलाफ़,
करो ना ख्याल भरोसा रखो,
ख़ुदा ही काफ़ी है कारसाज़।

करते नहीं यों गौर क़ुरआन पर,
भ्रांति नहीं कोई, कलाम ख़ुदा का,
करते पैरवी शैतान की सब,
जो ना होता फ़ज़ल ख़ुदा का।

सिफ़ारिश करता जो नेक कामों की,
पाता हिस्सा उनके सवाब का,
करता सिफ़ारिश जो बुरी बातों की,
पाता हिस्सा उनके अ़ज़ाब का।

जब कोई दे दुआ तुमको,
बेहतर उससे दुआ तुम दो,
रखता है वह सबका हिसाब,
सब जमा करेगा क़ियामत को।

गुमराह और काफ़िर हैं जो,
ना बनाओ उनको साथी अपना,
नेक राह चलने का ईरादा,
गर कर लें, वाजिब सुलह करना।

जायज़ नहीं किसी मोमिन को,
देना कष्ट अन्य मोमिन को,
निश्चित किया ख़ुदा ने बदला,
जैसे कफ़्फ़ारा, खूंबहा वारिसों को।

मोमिनों जब घर से निकलो,
छान-बीन कर लिया करो,
जो जानों-माल निछावर करते,
बख़्शी है उसने फ़ज़ीलत उनको।

बिता देते जो अपनी जिंदगी,
तलब में केवल दुनिया की,
उनसे बेहतर वे जो लगाते,
जान और माल, राह में उसकी।

गुनाह नहीं सफर में अगर,
पढ़ी जाए कम करके नमाज़,
और जो हो मैदाने जंग में,
होशियारी से पढ़ी जाए नमाज़।

फ़र्ज़ है हालाते अम्न में,
हर मोमिन पर पढ़ना नमाज़,
नियत समय पर पांच व. त,
श्रद्धा सहित अदा करना नमाज़।

लोग जो करते हैं दगाबाजी,
और ख़ियानत हम जिंसो की,
उनकी करो ना तरफ़दारी,
ना बहस, ना वकालत उनकी।

गर हो जाए किसी से गुनाह,
बख़्श देता वो जो माफ़ी मांगे,
ख़ुद करता औरों पर मढ़ता,
उसके गुनाह उसी के माथे।

बख़्शी तुम्हें किताब और दानाई,
और दिया तुम्हें उसने ज्ञान,
उल्टी राह जो जानकर चलता,
क़ियामत को उसे होगा नु सान।

बख़्शने वाला वो हर गुनाह,
सिवाय शिर्क गर कोई करता,
सख़्त नु सान भुगतेगा वो,
दोस्ती शैतान से जो करता।

जो जैसे आमाल करता है,
पाता है वो वैसा ही बदला,
ख़ुदा ही है सच्चा मददगार,
हिमायती ना कोई, उसके सिवा।

यतीम औरतों से निकाह करने की,
देता है इजाज़त ख़ुदा तुम को,
करो इंसाफ़ बेबस, यतीमों से,
देता यह हु म, ख़ुदा तुम को।

अनबन जो हो मिया-बीबी में,
बेहतर सुलह गर वो कर लें,
कोई गुनाह नहीं उन पर अगर,
मददगार कोई वो मुकर्रर कर लें।

चाहे कितनी कोशिश कर लो,
मुश्किल बीबियों में बराबरी करना,
वाजिब नहीं लेकिन यह भी,
फ़र्क़ जमीं-आसमां जैसा करना।

जो कुछ जमीं-आसमां में है,
सब कुछ उस ख़ुदा का है,
रखता है वो सब पर क़ुदरत,
मारना-जिलाना हक़ उसका है।

फ़र्ज़ है देना गवाही सच्ची,
क़ायम सदा इंसाफ पर रहना,
ख़्वाहिशें नफ़्स ना भटकाए तुम्हें,
जब देना सच्ची शहादत देना।

ख़ुदा और उसके रसूल पर,
और नाजिल जो करी किताब,
फ़र्ज़ ईमान तुम को लाना,
काफ़िरों के लिए है अ़जाब।

ख़ुदा की आयतों का मज़ाक,
गर देखो तुम होता कहीं,
वाजिब नहीं वहां पर रुकना,
हो सकते तुम भी वैसे ही।

ख़ुद को धोखा देते पाखण्ड़ी,
ना करते वो याद ख़ुदा को,
अधर में वो लटके रहते हैं,
मिलती ना राह कभी उनको।

बुरा है किसी की करना बुराई,
पर गुनाह नहीं सच्चाई का कहना,
बेहतर है भलाई का करना बयान,
ख़ुदा को मंजूर उन्हें माफ़ करना।

वाजिब नहीं कुफ्र, ख़ुदा, नबियों से,
करना नबियों के बीच में फ़र्क,
मिलता उन्हें नेकियों का बदला,
जो लाते ईमान, ना करते तर्क।

निशानी मांगते हैं अहले किताब,
मूसा पर भी ना लाए एतबार,
तोड़े सब अहद, की नाफ़रमानी,
ख़ुदा ने किया उन्हें मर्दूद करार।

कहते वो क़त्ल कर दिया हमने,
मरयम के बेटे ईसा मसीह को,
खुद को डाले वो भ्रम में,
क़त्ल ना सूली हुई ईसा को।

हलाल थीं जो कुछ पाकीजा चीजें,
कर दी गईं यहुदियों पर हराम,
करते थे जुल्म, लेते थे सूद,
बहकाते थे, ना लाने देते ईमान।

लेकिन जो हैं इल्म के प के,
लाते ईमान सब किताबों पर,
देते ज़कात पढ़ते हैं नमाज़,
ख़ुदा की रहमत होगी उन पर।

हुए पैगम्बर तुमसे भी पहले,
कुछ किए बयान, कुछ किए नहीं,
ख़ौफ़े ख़ुदा और पैगाम सुनाते,
ताकि रहे कोई अनजान नहीं।

हक़ बात लेकर आए हैं,
पास तुम्हारे ख़ुदा के पैगम्बर,
बेहतर है तुम्हारे लिए यही,
लाओ ईमान तुम उन पर।

ना कहो कुछ सिवा सच्चाई के,
बढ़ो दीन में ना हद से,
ऐ अहले किताब, मरयम के बेटे,
थे वो रसूल, ख़ुदा के भेजे।

रहते हैं ख़ुदा के बन्दे होकर,
फ़रिश्ते और रसूल सभी,
करते जो घमंड या इंकार,
पाते ना उसका फ़ज़ल कभी।

नूर का चश्मा, रोशन किताब,
भेजी ख़ुदा ने तुम्हारे पास,
दीन की रस्सी जो थामे रहे,
सीधी राह उसे पाने की आस।

5. सूर : माइद

पूरा करो इकरार को अपने,
हज के एहराम ना शिकार करो,
वाजिब है नेक कामों में मदद,
जुल्म और गुनाह से बचा करो।

कुछ चीजें हैं तुम पर हराम,
पांसों से ना किस्मत जांचा करो,
काफ़िरों से तुम्हारा डरना कैसा,
दीने इस्लाम पर तुम डटे रहो।

हलाल तुम को सब पाकीजा चीजें,
पाक-बीबियां, महर देने के बाद,
ना बदकारी ना छिपी दोस्ती,
निश्चित इनका है सख़्त अ़जाब।

जानता है वो दिल की बातें,
ऐ मोमिनों उस पर यकीन करो,
पाक-साफ हो कर पढ़ो नमाज़,
उसके एहसानों को याद करो।

फरमाया उसने हूं साथ तुम्हारे,
बनी इस्राईल से इकरार लिया,
तोड़ दिया जब अहद उन्होंने,
उसने भी मुंह मोड़ लिया।

बतलाते हैं रसूल खोल कर,
जो बातें तुम रहे छिपाते,
नाज़िल हो चुकी रोशन किताब,
फिर ग़लत रास्ता यों अपनाते?

गर कहते ईसा मसीह ख़ुदा हैं,
या चल सकती कुछ उसके आगे,
हर चीज पर क़ुदरत रखता ख़ुदा,
हर चीज नगण्य है उसके आगे।

कहा मूसा ने अपनी कौम से,
याद करो उसके एहसान,
रखा भरोसा मूसा का उसने,
जुदा हो गए जो थे नाफ़रमान।

ना हक़ किसी की जां लेना,
क़त्ल है सारी मानवता का,
जो बचाता है जान किसी की,
एहसान वो दुनिया पर करता।

लड़ते जो ख़ुदा या रसूल से,
या मुल्क में जो करते फ़साद,
उचित दण्ड दुनिया में उनको,
क़ियामत के दिन सख़्त अ़जाब।

वाजिब है उससे डरा करो,
करो यत्न करीबी पाने का,
जिहाद करो उसकी राह में,
मौका ये कामियाबी पाने का।

दुनिया की सारी धन-दौलत,
ना काम आएगी क़ियामत के दिन,
कितना ही फिर चाहें काफ़िर,
भुगतेंगे अ़जाब क़ियामत के दिन।

जो चोरी करे मर्द या औरत,
जायज़ काट देना उनके हाथ,
कर लेते जो तौबा गुनाह से,
कर देता ख़ुदा उनको माफ़।

जिनके दिल वो पाक ना करता,
ज़िल्लत और अ़जाब है उनके लिए,
हक़ ना उन्हें हिदायत पाने का,
कीमत ना ईमान की जिनके लिए।

नाज़िल करी उसने ही किताबें,
मूसा को और ईसा को,
तौरात हो चाहते हो इंजील,
उतरी सही राह दिखाने को।

करी है इंसाफ़ की तकरीर,
तौरात और दूसरी किताबों में,
जैसे को तैसा वाजिब है,
बेहतर माफ़ी उसकी निगाहों में।

किए दस्तूर और तरीके मुकर्रर,
उसने हर एक फ़िर्के के लिए,
करे वह जो जिसके लिए जायज़,
नहीं एक शरीअत सबके लिए।

ताकीद ख़ुदा की करो फ़ैसला,
जैसा उसने नाज़िल फ़रमाया,
ख़्वाहिशों की करो ना पैरवी,
ना कभी तुम जाओ बहकाया।

हिदायत नहीं ज़ालिमों के लिए,
मोमिनों उनको बनाओं ना दोस्त,
जो पढ़ते नमाज़, देते हैं ज़कात,
और रखते ईमान, वो तुम्हारे दोस्त।

जो करते हंसी तुम्हारे दीन की,
बेहतर उनको रखो तुम दूर,
लानत, ग़ज़ब ख़ुदा का उन पर,
सीधी राह से हैं वो दूर।

जो कहते उसका हाथ बंधा है,
बांधे जाएंगे उनके ही हाथ,
वो रहीम, खुले हाथों वाला,
लानत उन्हें जो नकारते किताब।

ऐ पैगम्बर, पैगाम ख़ुदा का,
पहुंचा दो सब लोगों को,
कहो, ना पाओगे राह अगर,
क़ायम ना रखोगे किताबों को।

जो ईमान आख़िरत पर लाते,
और जो करते नेक आमाल,
चाहे जो हो उनका मज़हब,
ना ख़ौफ़ उन्हें, ना होंगे गमनाक।

हो गए वो अंधे और बहरे,
जो झुठलाते, क़त्ल करते नबियों को,
बेशक काफ़िर हैं वो लोग,
कहते हैं ख़ुदा जो ईसा मसीह को।

ईसा मसीह ख़ुद कहा करते थे,
करो इबादत परवरदिगार की,
जो करता शिर्क ख़ुदा के साथ,
उसका ना मददगार कोई कभी।

ईसा मसीह, मरयम के बेटे,
थे वे रसूल औरों की तरह,
बदलो ना तुम दीन की बातें,
ना हो ख़ुद, ना करो गुमराह।

जो करते बुराई और नाफ़रमानी,
होकर नाख़ुश ख़ुदा देता अ़जाब,
ईमान जो लाते हक़ बात पर,
पाते बहिश्त, नेक बन्दों के साथ।

जो हलाल, उसे करो ना हराम,
पकड़ ना यूं ही क़समों पर,
देना होगा उनको कफ़्फ़ारा,
जो डटे ना पुख़्ता क़समों पर।

ठीक नहीं पांसे, शराब और जुआ,
लोगों में दुश्मनी करवाते ये,
नापाक काम ये इन से बचो,
करते तुम्हें दूर नमाज़ से ये।

अम्न की वजह मुकर्रर फ़रमाया,
इज्जत के घर काबे को,
पट्टे बंधे हुए पशुओं को,
इज्जत के महीनों, क़ुरबानी को।

पिछली बातों पर अड़े रहना,
ठीक नहीं, यह ढंग बदलो,
नाज़िल हो चुकी रोशन किताब,
रुख़ रसूल की तरफ़ कर लो।

गर हिदायत पर तुम डटे रहो,
बिगाड़ नहीं सकता कोई कुछ भी,
मिलेगा बहुत बड़ा बदला तुमको,
लौट कर जाओगे, ख़ुदा को सभी।

गर लगे मौत का व. त आ गया,
दो मर्द अद्‌ल वाले करो गवाह,
बदला ना लें शहादत का वो,
झूठ बोलना है, एक बड़ा गुनाह।

जब जमा करेगा नबियों को,
पूछेगा या मिला था जवाब,
वो अर्ज करेंगे, हमें मालूम नहीं,
ज़ाहिर तुझ पर ही सब बात।

तू ने ही सब दानाई बख़्शी,
तू ने ही नाज़िल करीं किताब,
जिब्रील को भी तू ने भेजा,
तू ने ही किए सब चमत्कार।

पूछेगा ईसा बिन मरयम से,
 या कहा था तुमने लोगों से,
करो इबादत मेरी, मां की,
या कहा कुछ और उन से।

देंगे जवाब तब ईसा उसको,
 या मैं ऐसा कह सकता,
तू पाक, दिलों की बात जानता,
कहा ना हु म के तेरे सिवा।

कहा, करो इबादत केवल उसकी,
जो मेरा और तुम्हारा परवरदिगार,
रखता ख़बर वो पल-पल की,
सब पर रखता है वो अख़्तियार।

6. सूर : अन्‌आम

सब तारीफ़ उसी की वाजिब,
उसने ही जमीं-आसमां बनाया,
सूरज, चांद, सितारे चमकाये,
मिट्टी से इंसा को बनाया।

जानता सब की सब बातें,
जानता है तुम्हारे आमालों को,
झुठलाते जो हक़ की बातें,
जल्द पाएंगे बुरे अंजामों को।

 या नहीं जानते उनसे पहले,
हलाक हो गयीं कितनी कौमें,
जिनके दिल ना लाते ईमां,
ना मानेंगे, कोई कुछ कर लें।

कह दो नकारने वालों को,
देखो, उनका या हुआ अंजाम,
लाते नहीं जो ईमान दीन पर,
भारी होगा उनका नु सान।

ना कोई सहायक उसके सिवा,
जमीं-आसमां सब का मालिक,
देता वो सब को रोजी-रोटी,
नहीं किसी से कुछ ख़्वाहिश।

कह दो ऐ पैगम्बर तुम लाए,
इस्लाम यहां सब से पहले,
उतारा गया है क़ुरआन तुम पर,
आगाह कर दो, इस के ज़रिये।

कौन बड़ा उस से ज़ालिम जो,
झुठलाता ख़ुदा और आयतों को,
बेशक निजात ना उनको मिलेगी,
और पाएंगे सख़्त अ़ज़ाब भी वो।

जो कहते कुछ भी नहीं क़ुरआन,
बस कहानियां पहले लोगों की,
दोज़ख़ के किनारे मौका ना मिलेगा,
करे यां सच्चाई आयतों की।

जो कहते, है बस यहीं जिंदगी,
कुछ ना होगा, मरने के बाद,
परवरदिगार के जब होंगे सामने,
कुफ्र के बदले वो पाएंगे अ़ज़ाब।

होंगे हाज़िर ख़ुदा के सामने,
जो समझते इस को झूठ,
जिस दिन आ जाएगी क़ियामत,
अफ़सोस करेंगे वो लोग बहुत।

दुनिया की जिन्दगी खेल मश्ग़ला,
बेहतर है आख़िरत का घर,
बोझा सब अपने आमालों का,
उठाएंगे ख़ुद अपनी पीठ पर।

क़बूल करते हैं हिदायत वो ही,
होते हैं जिनके दिल जिंदा,
कुछ असर ना होता उन पर,
जिनके दिलों पर पड़ा है पर्दा।

कह दो कि मैं नहीं कहता,
ख़ुदा के ख़जाने हैं मेरे पास,
ना गैब जानता, ना मैं फ़रिश्ता,
चलता उस के हु म की राह।

करो नसीहत क़ुरआन के जरिये,
उनको जो ख़ौफ़ ख़ुदा का रखते,
निकालों ना उनको पास से अपने,
तलब जो उसकी जात की करते।

कहा करो ''सलाम अलैकुम''
जब ईमान वालों से मिला करो,
कर देता वो नादानी माफ़,
गर दिल से तौबा किया करो।

कह दो पैगम्बर, मना है मुझको,
ख़ुदा के सिवा, अन्य की इबादत,
ना करूंगा तुम्हारी ख़्वाहिशों की पैरवी,
वरना हूंगा ना मैं बा-हिदायत।

कह दो मैं हूं रोशन दलील पर,
भेजा है जिसको परवरदिगार ने,
वही तो है दिन-रात का मालिक,
लेगा हिसाब क़ियामत के दिन में।

वो ही बख़्शता तुमको जिंदगी,
रोजी-रोटी, ऐशो-आराम भी देता,
फिर भी करते उससे तुम शिर्क,
जो निजात तुम्हें तंगी से देता।

हर चीज पर क़ुदरत है उसको,
है सब उसके अख़्तियार में,
फ़िर्का-फ़िर्का कर तुम्हें लड़वा दे,
या फंसा दे तुम्हें अ़जाब में।

राह दिखाई हमें सीधी ख़ुदा ने,
कहो, यों हम किसी को पुकारें,
हु म है उसका हु म मानना,
डरें उससे और अदा नमाज़ करें।

जमीं-आसमां किए तदबीर से पैदा,
उसका फ़रमाना ''हो जा'' बस काफ़ी,
जानता है सब बाहर-भीतर वो,
हर चीज पर उसकी है बादशाही।

याद करो किस तरह ख़ुदा ने,
सही राह दिखायी इब्राहीम को,
इब्राहीम ने तब पूछा पिता से,
यों बनाते तुम माबूद बुतों को।

नहीं है कोई शरीक ख़ुदा का,
पाते सुकुन जो लाते ईमान,
बख़्शी उसने फ़ज़ीलत और नबूवत,
उनको जिनका था प का ईमान।

नाज़िल ख़ुदा ने की मूसा को,
नूर और हिदायत भरी किताब,
मालूम ना थी किसी को भी,
उन बातों का फ़रमाया इर्शाद।

वैसी ही किताब है यह भी,
करती तस्दीक जो पहली की,
म का और उसके आस-पास,
लायें इस पर ईमान सभी।

ज़ालिम हैं जो झूठ गढ़ें,
कहें आयतें अपने मन से,
दुनिया पीछे सब छूट जाएगी,
नहीं बचेंगे वो अ़जाब से।

निशानियां छिपी हैं उसकी,
रोजी-रोटी, जीने-मरने में,
चांद-सितारे, जंगल-नदियां,
क़ुदरत उसकी कण-कण में।

फ़रमायी है इर्शाद ख़ुदा ने,
आयतें यों बदल-बदल के,
ताकि कहे ना कोई रसूल को,
किसी और से सिखी हैं आयतें।

ईमान ना लाएंगे कभी मुश्रिक,
चाहें उतरे कितनी निशानियां,
जान बूझकर भटक रहे वो,
भ्रमित लोग कर रहे नादानियां।

नाज़िल हुई ह़क़ पर तौरात,
ना कोई वजह उसमें शक की,
सच्चाई और इंसाफ़ में पूरी,
कौन बदल सकता बातें उस की।

क़ुरबान करो तुम जो कुछ भी,
वाजिब है लेना ख़ुदा का नाम,
ना बहको, ख़ुद पर काबू रखो,
जो भी खाओ, लो उस का नाम।

वो चाहे जिसे रिसालत बख़्शे,
खोल देता है सीना उनका,
शर्तें जो रखते ईमान लाने को,
तंग कर देता सीना उनका।

रहमत वाला है परवरदिगार,
किताबें भेजी, पैगम्बर भेजे,
ना करता जुल्म किसी पर वो,
ख़ुद ही तुम खाते हो धोखे।

बख़्शे उसने ही खेती और बाग,
उस का ह़क़ भी अदा करो,
बेजा ना उड़ाओ जो तुम्हें मिला,
नहीं यह बात पसंद उसको।

नापाक ना जो, वो हराम नहीं,
ना वो चीज गुनाह की हो,
वो बड़ा मेहरबान, देता है बख़्श,
गर कोई हद से बाहर ना हो।

करते शिर्क जो अपने से,
पर मर्जी ख़ुदा की बतलाते,
ख़ुद को भ्रम में डाले हैं वो,
अटकल के बस तीर चलाते।

कहो, ना बनाओ ख़ुदा का शरीक,
मां-बाप से बद-सुलूकी ना करो,
ना क़त्ल करो अपनी औलादें,
ना बे-हयाई के तुम काम करो।

हड़पो ना यतीमों की दौलत,
करो नाप-तौल इंसाफ़ के साथ,
पूरा करो ख़ुदा के अहद को,
हु म उस का, यह सच्ची बात।

नाज़िल की यह किताब उसी ने,
उसने ही उतारी पहले भी किताब,
आ पहुंची उसकी रहमत व हिदायत,
जो झुठलाएंगे, वो पाएंगे अ़जाब।

ना जो तुम लाओगे यकीन,
करोगे इन्तिजार निशानी का,
होगा ना फायदा, तब तुम को,
जब भुगतोगे दण्ड आमालों का।

जो करते दीन में फ़िर्केबाजी,
उनसे तुमको कुछ काम नहीं,
जैसा जो करेगा, वैसा ही भरेगा,
होगा किसी पर जुल्म नहीं।

कह दो, उसने दिखलाया मुझे,
दीने-इब्राहीम का सही रास्ता,
मेरी नमाज़ और मेरी इबादत,
उसके लिए ही जीता-मरता।

7. सूर : आराफ़

नाज़िल हुई यह किताब इसलिए,
ईमान लाओ और डरो उससे,
करो पैरवी इस किताब की,
लें नसीहत लोग इससे।

हुई तबाह कितनी ही बस्तियां,
आया जिन पर उसका अ़जाब,
जो आयतों से करते बेइंसाफ़ी,
देना पड़ता है उनको हिसाब।

उसने ही पैदा किया इंसा को,
मिट्टी से सूरत-श ल बनायी,
कहा फ़रिश्तों से करो सज्दा,
पर इ लीस ने बात ना निभायी।

बोला अफ़ज़ल हूं इंसा से,
यह मिट्टी मैं बना आग से,
सज़ा मिली घमंड की उसको,
गया निकाला वह जन्नत से।

मुहलत मिली क़ियामत तक,
बोला करूंगा मैं भी गुमराह,
कहा ख़ुदा ने जाएंगे जहन्नम,
जो लोग चलेंगे तेरी राह।

कहा ख़ुदा ने आदम-हव्वा से,
रहो-सहो बहिश्त में तुम,
खाओ वो जो मन चाहे,
पर एक फल खाना ना तुम।

बहकाया शैतान ने उनको,
ललचाये वो, वह फल खाया,
हुआ ग़ज़ब, जन्नत से गिरे,
जमीं पे अपना घर पाया।

रखता है शैतान निगाहें,
हर व. त तुम्हारी कमजोरी पर,
रखता है उनको वह दोस्त,
जो टिकते नहीं ईमान पर।

करते जो बे-हयाई का काम,
और लेते हैं नाम बुजुर्गों का,
ठीक नहीं ये बातें उनकी,
ना ही ऐसा हु म ख़ुदा का।

जब पढ़ो नमाज़, तन ढ़क लो,
रुख़ क़ि ले को किया करो,
करो इबादत केवल उसी की,
बस उसी की पुकार करो।

बख़्शी हैं जो उसने नैमतें,
उसकी मर्जी, स्वीकार करो,
ईमान वालों को पाकीजा चीजें,
देता है वो, शुक्र करो।

मुकर्रर है हर फ़िर्के के लिए,
व. त मौत का टल नहीं सकता,
बचता वही जो ईमान पर क़ायम,
औरों पर अ़जाब बच नहीं सकता।

जालिम जो झुठलाते आयतें,
पाएंगे लिखा अपने नसीब का,
मानेंगे बेशक थे वो काफ़िर,
व. त आएगा जब निर्णय का।

ईमान वाले शुक्र अदा करेंगे,
राह दिखाई जन्नत की ख़ुदा ने,
दीवारे-आराफ़ पर जो बैठे कहेंगे,
शामिल ना कीजो हमें जालिमों में।

कहेंगे काफ़िरों की सूरत पहचान,
अब ना काम तुम्हें कुछ आया,
ना जमात, ना घमंड तुम्हारा,
ना कोई साथ तुम्हारे आया।

जलते रहेंगे दोज़ख़ में काफ़िर,
ना पूछेगा तब कोई उनको,
भूल गए थे जैसे वो दीन,
भूल जाएगा ख़ुदा भी उनको।

बेशक बनाए परवरदिगार ने,
जमीं-आसमां छह दिन में,
दिन और रात का चक्र चलाने,
सूरज-चांद रचे उसने।

सब मख़लूक उसी की है,
वो है बड़ा बरकत वाला,
आजिज़ी से जो दुआ मांगते,
वो हाकिम, सब देने वाला।

नापसन्द उसे जो हद से गुजरें,
नेकों पर वो करता रहम,
ना करो मुल्क में कोई खराबी,
उम्मीद पे उसकी दुनिया क़ायम।

ख़ुशख़बरी बन पुरवैया चलती,
होती उसके हु म से बारिश,
पैदा होते ज्यों फल-फूल,
मुर्दे भी होंगे जिंदा वापिस।

नूह को बना पैगम्बर भेजा,
कहा कौम से करो इबादत,
ना कोई माबूद सिवा उसके,
चलती सब पर उसी की हुकूमत।

मानें ना, जो लोग थे अंधे,
ठहराया उन्होंने उनको गुमराह,
काम उनका था पैगाम पहुंचाना,
कौम की अपने वो थे ख़ैरख़्वाह।

हुए सवार एक कश्ती में,
नूह और उनके कुछ साथी,
झुठलाया था जिन्होंने उनको,
डूब गये वो सब बाकी।

ऐसे ही कुछ और पैगम्बर,
भेजे ख़ुदा ने औरों को,
माने ना वे उनकी बातें,
ठुकराती रहीं कौमें उनको।

आद कौम को गए हूद,
ठहराये गये वो झूठे वहां,
नष्ट हो गये वो इंकारी,
नाजिल ख़ुदा का अ़जाब हुआ।

समूद कौम को गए सालेह,
नहीं माने वो उनकी बातें,
भूचाल ने उनको आ पकड़ा,
टूटे घर, बिछ गयी लाशें।

लूत भी लाये उसका पैगाम,
कहा बे-हयाई के छोड़ो काम,
ना माने वो लूत की बातें,
बरसे पत्थर, हुआ काम तमाम।

शुऐब गए कौमे मदयन को,
दिया उन्हें पैगाम ख़ुदा का,
लूट-खसोट से बाज ना आए,
हुए बर्बाद, भूचाल ने पकड़ा।

ना और कहीं भेजे पैगम्बर,
कौमें कुछ-कुछ फली-फूलीं,
फिर अ़जाब ने आ पकड़ा,
गुनाहों की उनको सज़ा मिली।

लगा देता है मुहर ख़ुदा,
जो काफ़िर उनके दिल पर,
करते ना निबाह अहद का,
होते हैं बदकार वो अ सर।

फ़िऔंन और सरदारों के पास,
मूसा को भेजा लेकर निशानी,
कहा जाने दो उनकी कौम को,
बोला फ़िऔंन दिखलाओ निशानी।

मूसा ने जब दी निशानियां,
बोला फ़िऔंन तुम हो जादूगर,
बुलवाये जादूगर, मूसा से हारे,
हुआ ऊंचा मूसा का सर।

फिर भी हुआ फ़िऔंन ना राजी,
जुल्म करने की उसने ठानी,
था मददगार ख़ुदा मूसा का,
डुबा दिए दरिया में फ़िऔंनी।

ख़ुशहाल हुए बनी इस्राईल,
वायदा पूरा हुआ ख़ुदा का,
तबाह हो गयी कौम फ़िऔंन की,
बोझ हुआ धरती का हल्का।

पहुंचे जहां बनी इस्राईल,
करते थे इबादत लोग बुतों की,
गुमराह हुए बनी इस्राईल,
चाहने लगा माबूद उन्हें भी।

तलब फरमाया मूसा को तूर पर,
चालीस रातों के लिये ख़ुदा ने,
और तौरात उन्हें इनायत फ़रमायी,
दिखला कर अपनी झलक ख़ुदा ने।

कहा ख़ुदा ने मूसा को,
तौरात में है सब नसीहत,
तुम्हें और तुम्हारी कौम को,
वाजिब नहीं अब करना ग़फ़लत।

जब मूसा थे तूर पर्वत पर,
लोगों ने एक माबूद बनाया,
जेवर को गलाकर सोने के,
बछड़े का वो माबूद बनाया।

मूसा और ईमान वालों पर,
बख़्शी ख़ुदा ने अपनी रहमत,
पर जो थे माबूद के कायल,
मिली उन्हें दुनिया की जिल्लत।

करते पैरवी जो नबी-ए-उम्मी की,
लिखी है खूबियां जिनकी किताबों में,
करते जो नेकी, उनकी मदद करते,
शामिल होंगे मुराद पाने वालों में।

कह दो, ऐ पैगम्बर लोगों को,
ख़ुदा का भेजा रसूल हूं मैं,
माबूद नहीं कोई उसके सिवा,
ईमान उस पर ही लाता हूं मैं।

वो करता आज़माइश नाफ़रमानों की,
सज़ा मिलती बुरे आमालों की,
बर्बाद ना होता नेकी का बदला,
जो मानते बात किताबों की।

झुठलाते जो उसकी आयतें,
तर्तीब से वो जाएंगे पकड़े,
मुहलत देता कुछ दिन की,
फिर अ़ज़ाब में जाएंगे जकड़े।

नहीं जुनून कोई रसूल को,
वो तो बस पैगाम सुनाते,
देगा कौन हिदायत उनको,
सरकशी में जो बहके जाते।

जो पूछते कब होगी क़ियामत,
कह दो इल्म उसी को है,
ज़ाहिर कर देगा, व. त आने पर,
सब पर क़ुदरत उसी को है।

कर लो किनारा जाहिल लोगों से,
हु म नेक काम करने का दो,
गर कोई वस्वसा हो पैदा तो,
ख़ुदा से उसकी पनाह मांग लो।

मोमिनों को रहमत और हिदायत,
देता है क़ुरआन, तवज्जोह दो,
याद करो उसको दिल में,
हुज़ूर में उसके सज्दा करो।

8. सूर : अन्फ़ाल

पूछते हु म ग़नीमत के बारे में,
वह ख़ुदा और रसूल का माल,
आपस में सुलह, ख़ुदा से डरना,
हु म मानना, ईमां वालों का काम।

मोमिन रखते ख़ौफ़ ख़ुदा का,
उन्हें भरोसा सिर्फ ख़ुदा का,
करते ख़र्चा नेक कामों में,
ह़क़ उनको बख़्शिश पाने का।

करता वो अपना वादा पूरा,
क़ायम रखता है ह़क़ को,
वो है ग़ालिब, हिकमत वाला,
भेजता फ़रिश्ते मदद करने को।

करते मुख़ालफ़त ख़ुदा रसूल की,
अधिकारी वो सज़ा पाने के,
डटे रहते मोमिन जो जंग में,
अधिकारी वो विजय पाने के।

फ़र्ज़ मोमिनों पर हु म मानना,
ह़क़ के लिये दे देना जान,
वो कारसाज़ भर देता दामन,
जो करते उस पर सब क़ुर्बान।

आयतों को जो कहते कहानियां,
लोगों को वो बस बहकाते,
कुछ और नहीं अफ़सोस करेंगे,
जब उसकी वो सज़ा पाएंगे।

बाज आ जाएं कुफ़्फ़ार अगर,
मिल सकती है उनको माफ़ी,
गर फिर वो वापिस मुड़कर देखें,
ना रहने दो उनका कुछ बाकी।

लूट के माल का पांचवां हिस्सा,
ख़ुदा, रसूल, जरूरतमंदों का,
होकर रहता है वह काम,
जो मंजूर उसे हो करने का।

डटे रहो काफ़िरो के सामने,
याद ख़ुदा की किया करो,
सब्र करो वो मददगार है,
ख़ौफ़ उसी का किया करो।

पाते हैं सज़ा आमालों की,
काफ़िर चखते दोज़ख़ का मज़ा,
जो करते गुनाह, होते हलाक,
वाजिब है उनको सख़्त सज़ा।

रहो तैयार तुम हर व. त,
दुश्मन पर ख़ौफ़ बना रहे,
कर लो सुलह, गर राजी हों,
शंका फ़रेब की बाकी ना रहे।

वो ही तुमको ताकत देता,
दिलों में भर देता वो उल्फ़त,
धन-दौलत से ना मिलती,
काफ़ी है तुमको उसकी क़ुदरत।

ईमान पे क़ायम जो मोमिन,
भारी पड़ता दस काफ़िर पर,
बनो ना तालिब दौलत के,
रखो नज़र तुम आख़िरत पर।

जो नेकी पर चलना चाहते,
कर देगा उनके वो गुनाह माफ़,
लेकिन दगा है जिनके दिल में,
ऐ नबी करो उनका इंसाफ़।

ईमान लाये, हिजरत की जिसने,
उनके मददगार भी, तुम्हारे साथी,
ना रखो कुछ वास्ता उनसे,
ईमान तो लाये, हिजरत बाकी।

9. सूर : तौबा

अहद था जिन मुश्रिकों से,
चार महीनें जंग के बाकी,
बेहतर गर तौबा कर लें,
वरना ना रहेगा कुछ बाकी।

अलब ा जिन मुश्रिकों ने,
किया ना तुम्हारा कोई कुसूर,
पूरी करो अहद की मुद्दत,
फिर सज़ा दो उन्हें जरूर।

लेकिन तौबा जो वो कर लें,
दें ज़कात और नमाज़ पढ़ें,
वाजिब उन्हें पनाह देना,
कलाम जो उसका सुनने लगें।

कैसे रहें अहद पर क़ायम,
होता जिनके दिल में खोट,
वाजिब है जंग बे-ईमानों से,
तुम्हें ना उनका कोई ख़ौफ़।

मुनासिब नहीं मुश्रिकों के लिये,
करें ख़ुदा की मस्जिद आबाद,
बेकार इन लोगों के अमल,
जाएंगे दोज़ख़, होंगे बरबाद।

देता है ख़ुदा बदला उनको,
ईमान पे जां निसार जो करते,
गर अपने भी करें कुफ़्र,
उन्हें छोड़, जो अलग हो रहते।

करी तुम्हारी मदद कई बार,
पर गुरूर ना रखता किसी का,
याद करो वादिए हुनैन में,
काम आया बस सहारा उसका।

दीने ह़क़ जो क़बूल ना करते,
ना ईमान, ना यक़ीन आख़िरत पर,
वाजिब जंग उन अहले किताब से,
आएं ना जब तक सही राह पर।

कहते हैं, उजैर और ईसा को,
यहूद और ईसाई, ख़ुदा के बेटे,
करते थे काफ़िर, ऐसी ही बातें,
रीस में उनकी, ये भी बहके।

हु में ख़ुदा तो बस यही था,
ना करो इबादत, ख़ुदा के सिवा,
वो शरीक मुकर्रर करने से पाक,
माबूद ना कोई, उसके सिवा।

दीने ह़क़ देकर रसूल को,
उसने ही हिदायत देकर भेजा,
ग़ालिब करें तमाम दीनों पर,
ऐसा ही है, हु म ख़ुदा का।

नाहक खाते माल लोगों का,
करते जमा जो धन-दौलत,
ख़र्च ना करते राहे ख़ुदा में,
उन्हें दुख देगी धन-दौलत।

बारह महीनें एक बरस में,
उनमें चार अदब के महीनें,
नाहक ना करो इनमें ख़ुरेजी,
राह दीन के हैं ये महीनें।

या हो गया तुमको मोमिनों,
करते कोताही उसकी राह में,
छोड़ नैमतें तुम आख़िरत की,
ख़ुश हो बैठे यों दुनिया में?

ना निकालोगे गर उसकी राह में,
पैदा कर देगा वह औरों को,
पाओगे तुम तकलीफ़ों का अ़ज़ाब,
हर चीज पर क़ुदरत है उसको।

ना करोगे मदद, गर रसूल की,
ख़ुदा मददगार उनको काफ़ी,
याद करो सौर का गार,
वहां ख़ुदा था उनका साथी।

जिनके दिल डोलते शक में,
मांगते हैं वो तुमसे इजाज़त,
करते जो निछावर तन, मन, धन,
नहीं चाहिए उन्हें कोई इजाज़त।

गिरफ्तार दिल जिनका शक में,
वफ़ा नहीं वो तुमसे करते,
बुरा लगता है सुकून तुम्हारा,
कष्टों में तुम्हारे ख़ुशी मनाते।

कह दो, वो ही मालिक है,
कष्टों का और ख़ुशियों का,
उसके ही हाथ में हैं दोनों,
मोमिनों को उसका ही भरोसा।

क़बूल ना होता नाफ़रमानों का,
ख़र्चा मर्ज़ी या बेमर्ज़ी से,
बेहतर होता वो ख़ुश रहते,
जो बख़्शा ख़ुदा ने मर्ज़ी से।

राहे ख़ुदा में सदका करना,
मुकर्रर किया यह हक़ उसने,
देते रसूले ख़ुदा को रंज,
उनको सज़ा तय की उसने।

जो बुरा काम करने को कहते,
और करते मना नेक काम से,
भुला बैठे वो लोग ख़ुदा को,
भुला दिया उनको भी उसने।

लानत ख़ुदा की ऐसे लोगों पर,
जलते रहेंगे जहन्नम की आग में,
सबक ना लेते पिछले लोगों से,
ख़ुद जिम्मेदार वो नु सान के अपने।

नेक काम करने को कहते,
करते मना बुरे कामों से,
उसके हु म का पालन करते,
पाएंगे वो नैमतें उससे।

करते ख़ुदा से वादा-ख़िलाफ़ी,
होता उनका बुरा अंजाम,
करते कुफ़्र ख़ुदा रसूल से,
पाते ना हिदायत वो नाफ़रमान।

जंगे तबूक में पीछे रह कर,
ख़ुश थे जो जान बचाने में,
चाहे अब वो कुछ हंस लें,
रोना पड़ेगा उनको अन्त में।

फिर उनको लेना ना साथ,
वो शामिल हैं नाफ़रमानों में,
जब उनको आ जाए मौत,
शामिल न होना जनाजे में।

जब सूरः कोई नाज़िल होती है,
साथ रसूल का दो जंग में,
कुछ दौलतमंद इजाज़त मांगते,
बैठे रहें वो अपने घर में।

लेकिन ईमान के जो प के,
जान और माल जिन्होंने झौंका,
वो ही हक़दार भलाई के,
जन्नत का मिलेगा उनको मौका।

बूढ़ो और बीमारों पर,
या खाली हों जो ख़र्चे से,
उन पर कुछ इलजाम नहीं,
जो देते साथ तहे दिल से।

पीछे रहते जो दौलत वाले,
उज्र करेंगे जब वापिस जाओगे,
खाएंगे ख़ुदा की वो क़समें,
पर झूठा तुम उनको पाओगे।

कुछ बोझ समझते ख़र्चे को,
बाट तुम पर मुसीबत की तकते,
सब सुनता, सब जानता वो,
पड़ती मुसीबत उन्हीं के सर पे।

कुछ देहाती रखते ईमान,
ख़र्च वो जो कुछ भी करते,
समझते उसको नेकी का ज़रिया,
पाते रहमत उसकी वो बन्दे।

सबसे पहले ईमान जो लाए,
करी पैरवी भले लोगों से,
वो ख़ुश हैं ख़ुदा से अपने,
और ख़ुदा ख़ुश है उनसे।

करते जो इकरार गुनाह का,
तौबा क़बूल होती उनकी,
दुआ तुम्हारी उनके हक़ में,
करती ख़ुदा से पैरवी उनकी।

करते हैं फ़रेब कुछ लोग,
मस्जिदें जरार बनवाने की तरह,
वाजिब नहीं वहां पर जाना,
वह तो झूठों की है जगह।

करा ख़ुदा ने उनसे सौदा,
मोमिनों की जान और माल का,
पूरा करता वो वादा अपना,
उन्हें मिलेगा बदला जन्नत का।

मोमिन ख़ुदा को करते सज्दा,
रोजा रखते, इबादत करते,
देते हु म नेक कामों का,
मना बुरी बातों से करते।

मुनासिब नहीं मांगना बख़्शिश,
मुसलमानों को मुश्रिकों के लिए,
चाहें वो हों उनके रिश्ते में,
दोज़ख़ में ठिकाना उनके लिए।

मांगी बख़्शिश वादे के कारण,
इब्राहीम ने अपने पिता के लिए,
मालूम हुआ जब ख़ुदा के दुश्मन,
तब बेजार वो उनसे हो गए।

जब तक ना बता दे भला-बुरा,
और परहेज करें किस चीज से वो,
तब तक हिदायत देने के बाद,
गुमराह नहीं करता ख़ुदा किसी को।

मुरारा, काब और हिलाल,
जो रहे लड़ाई से पीछे,
करी उन पर भी मेहरबानी,
जिससे तौबा कर वो सके।

मुनासिब नहीं किसी के लिए,
जां समझें अपनी रसूल से ज्यादा,
जो उसकी राह में उठाते मुसीबत,
पाते बदला उम्मीद से ज्यादा।

मुनासिब जंग काफ़िरों के साथ,
पूरी मेहनत और ताकत से,
फिरे हुये हैं उनके दिल,
नहीं काम लेते वो समझ से।

तुम्हारी भलाई के इच्छुक,
पैगम्बर तुमको राह दिखाते,
करते तुमसे बहुत मुह बत,
मेहरबान वो ईमान वालों पे।

10. सूर : यूनुस

ताज्जुब यों करते हैं लोग,
पैगम्बर एक उन्हीं में से,
काफ़िर उसे कहते जादूगर,
ईमान वाले खुशख़बरी पाते।

ख़ुदा तुम्हारा है परवरदिगार,
दुनिया बनायी छह दिन में,
फिर जा क़ायम हुआ अर्श पर,
सब इन्तिजाम हैं उसके जिम्मे।

उसी की केवल करो इबादत,
जाना लौट कर उसके पास,
वो ही पैदा करता ख़ल्क़त,
वो ही सबका करता इंसाफ़।

सूरज-चांद में उसकी निशानियां,
उसकी मर्जी से दिन और रात,
जो मौजूद जमीं-आसमां में,
सब उसकी ही है करामात।

दुनियां ही में रहते खोये,
ग़ाफ़िल उसकी निशानियों से,
करते रहते जो वो आमाल,
दोज़ख़ पाएंगे उसकी वजह से।

लेकिन जो ले आए ईमान,
और करते रहते नेक काम,
मिलेगा उसका बदला उन्हें,
पाएंगे वो जन्नत में आराम।

जल्दी ना कभी वो करता,
देने में बुराई का बदला,
उम्र पूरी हो चुकी होती,
मिल जाता जो तुरन्त बदला।

पहुंचती जब इंसा को तकलीफ़,
पुकारता है वो ख़ुदा को,
दूर कर देता जब तकलीफ़,
भुला देता इंसान ख़ुदा को।

किया उम्मतों ने जब जुल्म,
मिली सज़ा उन्हें, हुए हलाक,
उनको भी भेजे गए पैगम्बर,
मगर ना लाए वो ईमान।

बाद उन लोगों के अब,
बनाये गये तुम लोग ख़लीफा,
ख़ुदा देखना चाहता है ये,
काम करते तुम अब कैसा।

कहते जो बदल दो क़ुरआन,
या दूसरा तुम बना लाओ,
कह दो नहीं अधिकार मुझे,
हु म ख़ुदा का तुम भी मानो।

गर जो ख़ुदा नहीं चाहता,
नाज़िल वो करता नहीं किताब,
एक कलिमा भी कहा ना मैंने,
जब उम्र गुजारी तुम्हारे साथ।

कौन जालिम बढ़कर उससे,
जो झूठ गढ़े, आयत झुठलाए,
करते जो इबादत किसी और की,
कभी सफल ना वो हो पाए।

कोई मुसीबत जब सर पड़ती,
दुआ ख़ुदा से मांगने लगते,
मिल जाती जब उनको निजात,
नाहक शरारत करने वो लगते।

जिसे चाहता सीधी राह दिखाता,
सलामती के घर को बुलाता,
नेकी जो करते, पाते भलाई,
जो करता बुराई, बुरा बदला पाता।

पूछो कौन तुम्हें रोजी देता,
मालिक कौन तुम्हारी देह का,
पैदा करता जानदार बेजान से,
बेजान जानदार से करता पैदा।

करता दुनिया का इन्तिजाम,
ख़ुदा ही मालिक है सबका,
ज़ाहिर होने पर हक़ बात,
करते सवाल यों गुमराही का?

रास्ता दिखाता ख़ुदा ही हक़ का,
एक वो ही पैरवी के क़ाबिल,
बना सकता ना कोई क़ुरआन दूसरा,
पहली किताबों की इसमें तफ्सील।

कहते क़ुरआन, जो पैगम्बर का रचा,
या बना सकते एक भी सूरः,
पा नहीं सकते इल्म पर क़ाबू,
इसलिये इसको कहते हैं झूठ।

जो झुठलाते कह दो उनको,
नहीं कुछ उनसे लेना-देना,
अ ल ना रखते अंधे, बहरे,
मुश्किल उन्हें हिदायत देना।

जुल्म ना करता ख़ुदा किसी पर,
लोग जुल्म ख़ुद करते अपने पर,
लौटना एक दिन ख़ुदा के पास,
फिर भी ना आते लोग राह पर।

हर उम्मत को भेजे पैगम्बर,
किया जाता सबसे इंसाफ,
हर उम्मत का व. त मुकर्रर,
ना जाने कब आ जाए अ़जाब।

इस दुनिया की कोई चीज,
टाल नहीं सकती उसका अ़जाब,
जमीं-आसमां ख़ुदा का सब,
करता वो फ़ैसला इंसाफ़ के साथ।

ख़ुदा का फ़ज़ल और मेहरबानी,
उसकी रहमत, है ये किताब,
ख़ुशख़बरी मोमिनों के लिए इसमें,
ख़जानों से कीमती, है ये किताब।

छिपा नहीं उससे कुछ भी,
प्रत्यक्ष है वह हर क्षण में,
ख़ुशनसीब हैं उसके दोस्त,
जो यकीन रखते उसमें।

ना ख़ुदा का कोई शरीक,
ना कोई उसने बनाया बेटा,
वो बे-नियाज सब तरह पाक,
सबसे अव्वल, सबसे अनूठा।

सुना दो उनको नूह का किस्सा,
कि जिन लोगों ने उन्हें झुठलाया,
डुबा दिया उन सबको ख़ुदा ने,
कश्ती में सवार, लोगों को बचाया।

कई और भी भेजे पैगम्बर,
मानें ना उनको झुठलाने वाले,
मूसा, हारून, ना माना फ़िऔंन,
कहा उन्हें जादू करने वाले।

लेकिन कुछ लोग जो लाए ईमान,
काफ़िरों से उन्होंने पायी निजात,
मिस्र में घर अपना बनाया,
मस्जिदें बना अदा करते थे नमाज़।

मांगी दुआ मूसा ने ख़ुदा से,
ना देख लें जब तक भारी अ़जाब,
गुमराह रहें, सही राह ना पाएं,
धन और लश्कर हो जाएं बरबाद।

लश्कर सहित फ़िऔंन जब डूबा,
याद ख़ुदा उसको तब आया,
बने मिसाल दुनिया के लिये,
दरिया से उसका बदन निकाला।

लायी ईमान यूनुस की कौम,
जिल्लत हटी, धन-दौलत पायी,
पर ख़ुदा के हु म बिना,
कौन कौम ईमान ला पायी?

अगर चाहता तुम्हारा परवरदिगार,
सब इंसान ईमान ले आते,
चाह सकते हो या फिर तुम,
कि लोग सब मोमिन हो जाते?

बे-अ लों पर डालता है नजासत,
ख़ुदा कुफ्र और जिल्लत की,
रखते नहीं जो उस पर ईमान,
निशानियां नहीं उनके काम की।

कह दो, मुझको है यही हु म,
करूं इबादत बस एक ख़ुदा की,
उसको है अधिकार सभी पर,
फ़र्ज़ मेरा करूं पैरवी उसकी।

11. सूर : हूद

ये आयतें उतरी ख़ुदा से,
मांगो बख़्शिश, तौबा करो,
नवाजेगा नेक पूंजी से वो,
अ़जाब गर नाफ़रमानी करो।

जानता है वो दिलों की बातें,
पोशीदा नहीं कुछ भी उससे,
सबको रोजी देता है वो,
सब कुछ है जिम्मे उसके।

नेमत बख़्श कर गर छीन ले,
ना-शुक्रा हो जाता इंसान,
पाता आराम गर तकलीफ़ के बाद,
तो ख़ुशियां मनाता है इंसान।

लेकिन जो कर कर लेते सब्र,
लगे रहते नेक आमाल में,
पाते बख़्शिश ख़ुदा से वो,
और बड़ा बदला उससे।

सोचते गर तुम कोई कहने लगे,
ना उतरा ख़जाना, ना आया फ़रिश्ता,
तुम तो केवल नसीहत कर सकते,
एक ख़ुदा ही सबका निगेहबां।

जो कहते क़ुरआन, ख़ुद तुमने बनाया,
कहो बना लाओ कुछ सूरतें तुम,
गर ना करते क़बूल ये बात,
कहो तब ले आओ इस्लाम तुम।

चाहते जो दुनिया की दौलत,
आमाल का बदला वो पाते यहां,
सब झूठ, बरबाद होते वो आमाल,
दोज़ख़ की आग में जलते वहां।

जो शक लाते क़ुरआन पर,
पाते बड़ी सज़ा उसकी,
गुनाहगार वो बच नहीं पाते,
करता पकड़ ख़ुदा उनकी।

पैगाम ख़ुदा का लेकर नूह,
गए समझाने अपनी कौम को,
झूठा माना, ना देखी फ़ज़ीलत,
ठुकराया सरदारों ने उनको।

बोले नूह ख़ुदा ने भेजी,
रोशन दलील तुम्हारे वास्ते,
बदला ना कुछ इसका चाहिए,
उसका बदला ख़ुदा के जिम्मे।

पास मेरे ना कोई ख़जाना,
ना मैं फ़रिश्ता, ना गैब जानता,
देखते जिनको नीची नज़रों से,
मिलेगा उनको भलाई का बदला।

कहा उन्होंने तुम जिससे डराते,
ला नाज़िल करो उसे हम पर,
कहा नूह ने ख़ुदा ही मालिक,
नाज़िल करेगा वो ही तुम पर।

हु म हुआ तब यों नूह को,
ना लाएंगे ईमान ये लोग,
हमारे हु म से एक कश्ती बना,
सवार हो जाओ उसमें तुम लोग।

हर प्राणी का एक-एक जोड़ा,
घर वाले और जो ईमान लाएं,
सवार हो जाओ कश्ती में तुम,
छोड़ो उनको जो मज़ाक उड़ाएं।

ऊंची-ऊंची लहरों में कश्ती,
चली ख़ुदा के जोर पर,
बेटा नूह का अपने भरोसे,
बहा ले गयी उसे लहर।

नूह की कश्ती लगी किनारे,
तबाह हुए बाकी सब लोग,
परहेजगारों का अंजाम भला,
रहमत उसकी पाते वो लोग।

भेजे गए हूद आद को,
लेकर गए ख़ुदा का पैगाम,
करो ना शिर्क परवरदिगार से,
इबादत करो, ले आओ ईमान।

मानी ना कौम, कहा हूद से,
कोई ज़ाहिर दलील ना पास तुम्हारे,
छोड़ेंगे ना हम माबूदों को अपने,
केवल कहने भर से तुम्हारे।

की नाफ़रमानी कौमें आद ने,
लानत उन पर, हुए बरबाद,
हूद और ईमान वालों को,
भारी अ़ज़ाब से मिली निजात।

भेजे गए सालेह समूद को,
लेकिन वो भी गए नकारे,
छोड़ी ऊंटनी, ख़ुदा की निशानी,
काटी कूंचे, लोग ना माने।

व. त मिला तीन दिनों का,
हुआ ख़ुदा का वादा पूरा,
बचे लोग ईमान जो लाए,
बाकी मरे, चिंघाड़ ने घेरा।

ख़ुशख़बरी लेकर फ़रिश्ते आए,
घर इब्राहीम के बन मेहमान,
तीन फ़रिश्ते, नौजवां, सुन्दर,
बोले करके दुआ सलाम।

डरो ना हमसे, ख़ुदा ने भेजा,
कौम लूत की हलाक करने को,
हंसी जब इब्राहीम की बीबी,
बच्चों की दी ख़ुशख़बरी उनको।

बूढ़े बुढ़िया वो पति पत्नि,
चकित हुए उनकी बात पर,
कहा फ़रिश्तों ने उनसे,
रखो भरोसा उसकी जात पर।

पहुंचे फ़रिश्ते लूत के पास,
मालूम पड़ा, वह दिन मुश्किल,
बे-हयाई, करती थी वह कौम,
हारने लगे लूत अपना दिल।

फ़रिश्तों ने तब कहा लूत को,
ख़ुदा के भेजे आए हैं हम,
पहुंच ना पाएंगे, ये तुम तक,
चाहे कितना वो भर लें दम।

चल दो तुम कुछ रात रहे,
साथ में लेकर घरवालों को,
मुड़कर पीछे देखे ना कोई,
होगी मुश्किल तुम्हारी बीवी को।

व. त सुबह का था निश्चित,
अ़जाब ख़ुदा का आने को,
बरसे पत्थर, उलट गयी बस्ती,
नष्ट हुए सब जालिम वो।

भेजे गए शुऐब मदयन को,
कहा, करो पूरी नाप-तौल,
ख़ुशहाल हो तुम, लाओ ईमान,
नीयत में ना डालो झोल।

कमजोर उन्होंने ठहराया शुऐब को,
ना समझे वो शुऐब की बात,
हु म ख़ुदा का जब आ पहुंचा,
चिंघाड़ कर गयी उनको बरबाद।

मूसा को भी दी निशानियां,
भेजा देकर रोशन दलील,
पर फ़िऔंन ने बात ना मानी,
संग सरदारों के हुआ जलील।

ये पुरानी बस्तियों के हालात,
किए गये जो तुमसे बयान,
हासिल करो इबरत इनसे,
डरो उससे, और लाओ ईमान।

किए जाएंगे जमा आख़िर में,
सामने ख़ुदा के सब लोग,
बदबख़्त जाएंगे दोज़ख़ में,
बहिश्त पाएंगे नेक लोग।

क़ायम रहो हु म पर, ऐ नबी,
जाना ना कभी हद से आगे,
जालिमों का करना ना लिहाज,
आमालों का सब बदला पाते।

पढ़ो नमाज़ सुबह और सांझ,
रहो नेकियों पर क़ायम,
दूर हो जाते उनसे गुनाह,
ईमान पे जो रहते क़ायम।

12. सूर : यूसुफ

किया क़ुरआन नाज़िल अरबी में,
ताकि तुम इसको समझ सको,
थे बेख़बर जिससे तुम पहले,
ऐसा एक अच्छा किस्सा सुनो।

या़कूब के घर जन्में थे यूसुफ,
एक दिन देखा उन्होंने सपना,
ग्यारह सितारे, सूरज, चांद,
कर रहे थे उनको सज्दा।

सुना स्वपन तो कहा पिता ने,
ज़िक्र ना करना भाइयों से,
कर सकते हैं फ़रेब वो,
करेगा रहम ख़ुदा तुम पे।

प्यार करते हैं यूसुफ से ज्यादा,
पिता हमारे, भाइयों ने सोचा,
यूसुफ को कुएं में डालो,
मिलकर उन्होंने किया मशविरा।

बातें बनाकर वो सौतेले भाई,
साथ ले गए यूसुफ को,
एक गहरे कुएं को देख,
गिराया उसमें यूसुफ को।

आकर पिता को बतलाया,
खा गया भेड़िया यूसुफ को,
समझ गए पिता चालाकी,
पर रह गए बस रोकर वो।

लेकिन देखो ख़ुदा की क़ुदरत,
क़ाफ़िला एक उधर से गुजरा,
लटकाया जब डोल कुएं में,
यूसुफ निकले, डोल को पकड़ा।

किस्मत उन्हें मिस्र ले गयी,
बिके वहां कुछ दिरहम में,
बीवी जुलेख़ा से बोले अज़ीज़,
इज़्ज़त इकराम से रखो इसे।

व. त गुजरा, यूसुफ जवान हुए,
हिम्मत और इल्म उन्हें मिला,
भले लोगों को इसी तरह,
दिया करता है ख़ुदा बदला।

सुन्दर नौजवां ऐसे थे यूसुफ,
दिल जुलेख़ा का उन पर आया,
भागे यूसुफ बाहर की तरफ,
फटा कुरता, उन्हें पीछे से पकड़ा।

तभी आगया अज़ीज वहां पर,
तो यूसुफ पर इलजाम लगाया,
हुआ फ़ैसला, इंसाफ़ हो गया,
जुलेख़ा की ज़ाहिर हुई ख़ता।

बातें बनाती थीं और औरतें,
दीदारे-यूसुफ था असल मकसद,
घर जुलेख़ा के वो सब आयीं,
मिला उन्हें जब पैगामें दावत।

छाया ऐसा रौब यूसुफ का,
दीदार हुआ जब उन्हें उसका,
बोल उठीं वे सुबहानल्लाह,
आदमी नहीं है ये फ़रिश्ता।

कहा जुलेख़ा ने उनसे,
गर ना होगा यूसुफ सहमत,
और ना मानी बात मेरी तो,
उठायेगा वो कैद की ज़हमत।

मांगी दुआ यूसुफ ने ख़ुदा से,
इसके मुकाबले कैद पसन्द मुझे,
ना हटाएगा, गर तू यह फ़रेब,
हूंगा नादानों में दाखिल मैं।

क़बूल ख़ुदा ने करी दुआ,
ख़त्म किया मकर औरतों का,
बावजूद उसके यूसुफ को,
काटनी पड़ी कैद की सज़ा।

वहां मिले उनको दो साथी,
ख़्वाब दिखा एक दिन उनको,
शराब के लिए अंगूर निचोड़ते,
देखा पहले ने अपने को।

और दूसरे ने देखा यह,
रोटियां रखी उसके सर पर,
और उसने देखी वो रोटियां,
जिन्हें खा रहे थे कुछ जानवर।

जानकर यूसुफ को नेक,
पूछी ताबीर उन्होंने ख़्वाबों की,
बोले यूसुफ ना शिर्क करो,
बस करो इबादत ख़ुदा ही की।

फिर बोले वो पहले साथी से,
शराब पिलाओगे अपने आकां को,
और दूसरा सूली पे चढ़ेगा,
खाएंगे जानवर उसके सर को।

यूसुफ बोले पहले साथी से,
मेरी सिफ़ारिश भी करना आकां से,
भुला दिया पर शैतान ने उसको,
यूसुफ रहे कई साल जेल में।

फिर एक दिन हुई बात नयी,
देखा बादशाह ने भी एक ख़्वाब,
सात हरी, सात सूखी बालियां,
सात मोटी और सात दुबली गाय।

एक अनोखी बात सपने में,
बादशाह को आयी नज़र,
दुबली गायें मोटी गायों को,
खाती आयी उसको नज़र।

पूछा बादशाह ने सरदारों से,
या उस ख़्वाब की ताबीर,
कहा उन्होंने यह अजीब ख़्वाब,
बता नहीं सकते हम ताबीर।

तब पहले साथी को आई याद,
बन्द जेल में यूसुफ की,
लेकर इजाज़त पहुंचा जेल में,
पूछने उनसे ताबीर ख़्वाब की।

यूसुफ ने मतलब समझाया,
अच्छी होगी खेती सात बरस,
बचा रखना तुम अनाज को,
फिर पड़ेगा सूखा सात बरस।

बादशाह ने यूसुफ को बुलवाया,
भेजा कासिद को जेल में,
संदेश भेज यूसुफ ने पूछवाया,
हैं औरतें वो किस हाल में?

बादशाह ने जब पूछा उनसे,
बोली वे, यूसुफ है सच्चा,
मान लिया जुलेख़ा ने भी,
उसने ही वो करी थी ख़ता।

कहा यूसुफ ने पूछी मैंने,
सबके सामने आज यह बात,
ताकि यकीन आ जाए अज़ीज़ को,
नहीं उसमें था मेरा हाथ।

बनाया बादशाह ने खास मुसाहिब,
किया ख़जाना सुपुर्द यूसुफ के,
रहमत हुई यूं ख़ुदा की,
चाहते जहां वो रहते वहां पे।

सौतेले भाई यूसुफ के,
मिस्र आए गल्ला खरीदने,
पहचान गए यूसुफ उन को,
वो यूसुफ को ना पहचाने।

कहा यूसुफ ने उन लोगों से,
जो चाहते फिर तुम गल्ला लेना,
यामीन तुम्हारा एक सौतेला भाई,
साथ जरूर तुम उसको भी लेना।

फिर चुपके से यूसुफ ने,
की वापस गल्ले की कीमत,
अपने नौकरों से कह कर,
रखवा दी खलीतों में दौलत।

वापिस जाकर अपने पिता से,
बयान किया सब हाल उन्होंने,
कहा यामीन को भेजो साथ,
वरना ना मिलेगा गल्ला हमें।

कहा पिता ने एतबार नहीं,
यूसुफ के तुम थे निगेहबान,
जो ले जाओ यामीन को तुम,
ख़ुदा ही उसका है निगेहबान।

देखा सामान जब उन लोगों ने,
वापिस पाया अपना सरमाया,
ख़ुश होकर वो कहने लगे,
देखो अपना धन वापिस आया।

लौट कर हम फिर जाएंगे,
और अधिक गल्ला लाएंगे,
पिता ने लिया अहद ख़ुदा का,
यामीन को सलामत वापिस लाएंगे।

करी हिदायत याकूब ने उनको,
घुसना अलग-अलग दरवाजों से,
रोक नहीं सकता मैं तकदीरों को,
सब कुछ है ख़ुदा ही के भरोसे।

सगे भाई को यूसुफ ने,
प्यार से अपने पास बिठाया,
चुपके से सामान में उसके,
सोने का एक गिलास छिपाया।

चोरी के इलजाम में यामीन,
एक बरस तक रोके गए,
मकसद था संग उसको रखना,
यूसुफ उसमें सफल रहे।

करी बहुत विनती भाइयों ने,
वास्ता बूढ़े पिता का दिया,
तैयार हो गए करने को गुलामी,
गर यामीन को छोड़ दिया।

ना-उम्मीदी ही पर हाथ लगी,
दिल उन सबका टूट गया,
हु म ना दें जब तक वालिद,
बड़ा भाई वहीं ठहर गया।

जाकर पिता को किया बयान,
जो बीता था उनके साथ,
विश्वास ना आया वालिद को,
किया रो-रोकर हाल खराब।

गमगीन हुआ दिल वालिद का,
आखें सफेद हुई रो-रोकर,
बोले यामीन और यूसुफ को,
जाओ, लाओ कहीं से ढूंढकर।

गई भाई यूसुफ के पास,
कठिन बड़ा समय उन पर,
थोड़ी पूंजी उस पर तकलीफ़े,
कहा, करो कृपा हम पर।

याद दिलायी यूसुफ ने उनको,
बीती बातें, उनकी बेवफ़ाई,
बोले फिर मैं यूसुफ हूँ,
और ये यामीन, हमारा भाई।

बोले भाई ख़ता की हमने,
बख़्शी ख़ुदा ने तुमको फ़ज़ीलत,
माफ़ किया ख़ुदा ने उनको,
और बरसायी उन पर रहमत।

यूसुफ ने दिया कुरता अपना,
ढ़कने को वालिद के मुंह पर,
वापिस पहुंच डाला जब कुरता,
आने लगा फिर पिता को नजर।

कहा बेटों ने वालिद से अपने,
गुनाहगार हम बख़्शिश मांगते,
मेहरबान वह, बख़्शने वाला,
सीधी राह पर जो आ जाते।

पहुंचे मिस्र जब माता-पिता,
तख़्त पर उन्हें यूसुफ ने बिठाया,
सज्दे में गिरे सब यूसुफ के,
देखा जो ख़्वाब, सच हो आया।

एहसान किये बहुत ख़ुदा ने,
भाइयों को फिर से मिलवाया,
बख़्शी हुकुमत यूसुफ को उसने,
और बहुत-सा इल्म सिखाया।

नसीहत है क़ुरआन दुनिया के लिये,
लोगों को बुलाता ख़ुदा की तरफ़,
जब नबी भी हो जाते ना-उम्मीद,
पहुंच जाती है वहां उसकी मदद।

13. सूर : रअद

क़ुरआन किताब है अल्लाह की,
लाते नहीं अ सर लोग ईमान,
चला रहा सारी सृष्टि को,
रहम वाला वो बड़ा मेहरबान।

काफ़िर कहते या पैदा होंगे,
मर कर मिट्टी होने के बाद,
जलते रहेंगे दोज़ख़ में ये,
चाहते हैं ये जल्द अ़ज़ाब।

और जो कहते पैगम्बर को,
नाजिल यों नहीं हुई निशानियां,
कह दो, तुम बस हिदायत करते,
होता हर कौम का जुदा रहनुमा।

ख़ुदा जानता सब राजों को,
सबसे बुज़ुर्ग बुलंद रुत्बा,
उसका हु म मानते फ़रिश्ते,
करते सब उसको सज्दा।

करते जो अहद को पूरा,
साबित अपने इकरार पे रहते,
पाते ख़ुदा की वो रहमत,
करते जो सब्र, नमाज़ पढ़ते।

राह दिखाता ख़ुदा उनको,
रुजू उसकी तरफ जो होते,
याद करते दिलों में उसकी,
उम्दा ठिकाना, खुशहाली पाते।

और नबियों की तरह मुहम्मद,
भेजा तुमको इस उम्मत में,
ताकि सुना दो पढ़ कर तुम,
जो किताब भेजी है हमने।

होता रहा रसूलों का मज़ाक,
पाते रहे काफ़िर भी मोहलत,
सब इल्म उसे, ख़बर सबकी,
देता नहीं काफ़िरों को हिदायत।

कह दो, हुआ है हु म मुझे,
करूं केवल उसकी ही इबादत,
ना शरीक बनाऊं किसी और को,
लौटूंगा मैं उसकी ही तरफ़।

करता हु म वो जैसा चाहे,
सब पर वो रखता है क़ुदरत,
क़ायम रखे या मिटा डाले,
उसकी इच्छा, उसकी रहमत।

14. सूर : इब्राहीम

नाज़िल की यह पुरनूर किताब,
जानों उसका तुम मकसद,
निकाल अंधेरे से लोगों को,
लाओ उन्हें रोशनी की तरफ़।

कैसा शक तुम करते ख़ुदा पर,
पैदा किए जमीं-आसमां जिसने,
देता है एक मुद्दत तक मोहलत,
और पास बुलाता गुनाह बख़्शने।

उतरा क़ुरआन अरबी भाषा में,
काफ़िर कहते ख़ुद ही बनाया,
बेशक यह ख़ुदा का इर्शाद,
भाषा में कौम की फ़रमाया।

वो बोले हम जैसे तुम भी,
पूजें ना यों माबूदों को,
पुरखे हमारे रहे पूजते,
छोड़े यों अब हम उनको?

भेजा मूसा को देकर निशानियां,
कौम को अपनी राह दिखाए,
देखते वो निशानियां क़ुदरत में,
शुक्र करें और सब्र जो लाएं।

बोले पैगम्बर अधिकार ख़ुदा को,
जिसे चाहे वह नबी बना दे,
मोमिनों को उस पर ही भरोसा,
चाहे वो तो निशानी भेज दे।

ख़बर नहीं या तुम्हें उनकी,
हुईं कौमें जो तुमसे पहले,
निशानियां लाए नबी उनको भी,
फिर भी वो ईमान ना लाए।

कहा काफ़िरों ने नबियों से,
चले जाओ या हमारी मानों,
मंजूर ना था ख़ुदा को ये,
किया हलाक उसने जालिमों को।

किया कुफ्र जिन्होंने उससे,
आंधी में राख से उड़ जाएंगे,
बस ना चलेगा आख़िर में,
हाथ मलते वो रह जाएंगे।

कह दो, मेरे मोमिन बन्दों से,
नमाज़ पढ़ें और नेकी करें,
करें शुक्रिया उसकी नैमतों का,
इतने एहसान कि गिन ना सकें।

हो चुकेगा जब उनका फ़ैसला,
तब यह कहेगा उनसे शैतान,
मलामत करो तुम अपनी ही,
बात मेरी यों गए तुम मान?

दुआ इब्राहीम ने मांगी ख़ुदा से,
मक्का अम्न की जगह बना दे,
बसायी अपनी औलाद यहां पर,
नेकी उनके दिलों में जगा दे।

पाक बात, पाक पेड़ सी,
गहरी जड़ें, फल हर दम,
नापाक बात, नापाक पेड़ सी,
उखड़ी जड़ें, ना कोई दम।

ना करेगा ख़ुदा वादा-ख़िलाफ़ी,
सज़ा जालिमों को जरूर मिलेगी,
चाहे कितना तब सर पटकें,
क़ियामत में दोज़ख़ उन्हें मिलेगी।

15. सूर : हिज्र

आरजू करेंगे काफ़िर किसी व. त,
काश हम भी होते मुसलमान,
लेने दो अभी दुनिया का मज़ा,
मालूम बहुत जल्द होगा अंजाम।

हम ही ने आसमां में बुर्ज बनाये,
और जमीं को हम ही ने फैलाया,
चांद-सितारे, नदी, पहाड़ बनाये,
और रोजी का सामान उगाया।

कहते नसीहत वालों को दीवाना,
पूछते यों ना लाते फ़रिश्ता,
कहो हमने ही उतारी किताब,
और हम ही हैं उसके निगेहबां।

हर चीज के ख़जाने हमारे यहां,
उतारते जिन्हें जरूरत के मुताबिक,
जिंदगी-मौत, हवा और पानी,
हम ही सारे जहां के मालिक।

भेजे पैगम्बर पहले भी हमने,
उनका भी उड़ता रहा मज़ाक,
गुमराह कभी ईमान ना लाते,
मिलके ही रहेगा उनको अ़ज़ाब।

मालूम हमें जो गुजर चुके,
और वो भी जो आएंगे अब,
जमा करेंगे क़ियामत के दिन,
सब जानते हम, सब की ख़बर।

पैदा किया इंसानों को हमने,
खनखनाते सड़े हुए गारे से,
और जिन्नों को उनसे पहले,
पैदा हमने किया आग से।

फ़रमाया फ़रिश्तों को परवरदिगार ने,
बनाता हूँ गारे से एक बशर,
ठीक कर जब रूह फूंक दूं,
सज्दे में उसके झुकाना सर।

किया फ़रिश्तों ने सज्दा,
शैतान ने पर इंकार किया,
शामिल ना हुआ वो सज्दे में,
पूछा ख़ुदा ने या तुझे हुआ?

बोला शैतान नहीं मैं ऐसा,
इंसान को जो करे सज्दा,
कहा ख़ुदा ने मर्दूद है तू,
चल यहां से तू निकल जा।

करी क़ियामत तक लानत,
मांगी शैतान ने कुछ मोहलत,
किये जाएं, जब फिर जिंदा,
तब तक उसे मिली मोहलत।

जैसे अलग किया है मुझको,
मैं भी सबको बहकाऊंगा,
बोला शैतान, गुनाह लोगों को,
सजा कर मैं भी दिखलाऊंगा।

पर जो तेरे मुख्लिस बन्दे,
मुश्किल उन पर क़ाबू चलना,
कहा ख़ुदा ने सीधा रास्ता,
बन्दे का ईमान पर चलना।

चल पड़ें जो तेरे पीछे,
जहन्नम बनी है उनके वास्ते,
जाएंगे सात दरवाजे में से,
जिसके आमाल होंगे जैसे।

ईमान पर जो क़ायम रहते,
मिलते उनको चश्में और बाग,
बख़्शिशें मिलती, रहमत पाते,
दिल उनका वो करता साफ़।

इब्राहीम के मेहमानों की दास्तां,
कहा सलाम जब वो आए,
हो चले थे बूढ़े इब्राहीम,
पर फ़रिश्ते ख़ुशख़बरी लाए।

मायूस ना होते ईमां वाले,
प का उनका ख़ुदा पर भरोसा,
सीमा ना उसकी रहमत की,
रखते जो ख़ुदा पर भरोसा।

पूछा उनसे तो बोले फ़रिश्ते,
भेजे गए हम कौमें लूत को,
बच ना सकेगी पत्नि उनकी,
बचा लेंगे बाकी घरवालों को।

कहा लूत ने तुम हो अनजाने,
बतलायी उनको तब सच्चाई,
रात रहे, कहा, निकल चलो तुम,
मुड़कर पीछे देखे ना कोई।

बोले लूत तब अपनी कौम से,
डरो ख़ुदा से रुसवा ना करना,
गुनाहगार मदहोश मस्ती में,
माने ना वो उनका कहना।

नीचे ऊपर हुआ शहर वो,
बरसे पत्थर सब नष्ट हुआ,
नष्ट हुई कौमे शुऐब भी,
उनसे भी था गुनाह हुआ।

इसी तरह हिज्र के वाशिन्दे,
झुठलाते थे वो भी नबियों को,
चीख ने उनको आ पकड़ा,
पलक झपकते हुए नष्ट वो।

आके रहेगी जरूर क़ियामत,
अच्छे से दर गुजर करो,
पैदा की तदबीर से दुनिया,
ग़ज़ब से उसके डरा करो।

अता किया क़ुरआन ये जिसमें,
सात आयतें दोहराती नमाज़ में,
पाते काफ़िर दुनिया का फ़ायदा,
पड़ते आख़िर वो अ़जाब में।

करो मुश्रिकों का ना ख़याल,
ख़ुदा है काफ़ी उनके लिए,
करो हमेशा उसके गुणगान,
झुकाओ सर सज्दे के लिए।

16. सूर : नह्ल

देकर पैगाम फ़रिश्तों को,
भेजता ख़ुदा बन्दों के पास,
माबूद नहीं कोई उसके सिवा,
बस उसकी ही रखो आस।

नुत्फ़े से बनाया इंसा को,
रहमत से उसकी तन पाते,
पर इसकी फ़ितरत तो देखो,
उसके नाम पर झगड़े जाते।

मिले इंसान को जिससे फ़ायदा,
चारपाये भी उसने ही बनाये,
ख़बर नहीं इंसान को जिसकी,
ऐसे कितने ही सामान बनाये।

कुछ टेढ़े, कुछ सीधे रास्ते,
सभी रास्ते वो ही बनाता,
जाती सीधी राह ख़ुदा को,
जिसे चाहता, उस पे चलाता।

बनायी उसने सारी कायनात,
दिये तुम को कई अधिकार,
उसकी निशानी कण-कण में,
पर नसीहत पाते समझदार।

पैदा की उसने यह दुनिया,
या कुछ वो कर नहीं सकता,
बख़्शी हैं उसने इतनी नैमतें,
गिनने वाला गिन नहीं सकता।

जिनको शरीक करते ये लोग,
कुछ भी नहीं वो बना सकते,
बेजान हैं वो कुछ होश नहीं,
उनको भी ये लोग ही रचते।

ख़ुदा अकेला माबूद तुम्हारा,
उससे छिपी ना कोई बात,
पसन्द उसे सरकशी नहीं,
ना ही आख़िरत से इंकार।

काफ़िर उठाएंगे अपना बोझ,
और जिनको ये करते गुमराह,
सज़ा पाएंगे गुनाहों की,
तकते हैं ये जिसकी राह।

ना काम आएंगे शरीक इनके,
होगी आख़िर में रुसवाई,
जलील होंगे क़ियामत के दिन,
दुनिया में जो करते बुराई।

कहते ''सलामुन अलैकम'' फ़रिश्ते,
परहेजगारों की जब जां निकालते,
दाख़िल होते जन्नत में वो,
नेकी का बड़ा बदला वो पाते।

ख़ुद करते पर यूं कहते,
होता वही जो वह चाहता,
जिम्मे नबियों के हु म पहुंचाना,
माने ना माने उनका फ़ैसला।

मानी कुछ लोगों ने हिदायत,
और कुछ रहे गुमराह होकर,
अंजाम झुठलाने वालों का बुरा,
देख लो जमीं चल फिर कर।

ना देता हिदायत ख़ुदा उनको,
ना कोई होता मददगार,
कितना ही उनको समझा लो,
गुमराह होते वो गुनाहगार।

खाते कितनी ही ये क़समें,
जो मर गए, वो नहीं उठेंगे,
पर वादा ख़ुदा का है सच्चा,
क़ियामत के दिन वो जी उठेंगे।

करता जब वह कोई ईरादा,
बस करता है इतना ही,
फ़रमाता इर्शाद की ''हो जा'',
हो जाता फ़ौरन वैसा ही।

सहे जुल्म, जिसने वतन छोड़ा,
पाएंगे दुनिया में अच्छा ठिकाना,
रखते भरोसा करते जो सब्र,
उनका जन्नत में प का ठिकाना।

देकर दलीलें और किताबें,
पैगम्बर हमने पहले भी भेजे,
किताब तुम्हें भी की नाज़िल,
जाहिर इर्शाद जिससे हो सके।

चलते जो बुरी-बुरी चालें,
इसका या ख़ौफ़ नहीं उनको,
आ घेरे ऐसा उन्हें अ़ज़ाब,
ख़बर ना हो जिसकी उनको।

या उनको यह मालूम नहीं,
करते ख़ुदा को सब सज्दा,
घमंड ना करते, डरते उससे,
करते अमल इर्शाद हो जैसा।

बनाओ ना माबूद और दूसरा,
बस ख़ुदा की करो इबादत,
डरते यो किसी और से,
वो ही बख़्शता सारी नेमत।

जब कोई आ पड़ती तकलीफ़,
ख़ुदा को ही तुम पुकारते,
जब दूर कर देता तकलीफ़,
शरीक ख़ुदा के करने लगते।

करते लोग बेटों की चाहत,
होते दुखी जन्में जो बेटी,
बहुत बुरी बात है यह,
करते तज्बीज मौत की उसकी।

पकड़ने लगे जो ख़ुदा जुल्म पे,
कोई जानदार ना जमीं पे बचे,
देता मोहलत नियत समय तक,
जब व. त आजाए, टाले ना टले।

नाज़िल की तुम पे जो किताब,
रहमत और हिदायत है उसमें,
जिन बातों पर नहीं सहमति,
कर दो उन बातों के फ़ैसले।

समझदार के लिए है मौजूद,
उसकी निशानी हर शै में,
पशु से दूध, फल, मेवा,
म खी से शहद देता वो तुम्हें।

रोजी-रोटी, धन-दौलत,
बेटे, पोते, सब दिए उसने,
सारी नेमतें उसने बख़्शी,
पर आता ना एतकार तुम्हें।

ना अख़्तियार किसी और को,
ना उनमें कुछ है क़ुदरत,
करते फिर यों उनकी पूजा,
करते यों तुम काम ग़लत?

पैदा किया ख़ुदा ने तुमको,
जब थे तुम बिल्कुल अनजान,
शुक्र करो तुम बख़्शे उसने,
तुमको दिल, आंख और कान।

वो ही थामता आसमां में परिंदे,
घर रहने को देता वो ही,
तपती गर्मी में पेड़ों के साए,
गारें पहाड़ों में उसी ने बनायी।

करता एहसान ख़ुदा तुम पर,
ताकि बनो तुम फ़रमाबरदार,
जानते हैं वो ख़ुदा की नैमतें,
पर ना-शुक्रे करते इंकार।

देंगे गवाही जिस दिन पैगम्बर,
दूर नहीं वो क़ियामत का दिन,
भूलेंगे शरीक, कलाम रद्द करेंगे,
झुकाएंगे ख़ुदा के आगे वो सिर।

ना मिलेगी तब उनको मोहलत,
कम ना होंगे उनके अ़जाब,
करते थे वो जो शरारत,
मिलेगा उसका उन्हें पूरा हिसाब।

नाज़िल करी हमने जो किताब,
हर चीज का उसमें पूरा बयान।
बरसती उससे रहमत और हिदायत,
बशारत पाते उससे मुसलमान।

इंसाफ़ और एहसान करने का,
देता है हु म ख़ुदा तुम्हें,
बे-हयाई और नामाकूल कामों से,
दूर रहो कहता ख़ुदा तुम्हें।

पूरा करो जरूर उसे तुम,
जो ख़ुदा से प का अहद करो,
क़समें जो लेते उसके नाम।
क़समें प की उन्हें पूरा करो।

ना बनाओ क़समों को ज़रिया,
एक-दूजे पर ग़ालिब होने का,
ना रोको ख़ुदा के रस्ते से,
चखना ना पड़े बुराई का मज़ा।

ख़त्म हो जाता जो पास तुम्हारे,
जो पास ख़ुदा के रहता बाकी,
मिलता बड़ा अच्छा बदला उनको,
रखते जो सब्र और करते नेकी।

पनाह मांग लो शैतान मर्दूद से,
जब तुम पढ़ने लगो क़ुरआन,
चलता जोर शैतान का उन पर,
जो लेते साथ शरीक का नाम।

जब बदली हमने कोई आयत,
काफ़िर कहते तुम खुद बना लाए,
कहो कि नाज़िल हुई ख़ुदा से,
ईमान मोमिनों का डिगने ना पाए।

लाते नहीं इमान आयतों पर,
ख़ुदा उन्हें हिदायत नहीं देता,
कुफ्र जो करते जान बूझकर,
अ़जाब ख़ुदा उन्हें ही देता।

पसंद नहीं ख़ुदा को ना-शुक्री,
देता आमालों का पूरा बदला,
करते तौबा, नेक बन जाते,
ख़ुदा उनके गुनाह बख़्श देता।

चुने इब्राहीम नबी ख़ुदा ने,
करो पैरवी उनकी तुम,
दानिश और नेक नसीहत से,
दिखलाओ राह ख़ुदा की तुम।

17. सूर : बनी इस्राईल

वह जात-पाक अपने बन्दे को,
एक रात मस्जिदुल हराम से,
ले गया मस्जिदे अ सा तक,
हर तरफ़ जिसके रखी बरकतें।

करी इनायत किताब मूसा को,
बनी इस्राईल का रहनुमा बनाया,
करेंगे वो दो-दफा फ़साद,
वादा ख़ुदा ने था फ़रमाया।

मांगता जल्दी जैसे भलाई,
वैसे ही इंसा मांगता बुराई,
है इंसान बड़ा जल्दबाज,
सब्र की थोड़ी कमी पायी।

गले में हर इंसान के,
लटका दी आमालों की किताब,
पढ़ी जाएगी क़ियामत के दिन,
कहेंगे ख़ुद ही करो हिसाब।

भला-बुरा वो जो करता,
ख़ुद ही उसका पाता बदला,
हो हिदायत वाला, या गुमराह,
नेकी-बदी ख़ुद वो करता।

जिनको तमन्ना दुनिया की,
जल्दी पाते वो इच्छित भोग,
पर साथ ना वो कुछ देते,
दोज़ख़ में उनको मिलती ठौर।

तलब जो आख़िर की करते,
और करते कोशिश जो भरपूर,
ऊपर से मोमिन हों अगर,
वो पाते उसकी बख़्शिश जरूर।

फ़रमाया इर्शाद परवरदिगार ने,
उसके सिवा इबादत ना करो,
करो भलाई मां-बाप के साथ,
करो अदब, कभी उफ़ ना कहो।

झुके रहो उनके आगे,
ह़क़ में उनकी दुआ करो,
जैसे पाला बचपन में तुम्हें,
मालिक, उन पर रहम करो।

अदा करो ह़क़ जिसका हो जैसा,
फ़िज़ूलखर्ची मत किया करो,
कर ना सको कुछ और अगर,
बात नर्मी से कह दिया करो।

हाथ तंग करो ना ज्यादा,
ना सभी कुछ दे डालो,
देख रहा वो बन्दों को,
उसी का भरोसा किया करो।

मुफ़्लिसी से डर कर तुम,
अपनी औलाद ना क़त्ल करो,
ख़ुदा ही तुमको देता रोजी,
है सख़्त गुनाह, ऐसा ना करो।

बुरी बात है जिना करना,
है बे-हयाई और ग़लत राह,
करता मना ख़ुदा तुमको,
समझो इसे, ना हो गुमराह।

गर क़त्ल जुल्म से कोई करे,
ले सकता है वारिस बदला,
ना करे पर कोई ज्यादती,
बेहतर हद के भीतर रहना।

मिले इंसाफ़ यतीमों को,
नाप-तौल हो सही-सही,
ना अकड़ दिखाओ औरों को,
उसको यह हरकत पसन्द नहीं।

बातें तरह-तरह की हमने,
करी हैं बयान क़ुरआन में,
मकसद है लोग नसीहत पकड़ें,
पर अ सर लोग बिदक जाते।

पढ़ा करते हो जब तुम क़ुरआन,
डाल देते हैं हम परदा,
ताकि समझ सके ना वो,
ईमान आख़िरत पर ना जिसका।

बातें बनाते तरह-तरह की,
गुमराह हो रहे हैं वो लोग,
शक करते हैं या मर कर,
होंगे पैदा फिर से वो लोग?

कह दो कुछ भी बन जाओ,
पत्थर हो जाओ या लौहा,
पैदा किया था जिसने पहले,
जिलाएगा वो ही तुम्हें दोबारा।

पूछें अगर यह कब होगा,
कहो उम्मीद है जल्द होगा,
दुनिया में रहे कम मुद्दत,
ऐसा तुमको प्रतीत होगा।

डलवा देता लोगों में फ़साद,
शैतान है दुश्मन इंसा का,
बन्दे बातें ऐसी कहा करें,
जो लोगों की हो पसंदीदा।

बुला देखो माबूदों को तुम,
ना रखते वो कुछ अधिकार,
ताकते रहते ख़ुदा की तरफ़,
रहमत का करते वो इन्तिजार।

ख़ुदा ने पहले भेजीं थी,
अगले लोगों को खुली निशानियां,
झुठलाया जब उन लोगों ने,
बन्द कर दी भेजनी निशानियां।

करता पैरवी जो शैतान की,
पाता वो जहन्नम की सज़ा,
लेकिन जो ख़ुदा के बन्दे,
उन पर जोर शैतान ना रखता।

कारसाज़ ख़ुदा ही काफ़ी,
चलाता वो दरिया में किश्ती,
वो ही बचाता तूफानों से,
देता वो ही पाकीजा रोजी।

था करीब तुम्हें बिचला देते,
काफ़िर मनवा लेते अपनी बात,
साबित कदम ना रखते अगर,
मिलता तुमको दोगुना अ़ज़ाब।

सांझ से रात अंधेरे तक,
ऐ मुहम्मद, अदा नमाज़ करो,
दिव्य सुबह में क़ुरआन पढ़ना,
क़ुरआन सुबह में पढ़ा करो।

कहो, मदीने में मुझको,
अच्छी तरह दाखिल करियो,
दीजो जोर व कूवत की मदद,
म के से भला बाहर करियो।

कह दो कि आ गया ह़क़,
नौर नाबूद हो गया बातिल,
मोमिनों को शिफा और रहमत,
होती क़ुरआन के ज़रिए नाज़िल।

पूछते तुमसे रूह या है,
कहो, वह ख़ुदा की एक शान,
इल्म दिया गया लोगों को कम,
मुमकिन नहीं रूह का पूरा ज्ञान।

चाहें तो मिटा दें दिलों से,
किताब जो हम तुम्हें भेजते,
पर रहमत तुम्हारे परवरदिगार की,
बड़ा फ़ज़ल उसका तुम पे।

कह दो कि मिल जाएं अगर,
जिन्न और इंसान दोनों भी,
चाहें वो बनाना ऐसा क़ुरआन,
कर ना सकेंगे ऐसा वो कभी।

तरह-तरह से करी हैं बयान,
सब बातें क़ुरआन में हमने,
पर अ सर लोग क़बूल ना करते,
ईमान ना लाते वो इस पे।

कहते चमत्कार कर दिखलाओ,
गर चाहते हम लाएं ईमान,
कह दो पाक मेरा परवरदिगार,
मैं पैगाम पहुंचाने वाला इंसान।

और हिदायत जब आ पहुंची,
पूछते यों हैं इंसान पैगम्बर,
कह दो, फ़रिश्तों को ही भेजते,
गर फ़रिश्ते बसते धरती पर।

दी मूसा को नौ निशानियां,
जादू है ये बोला फ़िर्औन,
चाहा निकालना उन्हें वहां से,
डुबा दिया दरिया में फ़िर्औन।

थोड़ा थोड़ा नाज़िल किया क़ुरआन,
और धीरे-धीरे उसे उतारा,
ठहर-ठहर कर पढ़ो सुनाओ,
ख़ुशख़बरी देना काम तुम्हारा।

पुकारो अल्लाह या रहमान,
नाम ख़ुदा के सब अच्छे,
ना बुलंद ना मंदी आवाज,
नमाज़ पढ़ो मध्यम स्वर में।

सब तारीफ़ ख़ुदा ही को है,
जिसने ना बनाया बेटा कोई,
ना शरीक कोई बादशाही में,
मददगार बड़ा उससे ना कोई।

18. सूर : कह्फ़

आयतें सीधी और आसान,
पेचीदगी कोई ना इसमें,
नाज़िल बन्दे पर करी किताब,
रहमत ख़ुदा की है इसमें।

ख़्याल करो उन जवानों का,
नापसन्द जिन्हें थे और माबूद,
हो अलग कौम से वो जा बैठे,
ना माने वो कौम की झूठ।

एक ख़ुदा था उनका माबूद,
और प का था उनका ईमान,
जा सो रहे एक गार में वो,
किया ख़ुदा ने काम आसान।

उठे जब एक मुद्दत के बाद,
सोचा सोए बस कुछ ही देर,
रहे तीन सौ नौ साल वो,
वो ही जानता किया जो फेर।

कारसाज़ उसके सिवा ना कोई,
करता ना वो शरीक किसी को,
जो किताब भेजी है उसने,
पढ़ा करो बस तुम उसको।

सब्र करो उसकी राजी पर,
याद करो सुबह और शाम,
भागो ना दुनिया के पीछे,
आख़िर दुनिया आती ना काम।

बयान करो उन दो का हाल,
पास एक के अंगूर के बाग,
हरे-भरे, नहर बहती उनमें,
फल देते थे खूब वो बाग।

कहा दूसरे से उसने,
हूँ बढ़ कर मैं तुमसे,
होंगे कभी ना बाग तबाह,
पाऊंगा जन्नत मैं उनसे।

बोला दूसरा मत कुफ्र करो,
उसने ही बनाया है तुमको,
ना जाने वो या कर डाले,
ख़ौफ़ ख़ुदा का जरा करो।

बरबाद हो गए उसके बाग,
मलने लगा हसरत से हाथ,
ख़ुद के हक में जुल्म किया,
आया ना कोई उसके साथ।

हुकुमत उसकी ही सच्ची,
सारे जहां का वो ही मालिक,
रखता ग़रूर ना कभी किसी का,
उसी का सिला रखना है मुनासिब।

दुनिया की जिंदगी मिट्टी सी,
बरसा पानी तो लहक उठी,
हुई सूख के चूरा-चूरा,
हवा के संग में उड़ती फिरी।

नेकियां ही बस बाकी रहतीं,
बदला मिलता उनका अच्छा,
हाज़िर होंगे क़ियामत के दिन,
पाएंगे किया जिसने जैसा।

अच्छी नहीं शैतान की दोस्ती,
दुश्मन वो है इंसा का,
हु मअुदूली ख़ुदा की करता,
करता लोगों को गुमराह।

काम नबियों का देना पैगाम,
चाहे लाओ, ना लाओ ईमान।
पाते सज़ा जालिम गुनाह की,
ख़ुशख़बरी वो जो लाते ईमान।

करते थे जुल्म कुफ्र से जो,
मिली थी निश्चित मोहलत उनको,
वीरान बस्तियां दे रहीं गवाही,
हासिल कुछ ना हुआ उनको।

अजब है किस्सा मूसा का यह,
हु म हुआ मिलो ख़िज्र से,
उन्हें ख़ुदा से मिला जो इल्म,
चाहा मूसा ने सीखना उनसे।

कहा ख़िज्र ने साथ में मेरे,
सब्र से तुम रह ना सकोगे,
जब तक मैं खुद ना बताऊं,
प्रश्न मुझसे तुम कर ना सकोगे।

ख़िज्र ने एक कश्ती फाड़ी,
मार डाला एक लड़के को,
गिरा चाहती थी जो दीवार,
सीधा किया उन्होंने उसको।

सब्र कर सके ना मूसा,
बार बार ख़िज्र को टोका,
ख़िज्र ने तब भेद बताये,
साथ फिर मूसा का छोड़ा।

कश्ती गरीब लोगों की थी,
छीनना चाहता था जिसे बादशाह,
फाड़ उसे ऐबदार कर दिया,
या करेगा अब लेके बादशाह?

लड़के के मां-बाप थे मोमिन,
पर लड़का होता बद-किरदार,
बहक ना जाएं वो दोनों भी,
दिया इसलिए लड़के को मार।

दीवार दो यतीम लड़कों की थी,
दबा था उसके नीचे ख़जाना,
चाहा ख़ुदा ने जवां होने पर,
वो लड़के ही पाएं ख़जाना।

पूछते हाल जुलक़नैन का तुमसे,
कह दो सुनाता पढ़ कर हाल,
करता रहता वो सामान सफ़र का,
मदद करता था और नेक आमाल।

जो बन्दे ख़ुदा के सिवा,
बनाते कारसाज़ किसी और को,
सज़ा देता ख़फ़ा होकर ख़ुदा,
काफ़िर जाएंगे वो दोज़ख़ को।

स्याही बना कर समुन्दर का पानी,
लिखना जो चाहो उसके गुणगान,
सूख जाएं चाहे सारे समुन्दर,
पर कर ना सकोगे पूरा गुणगान।

19. सूर : मरयम

बयान मेहरबानी का ज़करीया पर,
मांगी दुआ दबी ज़ुबान से,
बूढ़ा और कमजोर हो गया हूँ,
नवाजो मुझे एक वारिस से।

क़बूल फ़रमायी दुआ ख़ुदा ने,
दी ख़ुशख़बरी एक बेटे की,
नाम उसका रखा यहया,
और कहा करेगा वो नेकी।

मांगी निशानी तो कहा ख़ुदा ने,
तीन दिन तुम चुप ही रहोगे,
सही व सालिम होकर भी,
बात किसी से कर ना सकोगे।

अता फरमायी दानाई ख़ुदा ने,
लड़कपन में ही यहया को,
परहेजगार, मां-बाप से नेकी,
रहमत पूरी मिली उनको।

ज़िक्रे मरयम करा किताब में,
थी वो एक पाकीजा औरत,
बख़्शीश मिली ईसा की उन्हें,
मिली ख़ुदा से जिन्हें हिदायत।

शान नहीं ख़ुदा की यह,
बनाए किसी को अपना बेटा,
करता जब वो कोई इरादा,
हो जाती जब कहता ''हो जा''।

और याद इब्राहीम की करो,
थे निहायत सच्चे वो पैगम्बर,
जुदा हो गये पिता से अपने,
उनके घर जन्में कई पैगम्बर।

मूसा का भी ज़िक्र करो,
इस्माईल और इदरीस का भी,
फ़ज़ल ख़ुदा का मिला इन्हें,
सच्चे पैगम्बर थे ये लोग सभी।

ना-ख़लफ़ कुछ जानशीन हुए,
ख़्वाहिशे नफ़्स में लिप्त रहे,
भूल गए नमाज़ को वो,
गुमराह हुए, वो भटक गए।

पाएंगे सज़ा जो करते कुफ्र,
वादा ख़ुदा का झूठा ना होगा,
जो कहते हैं ख़ुदा रखता बेटा,
मददगार कोई उनका ना होगा।

20. सूर : त़ा हा

उतारा क़ुरआन इसलिए नहीं,
कि पड़ जाओ तुम मश. क़त में,
ख़ौफ़ जिसे ख़ुदा परवरदिगार का,
नाज़िल हुआ ये उसके लिए।

उतरा ये उस पाक-जात से,
बनाए जमीं-आसमां जिसने,
ऊपर नीचे सब कुछ उसका,
भेद ना उससे कोई छिपे।

या मिली ख़बर तुम्हें मूसा की,
नबी चुना था ख़ुदा ने उन्हें,
मैदाने तुवा पर चमक दिखाकर,
परवरदिगार ने बुलाया था उन्हें।

कहा, करो इबादत बस मेरी,
पढ़ कर नमाज़ मुझे याद करो,
मानो हु म जो होता है तुम्हें,
कोई माबूद ना मेरे सिवा करो।

कहा, क़ियामत यकीनन आएगी,
पर रखा गुप्त व. त उसका,
ताकि हर शख़्स जो करे कोशिश,
पा सके उचित बदला उसका।

पूछा हाथ में या, मूसा से,
कहा उन्होंने यह मेरी लाठी,
कहने से जब डाली नीचे,
दौड़ी सांप बन कर लाठी।

कहा ख़ुदा ने उसे पकड़ लो,
कर देंगे उसे फिर पहली सी,
और बगल में हाथ दबा लो,
पाओगे उसमें नई निशानी।

फिर जाओ फ़िर्औन के पास,
सरकश बहुत वो हो रहा,
मूसा बोले हिम्मत दे मुझे,
और खोल दे मेरी जुबां।

बना कर भाई को मेरा वज़ीर,
ताकत को मेरी तू मजबूत कर,
करें बहुत सी तस्बीह हम तेरी,
उसे काम में मेरे शरीक कर।

क़बूल की मूसा की दुआ,
फिर ख़ुदा ने उन्हें फ़रमाया,
कहते हैं हम आज तुम्हें,
मां को तुम्हारी जो बतलाया।

कहा उन्हें एक संदूक में,
बन्द कर मूसा को बहा दें,
जब किनारे संदूक जा लगेगा,
उठा लेगा फ़िर्औन उन्हें।

फिर तुम्हारी बहन के ज़रिये,
मां का नाम उसे सुझाया,
पालन पोषण तुम्हारा करने,
मां के पास वापिस पहुंचाया।

गम दूर किया तुम्हारी मां का,
पास उनके तुम को भेजा,
रहे कई साल मदयन वालों में,
अब करो तुम काम रिसालत का।

लेकर साथ भाई को अपने,
फ़िर्औन के पास जाओ तुम,
हो रहा बड़ा वो सरकश,
नर्मी से उसे समझाओ तुम।

जुल्म उसके बढ़ ना जाएं,
बोले दोनों, डर है हमें,
कहा ख़ुदा ने हूँ मैं साथ,
कहना ख़ुदा ने भेजा है हमें।

और कहना बनी इस्राईल को,
दो अब ना तुम और अ़ज़ाब,
परवरदिगार ने भेजी है निशानियां,
जाने दो उन्हें तुम हमारे साथ।

पहुंचे जब वो फ़िर्औन के पास,
पूछा उसने ख़ुदा कौन तुम्हारा,
कहा उन्होंने वो पैदा करता है,
और राह दिखाता, ख़ुदा हमारा।

दिखलायी सब निशानियां उसको,
पर फ़िर्औन ने उन्हें झुठलाया,
जादू मान उन बातों को,
जादूगरों को उसने बुलवाया।

जादूगर हारे और मूसा जीते,
करने लगे सब जादूगर सज्दा,
लाए ईमान वो परवरदिगार पर,
रह गया फ़िर्औन मुंह तकता।

उतरा फ़रमान बनी इस्राईल को,
रातों-रात निकाल ले जाओ,
लाठी मार दरिया को चीर दो,
और उस पार उन्हें ले जाओ।

चले ना सीधे रस्ते पर,
किया गुमराह जिन्हें फ़िर्औन ने,
पीछा किया लश्कर के साथ,
डूब गए सब वो दरिया में।

गए कौम को पीछे छोड़,
मूसा तूर पर चालीस दिन,
माबूद बना सोने का कौम,
पूजने लगी उसे मूसा बिन।

किया गुमराह उन्हें सामरी ने,
मिली उसे गुनाह की सज़ा,
जिंदगी भर कहता फिर वो,
छू ना मुझे, हाथ ना लगा।

पूछते पहाड़ों के बारे में,
उड़ाकर बिखेर देगा ख़ुदा,
और जमीं को कर हमवार,
मैदान बना छोड़ देगा ख़ुदा।

फ़ायदा कुछ ना देगी सिफ़ारिश,
कुछ ना चलेगा, उसके सामने,
करता जो जुल्म, उठाएगा बोझा,
होंगे मुंह नीचे उसके सामने।

ताकि परहेज़गार बन जाएं लोग,
किये क़ुरआन में डरावे बयान,
मोमिन और जो करते नेक़ी,
उन्हें ना होगा कोई नुकसान।

करो ना जल्दी क़ुरआन पढ़ने में,
इर्शाद पूरा होने से पहले,
किया करो यह दुआ ख़ुदा से,
दे और भी ज्यादा इल्म तुम्हें।

याद करो आदम का निकलना,
बहकाना शैतान का उनको,
मना किया खाना जो फल,
खिला दिया वो फल उनको।

मेहरबानी करी ख़ुदा ने,
बतलायी उनको सीधी राह,
करेगा जो हिदायत का पालन,
होगा नहीं वो कभी गुमराह।

भुला देता है जो आयतें,
भुला देता ख़ुदा उनको,
होकर रहता जो अंधा,
अंधा उठाता ख़ुदा उनको।

अल्लसुबह और सांझ के पहले,
याद ख़ुदा की किया करो,
बेहतर रोजी जो वो बख़्शे,
पढ़े नमाज़ घर, हु म करो।

21. सूर : अंबिया

ग़फ़लत में दिल लोगों के,
बातें करते चुपके-चुपके,
आदमी यह तुम्हारे जैसा,
करता कोई जादूगरी ये।

कहा नबी ने मेरा ख़ुदा,
जानता है सब कहा सुना,
पहले भी जो भेजे नबी,
इंसानों को उसने चुना।

जालिमों की कितनी ही बस्तियां,
कर डाली ख़ुदा ने हलाक,
पैदा कर दिए फिर नये लोग,
भागने लगे वो देख अ़जाब।

पैदा ना किये ज़मीं-आसमां,
और मख़्लूक, करने को तमाशा,
ग़ालिब करता सच झूठ पर,
मिटा देता झूठ का नामों-निशां।

बना बैठे धरती पर लोग माबूद,
और करते वो उनकी पूजा,
भर जाते जमीं-आसमां फ़साद से,
माबूद जो होता, ख़ुदा के सिवा।

कहो, लाएं दलील कहीं से,
बनाए जो माबूद उन्होंने,
किताब यह और पहले की,
लिखा नहीं ऐसा किसी में।

इर्शाद किया करो मेरी इबादत,
ख़ुदा ने पहले भी नबियों को,
बेटा ना कोई बेटी ख़ुदा की,
इज़्ज़त वाले सब बन्दें हैं वो।

करते अमल हु म पर उसके,
बढ़ कर वे बोल नहीं सकते,
ख़ुदा जानता उनको बेहतर,
हैबत से उसकी डरते रहते।

छिपी हैं निशानियां ख़ुदा की,
क़ुदरत के हर नजारे में,
लाते फिर यों नहीं ईमान,
मांगते यों निशानियां तुमसे।

कहते जो हमेशा नहीं जिओगे,
या वो जिएंगे तुम्हारे बाद,
करते वो इन्तिजार जिसका,
काश जान वो पाते अ़जाब।

कहो, नसीहत करता हूँ तुम्हें,
मैं ख़ुदा के हु म मुताबिक,
पर बहरे सुनते ही नहीं,
घिरते अ़जाब में वो जालिम।

मिलेगा क़ियामत के दिन को,
सबको पूरा-पूरा इंसाफ,
र ी भर ना फ़र्क़ आएगा,
अपना-अपना सब पाएंगे हिसाब।

हारून और मूसा को ख़ुदा ने,
अता की मुकम्मल रोशन किताब,
नसीहत मुबारक इस किताब में,
नाज़िल ख़ुदा ने की ये किताब।

दी थी हिदायत इब्राहीम को,
हाल जानता था वो उनका,
इब्राहीम ने कहा कौम से,
ना करो काम गुमराही का।

कर दिए टुकड़े-टुकड़े,
इब्राहीम ने सब माबूदों के,
छोड़ दिया पर एक माबूद,
जो बड़ा था उन सबमें।

पूछा कौम ने इब्राहीम से,
माबूदों को तोड़ा किसने,
बड़े माबूद को दिखला कर,
बोले इब्राहीम माबूद तोड़े इसने।

बोली कौम बुत नहीं बोलते,
ना ये कर सकते कोई काम,
बोले इब्राहीम, फिर यों पूजते,
जो करें ना फ़ायदा या नु सान।

लेने बदला, माबूद जो तोड़े,
सोचा दें इब्राहीम को जला,
सर्द कर दी आग ख़ुदा ने,
दी कौम को उसने सज़ा।

बख़्शी नेक औलाद इब्राहीम को,
और पेशवा उनको बनाया,
देते हु म नमाज़, ज़कात का,
समय इबादत करने में लगाया।

याद करो लूत और नूह को,
दाऊद और सुलेमान को भी,
बख़्शी उन्हें हि मत व नुबुवत,
और बख़्शे उन्हें कई इल्म भी।

दूर की अय्यूब की इल्लत,
बाल बच्चे भी बख़्शे उन्हें,
इस्माईल और इदरीस जुलकिफ़्ल,
दाख़िल किया रहमत में उन्हें।

क्रोधित हो जुन्नून चल दिये,
सोचा क़ाबू कर ना सकेंगे उन्हें,
पर पुकारा जब हमें उन्होंने,
बख़्शी निजात गम से उन्हें।

बख़्शे यहया ज़करीया को हमने,
बीवी को उनकी दी औलाद,
रूह फूंक, पाक दामन मरयम को,
ईसा की दी हमने सौगात।

बेकार ना जाएगी नेकी,
पाएंगे जालिम लोग सज़ा,
आएगी जिस दिन क़ियामत,
मिलेगा आमालों का बदला।

पूजा करते ख़ुदा के सिवा,
काफ़िर वो, और माबूद भी,
चिल्लाएंगे, सुन ना सकेंगे,
दोज़ख़ का वो इंधन होंगे सभी।

कर देंगे कायनात फिर पैदा,
जैसी करी थी पैदा पहले,
लिखा जबूर में, वारिसे मुल्क,
होंगे ख़ुदा के नेक बन्दे।

भेजा ख़ुदा ने मुहम्मद को,
सारी दुनिया के लिये रहमत,
करो ख़ुदा की फ़रमाबरदारी,
और करो उसकी ही इबादत।

22. सूर : हज्ज

बड़ा भयानक होगा वो हादिसा,
जिस दिन आ पहुंचेगी क़ियामत,
कांप उठेगी दुनिया सारी,
एक पल की मिलेगी ना मोहलत।

शक नहीं फिर जी उठने में,
पैदा किया है सब उसने,
सूखी धरती ज्यों हरी कर देता,
सब पर क़ुदरत रखी उसने।

करेगा सबका वो फ़ैसला,
सबकी ख़बर रखता है वो,
जो जालिम हैं पाएंगे अ़ज़ाब,
सज्दा करते नेक ख़ुदा को।

फ़रमाया इब्राहीम को ख़ुदा ने,
शरीक ना करना ख़ुदा के साथ,
नेकी जो करते उनके वास्ते,
रखो खाना-ए-काबा को साफ़।

करो मुनादी हज करने की,
हाज़िर हों ख़ुदा के घर में,
करें हज्ज़ वो हु म मुताबिक,
याद रखें उसकी दिल में।

जिन मुसलमानों पर होता जुल्म,
करें लड़ाई कमर कस कर,
हासिल होती मदद ख़ुदा की,
रखते महफ़ूज जो उसके घर।

झुठलाते जो तुमको लोग,
पहले भी वो रहे झुठलाते,
देता मोहलत एक अरसे की,
फिर अ़ज़ाब उन पर आते।

परवरदिगार का एक दिन,
हजार वर्ष के होता बराबर,
पूरा करेगा वो वादा अपना,
अ़ज़ाब रहेगा जल्दी आकर।

जिनके दिल होते बीमार,
करता ख़ुदा उनकी आज़माइश,
शक में रहते काफ़िर लोग,
सीधी राह, नेकों की ख़्वाहिश।

हिजरत करके जो मर जाते,
बेहतर रोजी ख़ुदा से पाते,
ऐसी जगह दाख़िल वो करता,
सुकून जहां पर वो पाते।

मेहरबानियां ख़ुदा की लाखों,
पानी पे चलाता कश्ती को,
गिर ना पड़े आसमां जमीं पर,
थामे रखता है वो उसको।

हर एक उम्मत के लिये,
मुकर्रर करी उसने एक शरीअत,
करें ना झगड़ा तुमसे लोग,
देते रहो तुम उन्हें हिदायत।

जिन बातों में करते विवाद,
क़ियामत को कर देगा फ़ैसला,
जानता ख़ुदा जमीं-आसमां की,
दिया किताब में ये सब लिखा।

पुकारते जिन्हें ख़ुदा के सिवा,
म खी भी वो बना नहीं सकते,
जो ले जाए कोई चीज छीनकर,
उसको वो छुड़ा नहीं सकते।

फ़रिश्तों और इंसानों में से,
कुछ को ख़ुदा चुन लेता,
पहुंचाए पैगाम औरों को वो,
काम मुबारक उनसे लेता।

करो इबादत उसकी तुम,
रुजूअ करो और सज्दा करो,
जैसा हक़ जिहाद करने का,
राहें ख़ुदा में जिहाद करो।

चुन लिया है तुमको उसने,
बख़्शा तुम्हें इब्राहीम का दीन,
करी ना कोई तंगी तुम पर,
रखो उस पर प का यकीन।

23. सूर : मुअ्मिनून

कामियाब हो गए ईमान वाले,
उसका हु म जो पालन करते,
निकल जाते जो हद से बाहर,
नहीं मीरास वो हासिल करते।

मिट्टी से किया इंसा पैदा,
एक नयी सूरत दी उसको,
आख़िर एक दिन वो मर जाता,
उठाते फिर क़ियामत के दिन को।

पैदा किये सात आसमां उसने,
ग़ाफ़िल नहीं ख़ल्क़त से ख़ुदा,
मेहं बरसाता, बाग लगाता,
सबको रोजी देता ख़ुदा।

भेजे नूह हमने कौम में,
तो कहने लगे काफ़िर सरदार,
उतारा ना फ़रिश्ता यों ख़ुदा ने,
दीवाना है ये, करो कुछ इन्तिजार।

जब कौम ने उन्हें झुठलाया,
ख़ुदा से उन्होंने मदद मांगी,
हु म ख़ुदा ने तब दिया उन्हें,
बनाओ हमारे सामने एक कश्ती।

और चढ़ आए जब पानी,
कश्ती में बैठा लो सब जोड़े,
करो शुक्र परवरदिगार का,
मुबारक जगह वो तुम्हें छोड़े।

भेजे कितने ही और पैगम्बर,
झुठलाती जिनको रहीं उम्मतें,
बस अफ़साने बन के रह गईं,
हो गयीं हलाक वो उम्मतें।

डरते जो ख़ौफ़े ख़ुदा से,
लाते आयतों पर ईमान,
करते नहीं शरीक और को,,
नेक हैं वो सच्चे इंसान।

लेकिन दिन जिनके ग़फ़लत में,
करते बेहूदा जो बकवास,
भटक गए वो सीधी राह से,
पाएंगे वो सख़्त अजाब।

जीने मरने का वो मालिक,
जमीं-आसमां सब उसके हैं,
जान-बूझकर जो फिर जाते,
भटक रहे वो सब झूठे हैं।

ना कोई उसका है बेटा,
ना माबूद कोई उसके साथ,
जो बयान करते ये लोग,
है ख़ुदा उस सबसे पाक।

सबसे बुलंद शान उसकी,
कोई नहीं उसका मुकाबला,
सबका मालिक, सब जानता वो,
ज़ाहिर हो, या हो पोशीदा।

कहो, कि गर दिखाये तू अजाब,
रखियों मुझको महफ़ूज उससे,
कारियों ना जालिमों में शामिल,
दुआ मांगता मैं, ख़ुदा तुझसे।

जवाब में बुरी बात के,
कहो बात बहुत अच्छी,
शैतान और उसके वस्वसों से,
कहो, मांगता पनाह तेरी।

रहेंगे लोग ग़फ़लत में यूं ही,
पर मौत आएगी जब सिर पर,
कहेंगे भेज दे दुनिया में वापिस,
ताकि चलूं मैं नेक राह पर।

पर यह बात हरगिज ना होगी,
जुबां पे कुछ, अमल कुछ होगा,
फिर जब फूंका जाएगा सूर,
ना रिश्ते रहेंगे, ना कोई पूछेगा।

कहेंगे वो बख़्श दे हमको,
ग़ालिब थी कमबख़्ती हम पर,
पर भूले वो जैसे ख़ुदा को,
भुला देगा उन्हें ख़ुदा वहां पर।

24. सूर : नूर

यह एक सूर: क़ुरआन की,
नाज़िल ख़ुदा ने जिसको की,
खुली मतलब वाली आयतें,
फ़र्ज़ मुकर्रर लोगों पर की।

बदकारी करने वाली औरतें,
और बदकारी करें जो मर्द,
मारो सौ-सौ दुर्रे उनको,
आए तुम्हें कतई ना दर्द।

बदकार या मुश्रिक औरत, मर्द,
मोमिनों पर हैं ये हराम,
अस्सी दुर्रे उनको मारो,
जो नेक औरत पर लगाते इलज़ाम।

बांधा ख़ुदा पर जब बोहतान,
यों ना कहा लाने को गवाह,
समझते जिसे तुम हल्की बात,
हक़ीक़त में था वो बड़ा गुनाह।

करता है नसीहत ख़ुदा तुमको,
मोमिनों फिर ऐसा काम ना करना,
चाहते जो मोमिनों में फैले बे-हयाई,
अ़जाब दुखदायी पड़ेगा उन्हें भुगतना।

ख़ुदा जानता सच या है,
बन्दे या जाने या है सच,
ना जाने या हो जाता,
होती ना जो उसकी रहमत।

मानों ना शैतान की बात,
दिखलाता वो ग़लत राह,
ख़ुदा बचाता रहमत से अपनी,
वरना हो जाते सब गुमराह।

मुनासिब मदद लोगों की करना,
जरूरत जिसकी जैसी हो,
बेहतर माफ़ी, दरगुज़र करना,
बख़्श देता ख़ुदा भी तुमको।

तोहमत लगाते परहेजगारों पर,
रहेगी उन पर हमेशा लानत,
गवाही देंगे उनके सब अंग,
क़ियामत को ज़ाहिर होगा ह़क़।

नापाक औरतें और नापाक मर्द,
बने हैं नापाकों के लिए,
पाक औरतें और पाक मर्द,
बने पाक लोगों के लिए।

भीतर ना जाओं दूसरों के घर,
बिना इजाजत या सलाम किए,
लौट जाओ वापिस मुड़ कर,
कहें जो लौटने को तुमसे।

मोमिन मर्द और मोमिन औरतें,
रखें अपनी नज़रें नीची,
मोमिन औरतें, औढ़ें औढ़नियां,
ज़ीनत ज़ाहिर करें ना अपनी।

मुनासिब निकाह करना बेवाओं का,
गुलामों, लौंडियों पर रहम करना,
हो ना अगर याह की ताकत,
तो पाक दामनी से जीते रहना।

जमीं-आसमानों का नूर है ख़ुदा,
चाहता जिसे सीधी राह दिखाता,
नेकी करते, ज़िक्रे ख़ुदा करते,
रहमत उन पर वो अपनी करता।

कुछ ना पाते कुफ्र करने वाले,
प्यासा ज्यूं मरुस्थल में भटके,
या घोर अंधेरे दरिया में,
ज्यूं हाथ को हाथ नहीं सूझे।

कुछ फिर जाते लाकर ईमान,
प का उनका ईमान नहीं,
या सोचते जुल्म करेंगे रसूल,
लोग ये जालिम हैं ख़ुद ही।

करते बन्दगी उसकी प्राणी,
सब तरीके से अपने-अपने,
बादशाह वो सारी कायनात,
क़ुदरत रखता वो सब पे।

मुनासिब है ये मोमिनों के लिए,
हु म सुनें और माने उसको,
होंगे कामयाब बस वो ही लोग,
ख़ौफ़े ख़ुदा का डर जिनको।

लाते ईमान, नेकी पर चलते,
करता वादा ख़ुदा उनसे,
बना देगा मुल्क का हाकिम,
जैसे बनाए उनसे पहले।

किए इजाज़त के व. त मुकर्रर,
तीन व. त जो पर्दे के,
बड़ों की तरह लें वो इजाज़त,
जब हो जाएं लड़के बड़े।

जब हाज़िर हो रसूल के पास,
उनकी इजाज़त का रखो अदब,
पड़ ना जाएं मुसीबत में कहीं,
हु म की जो करते मुख़ालफ़त।

25. सूर : फ़ुक़ार्न

बड़ी बरकत वाला है ख़ुदा,
किया नाज़िल जिसने क़ुरआन,
बादशाह वो सारे जहान का,
पाक–जात ना कोई सन्तान।

माबूद बनाए जो औरों के,
ना उनको कोई अधिकार,
कहते क़ुरआन को जो मनगढ़ंत,
करते हैं वो बातें बेकार।

कहते हैं यह कैसा पैगम्बर,
खाना खाता, चलता–फिरता,
यों ख़ुदा ने नहीं उतारा,
कोई ख़जाना या कोई फ़रिश्ता?

हो गए हैं ये गुमराह,
पा नहीं सकते जो रास्ता,
बना देता गर ख़ुदा चाहता,
बेहतर जन्नत से भी गुलिस्ता।

ये जो क़ियामत को झुठलाते,
तैयार है दोज़ख़ उनके लिए,
चीख पुकार करेंगे तब ये,
दोज़ख़ में जब जाएंगे डाले।

पूछो यह बेहतर या जन्नत,
परहेजगारों से जिसका वादा,
मिलेगा वो जो वो चाहेंगे,
पूरा होगा ख़ुदा का वादा।

भेजे थे पहले जो पैगम्बर,
वो भी थे ऐसे ही इंसान,
खाते–पीते, चलते–फिरते,
इसी दुनिया के वो थे इंसान।

अफ़सोस करेंगे जालिम एक दिन,
यों दिया ना साथ रसूल का,
बहकाया नसीहत आने के बाद,
शैतान ने हमसे दगा किया।

झुठलाया जिस–जिस कौम ने,
कर दिया उनको हलाक,
फ़िर्औन, नूह, समूद की कौमें,
ना जाने ऐसी कितनी मिसाल।

देखो उस शख़्स को जिसने,
ख़्वाहिशें नफ़्स को माबूद बनाया,
हो नहीं सकते तुम निगेहबां,
बेहतर उससे तो है चौपाया।

बख़्शी उसने कितनी नेमतें,
और क़ुरआन नसीहत के लिए,
करते ना जो लोग क़ुबूल,
हिदायत नहीं है उनके लिए।

मानो ना कहा काफ़िरों का तुम,
लड़ो उनसे हु म मुताबिक,
बेकार माबूदों की करते पूजा,
विरोध ख़ुदा का करते काफ़िर।

पानी से किया इंसा पैदा,
और पैदा किया रिश्ता–नाता,
छह दिन में बनाया जमीं–आसमां,
फिर अर्श पर वो जा ठहरा।

सूरज–चांद बना कर उसने,
दिन और रात का चक्र चलाया,
निशानियां छिपी उसकी इसमें,
जो समझा उसने किया शुक्रिया।

ख़ुदा के बन्दे जो होते,
चलते जमीं पे धीरे से,
बातें ज़ाहिलाना भी जो करते,
करते सलाम वो उनसे।

करते सज्दा ख़ुदा के आगे,
रातें बिताते उसकी याद में,
ख़र्चा करते जरूरत के मुताबिक,
लगे रहते उसकी इबादत में।

किया हराम ख़ुदा ने जो,
क़त्ल नहीं उसे करते वो,
करते नहीं वो बदकारी,
शरीअत का पालन करते वो।

करते नहीं लेकिन जो ऐसा,
दो गुना अ़जाब पाएंगे वो,
और जो कर लेते तौबा,
बख़्शता गुनाह उनके वो।

देते नहीं जो झूठी गवाही,
सुनते हैं नसीहत गौर से,
दिल का चैन और परहेजगारी,
मांगते यही दुआ उससे।

ऊंचे–ऊंचे महल मिलेंगे,
उनको सब्र के बदले में,
मुलाकात करेंगे वहां फरिश्ते,
और होगी दुआ–सलाम उनमें।

कह दो गर नहीं पुकारते,
तुम मेरे परवरदिगार को,
परवाह नहीं कुछ वो करता,
सज़ा झूठ की मिलेगी तुमको।

26. सूर : शुअरा

करो हलाक ना अपने आपको,
लाते ना जो लोग ईमान,
फेर लेते नसीहत से मुंह,
झुठला चुके हैं ये क़ुरआन।

जिसकी हंसी उड़ाते ये,
होगी हक़ीक़त अब मालूम,
छिपी निशानी हर शै में,
चाहें तो कर लें मालूम।

हु म दिया मूसा को जाओ,
डरते नहीं या जालिम लोग,
बोले मूसा डरता हूँ मैं,
झूठा ना समझें, मुझे वो लोग।

तंग होता है मेरा दिल,
और रुकती है मेरी जुबान,
साथ चले हारुन भी मेरे,
कर इर्शाद तू ऐसा फ़रमान।

और हुई जो मुझसे ख़ता,
क़त्ल हुआ एक हाथ से मेरे,
डरता हूँ कहीं मिले ना सज़ा,
मार ना डाले फ़िर्औन मुझे।

फ़रमाया यह हरगिज नहीं होगा,
जाओ दोनों लेकर निशानियां,
साथ तुम्हारे हूंगा मैं हर दम,
दिखलाना उनको मेरी निशानियां।

कहा फ़िर्औन ने भूल गए या,
उम्र बितायी जो साथ हमारे,
गुनाह किया तुमने सो किया,
लगता है तुम हो ना-शुक्रे।

हुई अचानक थी वो ख़ता,
बोले मूसा, मैं भाग गया,
बख़्शा इल्म नुबुवत ख़ुदा ने,
और तुमको ये पैगाम दिया।

बनी इस्राईल को तुमने,
रखा बना कर अपना गुलाम,
जाने दो साथ उन्हें मेरे,
मानों ख़ुदा का तुम फ़रमान।

ख़ुदा है मालिक सारे जहां का,
माना फ़िर्औन यह बात नहीं,
कहा मूसा को दिखलाओ निशानी,
देखीं, पर लाया यकीन नहीं।

सरदारों से फिर बोला फ़िर्औन,
मूसा तो है एक जादूगर,
चाहता मुल्क से तुम्हें भगाना,
अपने जादू के बल पर।

करने मुकाबला मूसा का,
सब जादूगर उसने बुलवाए,
डाला उन्होंने अपना जादू,
पर मूसा से जीत ना पाए।

उनकी रस्सी और लाठी सब,
जो भी था उनका जादू,
निगल गयी लाठी मूसा की,
चला ना उनका कुछ जादू।

गिरे सज्दे में तब जादूगर,
लाए ख़ुदा पर वो ईमान,
धमकाया फ़िर्औन ने उनको,
डिगा ना सका उनका ईमान।

फ़रमाया ख़ुदा ने मूसा को,
बनी इस्राईल को ले लो साथ,
किया जाएगा पीछा तुम्हारा,
निकल जाओ तुम रातों-रात।

पीछा करते दौड़े फ़िर्औनी,
निकल-निकल अपने घर से,
पलटी बाजी, बनी इस्राईल,
बन गए वारिस उनके।

निकल सुबह को पीछा किया,
पहुंच गए वो उनके पास,
डरी बनी इस्राईल, पकड़े गए,
लेकिन ख़ुदा था उनके साथ।

हु म हुआ तब मूसा को,
दे मारो तुम दरिया पर लाठी,
पार उतर गयी बनी इस्राईल,
दो हिस्सों में बट गया पानी।

जब पहुंची फ़िर्औन की सेना,
डूब गए सब वो पानी में,
बच गए मूसा और साथी,
बड़ी निशानी छिपी इसमें।

इब्राहीम का भी हाल सुना दो,
नूह, हूद के किस्से बता दो,
ऊंची मीनारे बनाते थे आद,
या हश्र हुआ इन्हें बतला दो।

समूद और कौम लूत की,
ईमान ना लाते थे जो लोग,
काम गुनाह का करते थे,
बरबाद हो गए वो सब लोग।

झुठलाया ऐसे ही शुऐब को,
बन वालों ने बात ना मानी,
अ़ज़ाब ने उनको आ पकड़ा,
ख़ुदा की इस किस्से में निशानी।

नाज़िल किया क़ुरआन ख़ुदा ने,
फ़रिश्ता ले कर इसे उतरा,
करते रहो नसीहत लोगों को,
दिल पे तुम्हारे किया है इल्का।

पहले उतरी हैं जो किताबें,
बात लिखी है यह उनमें,
या सनद यह काफ़ी नहीं,
जानते इसे जो उलेमा उनमें।

शैतान लेकर नाज़िल ना हुआ,
यह पवित्र किताब क़ुरआन,
ना ताकत, ना उसे मुनासिब,
ना सुन सकता वो क़ुरआन।

झूठ बोलते, गुनाह करते,
उन पर उतरता है शैतान,
कहां लौट कर जाएंगे वो,
जल्दी लेंगे जालिम ये जान।

27. सूर : नम्ल

अता किया जाता है क़ुरआन,
तुम्हें तुम्हारे ख़ुदा की ओर से,
मोमिनों के लिये है ख़ुशख़बरी,
अ़जाब उन्हें जो नकारते इसे।

हुदहुद पक्षी ने एक दिन,
आकर उन्हें यह ख़बर सुनायी,
सबा शहर में, बड़े तख़्त पर,
बैठी, राज करती एक रानी।

गये आग लेने जब मूसा,
आयी उनको आवाज ख़ुदा की,
रहमत मिली, नुबुवत बख़्शी,
मिली निजात कौम को उनकी।

रानी और उसके शहर वाले,
करते हैं सूरज को सज्दा,
रोके हुए है शैतान उनको,
दिखाता उनको आमाल सजा।

बख़्शा इल्म दाऊद, सुलेमान को,
बने सुलेमान उनके जानशीन,
सिखलायी उन्हें जानवरों की बोली,
और इनायत उन्हें करी हर चीज़।

सुलेमान ने भेजा एक ख़त,
हुदुहद गया उसको लेकर,
पढ़ा मलिका ने मश्विरा किया,
भेजा कासिद तोहफ़ा लेकर।

लश्कर जिन्न, इंसान परिंदों के,
जमा सुलेमान के लिये किए,
हर प्राणी की अलग जमाअत,
करी इकट्ठी उनके लिए।

दिया तोहफ़ा जब सुलेमान को,
क़बूल उन्होंने किया ना तोहफ़ा,
बेहतर है ख़ुदा देने वाला,
करता वो ही हर चीज अता।

पूछा उन्होंने अपने लोगों से,
या कोई ऐसा है तुममें,
उड़ा ले आए तख़्त मलिका का,
उसके यहां आने से पहले।

सालेह को भेजा समूद की ओर,
बोले इबादत करो ख़ुदा की,
पर फ़साद वो लोग करते थे,
माने ना वो बात सालेह की।

करी पेशकश एक जिन्न ने,
पर हाज़िर था एक इल्म वाला,
पलक झपकने से पहले उसने,
तख़्त वहां हाज़िर कर डाला।

क़सम खायी छापा मारेंगे,
सालेह के घर रात में,
कुछ कर पाते उससे पहले,
हलाक कर दिया उन्हें ख़ुदा ने।

मलिका का लेने इम्तिहान,
सूरत तख़्त की बदला डाली,
पूछा मलिका जब आयी वहां,
या तख़्त तुम्हारा है ऐसा ही?

समझाया ऐसे ही लूत ने,
छोड़ो बे-हयाई, कहा कौम को,
हुए लाजवाब तो बोली कौम,
निकाल बाहर करो लूत को।

कुछ पल निहारा तख़्त मलिका ने,
फिर बोली यह है वैसा ही,
और आपकी शान और बड़ाई,
मालूम मुझे पहले ही हो गयी।

मेंह बरसा कर तबाह कर दिया,
ख़ुदा ने लूत की कौम को,
बख़्शी निजात, पत्नि के सिवा,
लूत और उनके घर वालों को।

मना किया सुलेमान ने उसको,
इबादत करना किसी और की,
पहले तो वह थी काफ़िर,
अब करे इबादत सिर्फ़ ख़ुदा की।

सब तारीफ़ ख़ुदा ही को मुनासिब,
सलाम बन्दों पर जिनको चुना,
वो ही तो सब करता-धरता,
माबूद नहीं कोई उसके सिवा।

मलिका को जब ले गए महल में,
फ़र्श लगा पानी का हौज उसे,
जब जाना शीशे लगे फ़र्श में,
बोली मैं लायी ईमान ख़ुदा पे।

पैदा किया ख़ल्क़त को उसी ने,
फिर बार-बार उसे पैदा करता,
देता है सबको वो रोजी,
जो कुछ करता, बस वो करता।

कैसे हो सकता कोई और माबूद,
गर हो सच्चे, पेश दलील करो,
जानता नहीं कोई गैब की बातें,
अंजामें आख़िरत से मुश्रिकों डरो।

छिपी है जो बातें सीने में,
जानता है वो सब परवरदिगार,
जिन बातों में करते इख़्तिलाफ,
कर देगा फ़ैसला वो परवरदिगार।

हो हक़ पर तुम रखो भरोसा,
सुना नहीं सकते मुर्दों को बात,
जो ईमान आयतों पर लाते,
हो जाते हैं वो फ़रमाबरदार।

रहे आयतें जो झुठलाते,
किये जाएंगे सब वो जमा,
पूरा होगा वादा ख़ुदा का,
जुल्म की वो पाएंगे सज़ा।

जिस दिन फूंका जाएगा सूर,
उड़ते दिखेंगे पर्वत बादल से,
घबड़ा उठेंगे जो हैं जालिम,
होंगे बे-ख़ौफ़ ईमान वाले।

पूज्य बनाया जिसने म का को,
इबादत उस मालिक की करूं,
कहो हु म यही हुआ मुझे,
आज्ञा का पालन उसकी करुं।

28. सूर : क़स़स़्

मूसा और फ़िऔंन का हाल,
ऐ मुहम्मद सुनातें हैं तुम्हें,
बतलाते सही बात इसलिए,
मोमिन जान सकें जिससे।

मुल्क का राजा था फ़िऔंन,
बांटा गिरोह में लोगों को,
बेटे मारता एक गिरोह के,
जीने देता उनकी बेटियों को।

हम चाहते थे करना एहसान,
किये गए थे जो कमजोर,
पेशवा उन्हें बना दें हम,
और थमा दें मुल्क की डोर।

किया हु म मूसा की मां को,
जब देखो तुम डर की बात,
ना ख़ौफ़ करना, ना करना रंज,
मूसा को देना दरिया में डाल।

बहकर पहुंचे फ़िऔंन के पास,
पास रखा उसने उनको,
पीछे-पीछे बहन को भेजा,
दूर से देखे वह उनको।

कर दिये थे दूध हराम,
हमने मूसा पर पहले से,
कहा बहन ने घर बतलाती,
पालन उसका जहां हो सके।

पहुंचाया इस तरह वापिस,
हमने मूसा को मां के पास,
पूरा किया वायदा अपना,
मां ने ली चैन की सांस।

जवान हो गए जब मूसा,
हिम्मत और इल्म उन्हें बख़्शा,
हुए शहर में जब दाख़िल,
दो लोगों को लड़ते देखा।

एक कौम का था उनकी,
मांगी उसने मूसा से मदद,
ज्यों मूसा ने एक मु का मारा,
मारा गया वो दूसरा शख़्स।

मूसा ने सोचा गुनाह हुआ,
बहकाया शैतान ने उनको,
परवरदिगार से मांगी माफ़ी,
बख़्श दिया ख़ुदा ने उनको।

मदयन की ओर चले मूसा,
एक दृश्य उन्होंने वहां देखा,
पानी पीते चौपायों को और,
दो स्त्रियों को खड़े देखा।

पूछा मूसा ने जब उनसे,
बोली बकरियां प्यासी हैं हमारी,
जब तक चले ना जाएं चरवाहे,
पिला नहीं सकते हम पानी।

मदद करी मूसा ने उनकी,
बकरियों को पिला दिया पानी,
फिर साए में बैठ गये वो,
आस ख़ुदा की मन में मानी।

वापिस आयी तब एक उनमें से,
बोली पिता ने बुलवाया तुम्हें,
करी जो तुमने हमारी मदद,
चाहते हैं बदला दें वो तुम्हें।

इकरार हुआ पिता और मूसा में,
  याह देगा उन्हें वह एक बेटी,
पर मूसा को आठ बरस तक,
करनी पड़ेगी सेवा उनकी।

हुई मुद्दत पूरी तो चले,
मूसा लेकर घर को साथ,
थोड़ी दूर पहुंच कर उनको,
दिखी तूर पर्वत पर आग।

गए उस तरफ जब मूसा,
एक पेड़ से सुनी आवाज,
मैं ख़ुदा, तुमसे मुखातिब,
लाठी अपनी नीचे दो डाल।

देखा लाठी को हरकत करते,
डरे मूसा, वापिस हो लिए,
कहा हमने हिम्मत रखो,
है ये बुलावा, तुम्हारे ही लिए।

गिरेबान में हाथ डाल के,
बाहर निकालो अपना हाथ,
बग़ैर ऐब के सफ़ेद चमकेगा,
लो सिकौड़ तुम अपना हाथ।

जाओ फिर फ़िर्औन के पास,
हो रहे नाफ़रमान वो लोग,
मूसा बोले डरता हूँ मैं,
मार डालेंगे मुझको वो लोग।

हारून बना कर साथी मेरा,
भेजो उसको मेरे साथ,
तस्दीक करेगा हारून मेरी,
जुबां भी उसकी ज्यादा साफ़।

दीं हैं तुमको जो निशानियां,
फ़रमाया करेंगी मदद तुमको,
पहुंच सकेंगे फ़िर्औनी ना तुम तक,
मज़बूत करेंगे हम तुमको।

झूठलाया फ़िर्औन ने उनको,
दिया बाप-दादा का हवाला,
बोला फिर अपने लोगों से,
ख़ुदा ना तुम्हारा मेरे अलावा।

कहा, पका कर इंटे तुम,
एक ऊंचा सा महल बना दो,
चढ़ जाऊं मैं ख़ुदा की ओर,
साबित कर दूं झूठा इसको।

पर फ़िर्औन की चली ना एक,
लश्कर सहित वो पकड़ा गया,
होता यही अंजाम जालिमों का,
दरिया में उनको डुबा दिया।

दी किताब मूसा को हमने,
हलाक उम्मतों को करने के बाद,
तुम वहां तब मौजूद ना थे,
है लम्बी मुद्दत पहले की बात।

रहमत है तुम्हारा भेजा जाना,
ताकि तुम कर सको हिदायत,
पहले जहां आया नहीं कोई,
उन लोगों को मिले नसीहत।

कह ना सकें रसूल ना भेजा,
वरना ले आते हम भी ईमान,
लेकिन जब हक़ आ पहुंचा,
कहते यों ना मिला निशान?

जब मूसा को दी थी निशानियां,
कुफ्र या तुमने नहीं किया,
कहो कि जो हो तुम सच्चे,
दूसरी किताब दो हमें दिखा।

जो ना करते ये बात क़बूल,
समझो ख़्वाहिशों की पैरवी करते,
ज्यादा उससे कौन गुमराह,
जो चलते ख़्वाहिशों के पीछे?

दिया जाएगा दो गुना बदला,
ख़ुदा के हु मबरदारों को,
कर नहीं सकते तुम हिदायत,
मर्जी अगर ना उसकी हो।

आ जाएगी जिस दिन क़ियामत,
जो गुमराह थे, होंगे बेजार,
शरीक ना कोई काम आएगा,
ना ख़ुदा सुनेगा उनकी पुकार।

मूसा की कौम से था कारून,
ख़ुदा ने दी दौलत बेशुमार,
पर इतराता दौलत पे अपनी,
था ना ख़ुदा का वो शुक्रगुजार।

निकला एक दिन ठाठ से वो,
कहा किस्मतवाला लोगों ने उसे,
पर जिनको था इल्म वो बोले,
सवाब नेकी का बेहतर इससे।

आयी जब रात, धसां धरती में,
कारून और घर उसके साथ,
कर ना सकी मदद धन-दौलत,
पल में हो गया वो बरबाद।

हो जाएगी हर चीज फ़ना,
लौट जाएगा सब उसको,
बाकी रहेगी बस नेकी,
बेहतर बदला मिलेगा उनको।

29. सूर : अंकबूत

जो कहते हम ईमान ले आए,
या आज़माइश होगी ना उनकी,
पहले भी आज़माए गए लोग,
करता ख़ुदा आज़माइश सबकी।

करते हैं जो काम बुरा,
समझे या क़ाबू से बाहर,
व. त ज़रूर वह आने वाला,
किया ख़ुदा ने जिसे मुकर्रर।

मेहनत करते हैं जो लोग,
होता उनका अपना फ़ायदा,
ना एहसान ख़ुदा पर कोई,
उसे ना दुनिया की परवा।

दिया हु म नेक सुलूक करें,
इंसा अपने वालिदों के साथ,
गर कहें शिर्क करने को वो,
मुनासिब नहीं मानना वो बात।

कहते काफ़िर हम बोझ उठा लेंगे,
गर हमारे तरीके की करो पैरवी,
जो करता गुनाह, खुद बोझ उठाएगा,
बोझ उठाएंगे काफ़िर औरों का भी।

याद करो तुम नबियों को,
नूह, इब्राहीम और लूत को,
देते थे पैगाम ख़ुदा का,
माने ना लोग नसीहत को।

बख़्शी निजात उसने नबियों को,
और उनको जो लाए ईमान,
लेकिन रहे जो उन्हें झुठलाते,
उठाना पड़ा उन्हें भारी नु सान।

बनाते कारसाज़ जो औरों को,
उनकी मिसाल मकड़ी की सी,
घर जो बनाती वो अपना,
होता सबसे कमजोर वही।

ऐ मुहम्मद पढ़ा करो क़ुरआन,
और नमाज़ अदा किया करो,
जानता ख़ुदा जो तुम करते,
ज़िक्र ख़ुदा का किया करो।

करो ना झगड़ा अहले किताब से,
करते ना जो बे-इंसाफी,
कह दो रखते हम ईमान,
किताबें जो तुम पर उतारी।

जो किताब नाज़िल की तुम पर,
पढ़ ना सकते थे तुम पहले,
ना तुम को आता था लिखना,
इल्म दिया ये सीने में तुम्हें।

कह दो, ख़ुदा ही गवाह काफी,
सब देखता, सब जानता वो,
बातिल को मान ख़ुदा नकारते,
नु सान बड़ा उठाने वाले वो।

खेल-तमाशा दुनिया की जिंदगी,
रहेगा सदा आख़िरत का घर,
ना शिर्क करो, ना ना-शुक्री,
ना बांधो झूठे बुह्तान ख़ुदा पर।

30. सूर : रूम

जीत जाएंगे रूम वाले,
हो गया ये हु म ख़ुदा का,
हो जाएंगे खुश मोमिन,
बस व. त लगेगा थोड़ा सा।

है ग़ालिब और मेहरबान ख़ुदा,
जिसे चाहता वो मदद देता,
करता ना कभी वो वादा-ख़िलाफ़ी,
प का होता उसका वादा।

पर अ सर नहीं लोग जानते,
बस वो जानते दुनिया की जिंदगी,
ग़ाफ़िल हैं आख़िरत की तरफ़ से,
करते नहीं वो ख़ुदा की बंदगी।

या गौर नहीं करते दिल में,
जो कुछ है किया उसने पैदा,
देख लें कर सैर मुल्क की,
अंजाम उन लोगों का हुआ कैसा?

ज्यादा थी उनकी ताकत,
और ज्यादा आबाद करी धरती,
निशानी लेकर आते रहे पैगम्बर,
पर बात उन्होंने ना मानी उनकी।

किया जुल्म उन्होंने ख़ुद अपने पर,
ख़ुदा ना जुल्म किसी पर करता,
लगे जो रहते झुठलाने में उसे,
अंजाम बुरा उनका हो रहता।

फिर पैदा कर देगा वो,
जिसने किया है पहले पैदा,
ना-उम्मीद होंगे गुनाहगार बन्दें,
होगी क़ियामत जिस दिन बरपा।

सिफ़ारिश ना करेगा शरीक कोई,
वो भी उनको इंकार करेंगे,
जिस दिन क़ियामत आ जाएगी,
फ़िर्को में अलग वो बंट जाएंगे।

करते जो नेकी, लाते ईमान,
होंगे खुशहाल, वो जन्नत पाएंगे।
करते जो कु.फ़्र, आयतें झुठलाते,
होंगे बदहाल, वो अ़जाब पाएंगे।

तो सुबह और शाम के व. त,
ख़ुदा की तुम तस्बीह करो,
दोपहर और तीसरे पहर में भी,
याद ख़ुदा की किया करो।

वही जिंदों को मुर्दों से निकालता,
और मुर्दों को निकालता ज़िंदा से,
हरी करता सूखी जमीं को जैसे,
वैसे ही निकालेगा तुम्हें जमीं से।

छिपी हुई उसकी निशानियां,
मिट्टी से तुम्हें बनाने में,
तुम्हें जीवन साथी देने में,
पैदा जमीं-आसमां करने में।

समझाता एक मिसाला से तुमको,
माल तुम्हें जो ख़ुदा ने बख़्शा,
या तुम्हारा कोई भी गुलाम,
शरीक उस माल में हो सकता?

मगर जालिम हैं जो लोग,
ख़्वाहिशों के ही पीछे चलते,
करे जिसको ख़ुदा गुमराह,
कभी हिदायत नहीं पा सकते।

चले जाओ सीधा मुंह किए,
एक ख़ुदा के रस्ते पर,
पैदा किया जिस पर उसने,
अडिग रहो उस फ़ितरत पर।

ख़ुदा की दी उस फ़ितरत में,
त दीली नहीं कोई हो सकती,
जानते नहीं पर अ सर लोग,
यही है सीधी राह दीन की।

करो ना दीन के टुकड़े-टुकड़े,
बंट जाओ ना फ़िर्कों में तुम,
मज़ा चखाता जब रहमत का,
करो ना शिर्क, ख़ुदा से तुम।

ख़ुश होता है ख़ुदा उनसे,
अदा करते ह़क़ जो औरों का,
मुनासिब नहीं सूद का लेन-देन,
जो देता जकात, बरकत पाता।

वो ही जिलाता, रोजी देता,
मारता वो, फिर पैदा करता,
शान ख़ुदा की बुलंद निराली,
शरीक नहीं कोई हो सकता।

चलाता हवाओं को वो ही,
आसमान में बादल फैलाता,
जहां चाहता पानी बरसाता,
सूखी धरती में जान डालता।

बेशक करता मुर्दों को ज़िंदा,
कादिर है ख़ुदा हर चीज पर,
बहरों को बात सुना नहीं सकते,
चल देते जो पीठ फेर कर।

31. सूर : लु मान

रखते जो आख़िरत का यकीन,
नमाज़ के पाबन्द, देते जकात,
ये ही लोग हिदायत पर है,
पाएंगे ये ही लोग निजात।

लु मान को बख़्शी थी हि मत,
शुक्र करो ख़ुदा का तुम,
करो शुक्र या ना-शुक्री,
अपने ही लिए करते हो तुम।

करो याद उस व. त की लोगों,
लु मान ने की बेटे को नसीहत,
कहा कभी तुम शिर्क ना करना,
जुल्म बड़ा है करना शिरकत।

करो शुक्र ख़ुदा का तुम,
मां बाप का भी शुक्र अदा करो,
गर वो कहें करने को शिर्क,
तो उस पर ना तुम गौर करो।

दुनिया में दो उनका साथ,
चलो नेक रस्ते पर तुम,
छोटे से छोटा कोई अमल,
छिपा नहीं सकते उससे तुम।

रखना नमाज़ की पाबन्दी,
देना अच्छे कामों का हु म,
बुरी बातों से करो मना,
सब्र कष्ट में रखना तुम।

ना गाल फुलाना लोगों से,
रहना ना अकड़े जमीं पे तुम,
मुनासिब अपनानी दर्मियानी राह,
रखना आवाज को नीची तुम।

या देखा नहीं यह तुमने,
सब किया ख़ुदा ने क़ाबू तुम्हारे,
पूरी कीं सब नेमतें तुम पर,
पर कुछ रहते सदा झगड़ते।

ना इल्म उन्हें, ना ही हिदायत,
ना रखते वो रोशन किताब,
मन्जूर ना सीधी राह पकड़ना,
शैतान दिलाता दोज़ख़ के अ़जाब।

जाएंगे लौटकर सभी ख़ुदा को,
पाएंगे अपने कर्मों का अंजाम,
जानता ख़ुदा दिल की बातें,
बुराई का देता बुरा अंजाम।

जो भी जमीं-आसमां में है,
है वो मालिक उन सबका,
तारीफ़ उसी की है सारी,
बेशक वो ख़ुदा है बे-परवा।

कलम बना लो सब पेड़ों की,
सात समुन्दर स्याही कर लो,
ख़त्म ना होंगी उसकी सिफ़तें,
चाहे कोशिशें कितनी कर लो।

उसकी मेहर से कश्ती चलती,
तुफां से बच जाते लोग,
फिर ना-शुक्रे वो हो जाते,
अ सर वादा ना निभाते लोग।

सच्चा एक ख़ुदा का वादा,
धोखे-फ़रेब से तुम बचना,
होगा कल या वो ही जानता,
रखता वो ही इल्म मौत का।

32. सूर : सज्दा

बेशक यह किताब हुई नाज़िल,
सारे जहां के परवरदिगार से,
ना बनाया इसे रसूल ने,
बर-ह्क़ है ख़ुदा की ओर से।

उन लोगों को करो हिदायत,
आया जहां पहले ना कोई,
मिले रास्ता सब लोगों को,
बिना हिदायत रहे ना कोई।

छह दिन में किए पैदा,
जमीं-आसमां और सब चीजें,
फिर अर्श पर हुआ क़ायम,
ख़ुदा बना कर सब चीजें।

करता हर काम का प्रबन्ध,
जानता सब छिपा और ज़ाहिर,
कौशल से सब उसने बनाया,
रहम वाला, सब पर ग़ालिब।

शुरू मिट्टी से कर इंसा को,
दुरुस्त किया इंसा का बदन,
फूंकी रूह ख़ुदा ने उसमें,
हुआ ऐसे इंसा का जनम।

बहुत कम शुक्र करते हैं लोग,
कहते, फिर या पैदा होंगे,
जब फ़रिश्ता रूह क ज करेगा,
वापिस ख़ुदा को तुम होंगे।

ताज्जुब करो तुम, जब देखो,
गुनाहगार सर को झुकाए होंगे,
करेंगे मिन्नत भेज दो वापिस,
जाकर हम नेक आमाल करेंगे।

पर ना मिलेगा उनको मौका,
चखेंगे वो मज़े आग के,
भुला दिया था उन्होंने जैसे,
हम भी उन्हें भुला देंगे।

हमारी आयतों पर लोग वही,
लाते हैं अपना ईमान,
करी जाती जब उन्हें नसीहत,
झुकते सज्दे में जो इंसान।

तारीफ़ के साथ परवरदिगार की,
करते हैं तस्बीह वो लोग,
ख़र्च करते वो नेक राह में,
सदा पुकारते हमें वो लोग।

मोमिन, और नाफ़रमान हों जो,
कभी बराबर हो नहीं सकते,
नाफ़रमानों के लिये है दोज़ख़,
बनी बहिश्त मोमिनों के वास्ते।

मूसा को दी हमने किताब,
बेशक मिलोगे तुम उनसे,
बनी इस्राईल को मिली हिदायत,
और बनाये पेशवा उनमें से।

कर देगा फ़ैसला परवरदिगार,
इख़्तिलाफ का क़ियामत के दिन,
कर ना सकेंगे, काफ़िर कुछ भी,
करेगा फ़ैसला ख़ुदा जिस दिन।

33. सूर : अह्ज़ाब

डरते रहना ख़ुदा से, ऐ नबी,
जालिमों का कहा ना मानना,
की जाती जो तुम पर नाज़िल,
पैरवी उसकी करते रहना।

रखना भरोसा ख़ुदा पर तुम,
कारसाज़ ख़ुदा ही काफ़ी,
यूं ही कुछ कह देने से,
बात ना क़ायम वो हो जाती।

असली पिता के नाम से ही,
पुकारा करो तम लयपालकों को,
पसंद ख़ुदा को है यह बात,
अपना बेटा कहो ना उनको।

ग़लती से गर कुछ हो जाए,
उसका तुम पर गुनाह नहीं,
गर ईरादा दिल में ना हो,
करता वो उसकी पकड़ नहीं।

मोमिनों पर ह़क़ नबियों का,
होता उनकी जान से ज्यादा,
और जो होती पत्नि रसूल की,
मोमिनों के लिये होती वो माता।

याद करो मेहरबानी ख़ुदा की,
जब हमला फ़ौज करने को आयी,
भेजे ऐसी हवा और सेना,
नज़र नहीं जो तुम को आयी।

तुम पर फ़ौज जब चढ़ आयी,
करी तुम्हारी हमने आज़माइश,
तो बोले दिल में ग़फ़लत वाले,
नबी का वादा था ना सच्चाई।

लौट चलो कहते थे कुछ,
कुछ बोले घर खुले पड़े,
मंशा उनकी जाएं भाग,
वादे पर उतरें ना खरे।

कहो, भागते तुम जो मौत से,
बच कर कहां तुम जा सकते,
ख़ुदा की इच्छा होगी, सो होगा,
बचा कौन सकता तुम्हें उससे?

मगर हक़ीक़त में ये लोग,
कभी ना लाए थे ईमान,
किए बरबाद आमाल उनके,
काम ख़ुदा को था आसान।

जो करता ज़िक्रे ख़ुदा ज्यादा,
ख़ुदा से मिलने का हो यकीं,
ऐसा ही शख़्स होता पैगम्बर,
उसकी ही तुम करो पैरवी।

जब मोमिनों ने लश्कर को देखा,
वादा था जिसका ख़ुदा, रसूल का,
ईमान और इताअत ज्यादा हो गयी,
इकरार ख़ुदा से सच कर दिखलाया।

और थे जो लोग काफ़िर,
उनको ख़ुदा ने फेर दिया,
कर सके ना भलाई हासिल,
ख़ुदा मोमिनों को काफ़ी हुआ।

क़िलों से उतारा अहले किताब को,
जिन्होंने उनकी मदद की थी,
कैद और क़त्ल किया कितनों को,
दहशत दिलों में उनके भर दी।

धन-दौलत और जमीं-मकान,
पड़े जहां ना तुम्हारे पांव,
बना दिया वारिस तुमको,
भारी ख़ुदा का सबसे दाव।

ऐ पैगम्बर, कहो अपनी बीवियों से,
चाहतीं जो तुम दुनिया की जिंदगी,
तो आओ दूं मैं माल तुम्हें,
और करुं मैं तुम्हारी रुख़सती।

गर जो तलब रखती हो तुम,
ख़ुदा, पैगम्बर और बहिश्त की,
बड़ा बदला किया तैयार ख़ुदा ने,
करने वालीं हैं जो तुममें नेकी।

खुली ना-शाइस्ता हरकत जो करेंगी,
पाएंगी उसकी वो दोगुनी सज़ा,
और जो ख़ुदा, रसूल की फ़रमाबरदारी,
पाएंगी उसका वो दोगुना नफ़ा।

नहीं दूसरी औरतों जैसी हो,
व्यवहार करो तुम बा-दस्तूर,
छोड़ो पुराने दिनों की बातें,
नमाज़ और जकात करो जरूर।

चाहता है ख़ुदा, ए अहले बैत,
दूर कर दे तुमसे ना-पाकी,
बेशक ख़ुदा लतीफ, बा-ख़बर है,
करो याद तुम उसको ही।

झुकाते सर इताअत में ख़ुदा को,
मिलती बख़्शीश और बड़ा बदला,
करते नाफ़रमानी ख़ुदा, रसूल की,
वो लोग यकीनन हैं गुमराह।

जिस बात को तुम छिपाते थे,
ज़ाहिर करने वाला था ख़ुदा,
चाहते थे तुम हो ना तलाक,
पर तलाक ज़ैद का होके रहा।

डरते थे तुम लोगों से,
वाजिब डरना सिर्फ़ ख़ुदा से,
हु म ख़ुदा का हो ज़ाहिर,
निकाह करा दिया तुमसे।

मुंह बोले बेटों की पत्नियां,
जब तलाक उनका हो जाए,
जायज़ करना तब उनसे निकाह,
यूं ज़ाहिर हु में ख़ुदा हो जाए।

अनुचित नहीं वह पैगम्बर को,
मुकर्रर हुआ जो उनके वास्ते,
पहले भी ऐसा होता रहा,
हु में ख़ुदा जो उनके वास्ते।

करो ज़िक्रे ख़ुदा ईमान वालों,
सुबह, शाम उसकी पाकी बयान,
लाता अंधेरे से रोशनी में,
रहमत करता वो मेहरबान।

गवाही देने और डराने वाला,
बना के भेजा तुम्हें पैगम्बर,
ख़ुदा की तरफ बुलाने वाला,
रोशन चिराग हो, ऐ पैगम्बर।

ऐ मोमिनों, निकाह के बाद,
पर उसको छूने से पहले,
गर दे दो तलाक़ उसे तुम,
रोको मत फिर इद्दत के लिये।

ऐ पैगम्बर, हलाल तुम्हें हैं,
वे बीवियां जिन्हें मह्र दे दिया,
और हलाल तुम्हें तुम्हारी लौंडियां,
चाचा, मामा, खाला, फूफी की बेटियां।

अनुचित है जाना, ऐ मोमिनों,
बिना बुलाए, नबियों के घर,
और अनुचित है वहां रुके रहना,
दावत समाप्त हो जाने पर।

रसूले ख़ुदा को देना तकलीफ़,
या उनका अदब नहीं करना,
मुनासिब नहीं कभी उनके बाद,
उनकी बीवियों से निकाह करना।

गुनाह नहीं स्त्रियों के लिये,
अपने पिता से पर्दा ना करना,
ना बेटों से, ना भाइयों से,
भतीजे, भांजों से पर्दा ना करना।

कह दो अपनी बीवी, बेटियों से,
मुस्लिम औरतों से भी कह दो,
जब बाहर तुम घर से निकलो,
मुंह अपना चादर से ढ़क लो।

डरा करो, ऐ मोमिनों, ख़ुदा से,
और सीधी बात कहा करो,
बख़्शा देगा वो गुनाह तुम्हारे,
हु म का पालन किया करो।

पेश किया हमने अमानत को,
जमीं-आसमां ने इंकार किया,
बेशक जालिम और ज़ाहिल था,
इंसा, जो उसको उठा लिया।

बना अ़ज़ाब का जो कारण,
जालिम मर्दों और औरतों को,
बख़्शीश और मेहरबानी मिली,
मोमिन मर्दों और औरतों को।

34. सूर : सबा

परवरदिगार से नाज़िल क़ुरआन,
दिखलाता रास्ता तारीफ़ के काबिल,
जानते यह, जिन्हें इल्म मिला,
क़ुरआन ह़क़ है और ग़ालिब।

काफ़िर कहते देखो यह शख़्स,
कहता फिर पैदा होंगे मर कर,
लगता इसको जुनून है कोई,
या ये बांधता झूठ ख़ुदा पर।

पर जिनको ना ईमान आख़िरत पर,
पड़े वो गुमराही और आफ़त में,
ख़ुदा चाहे जमीं में धंसा दे,
या आसमान के टुकड़े गिरा दे।

और दाऊद को हमने बख़्शी बरतरी,
परिंदों को किया उनके वश में,
कर दिया हमने लौहे को नरम,
ताकि जिरह बना सकें उससे।

हवा को किया सुलेमान के ताबेअ,
बहा दिया तांबे का चश्मा,
काम करते थे जिन्न उनके वास्ते,
हु म में उनके रहते चस्पा।

हु म दिया जब उन्हें मौत का,
मरना उनका ना हुआ मालूम,
गिरी जो लाठी घुन खाने से,
तब जिन्नों को हुआ मालूम।

सबा वालों को दी थी निशानी,
दाएं, बाएं दिये दो बाग,
खाओ, पिओ, रहो शहर में,
करो ख़ुदा-ए-ग़फ़्फ़ार को याद।

जब शुक्रगुजारी से मुंह मोड़ा,
छोड़ दिया उन पर सैलाब,
बद-मज़ा मेवे थे जिनके,
ऐसे हो गये उनके बाग।

माबूद बनाते ख़ुदा के सिवा,
कहो कि बुलाओ तुम उनको,
मालिक नहीं ज़र्रा भर के
ना शिर्कत हासिल है उनको।

हमारे गुनाह ना जिम्में तुम्हारे,
तुम्हारे आमाल को तुम जानों,
ख़ुदा करेगा सभी का फ़ैसला,
चाहे तुम मानो ना मानो।

काश, जालिमों को तब देखो,
खड़े होंगे जब ख़ुदा के सामने,
एक-दूजे को कोसेंगे वो,
यों आये हम बहकावे में?

भेजे बस्तियों में डराने वाले,
पर हुए ना क़ायल उनके लोग,
माल-औलाद का उन्हें था भरोसा,
अ़जाब से ना डरते थे लोग।

कह दो मेरा रब मालिक है,
जैसा चाहता वैसा कर देता,
जिसको चाहता रोजी फैलाता,
जिसे चाहता तंग कर देता।

जिस दिन लोगों को जमा करेगा,
पूछेगा फ़रिश्तों से या तुम्हें पूजा,
वो कहेंगे बस तू ही पाक है,
करते थे ये जिन्नों की पूजा।

उस दिन रखेगा ना कोई अधिकार,
किसी को हानि-लाभ पहुंचाने का,
समझे जिस दोज़ख़ को तुम झूठ,
कहेगा ख़ुदा चखो उसका मज़ा।

ख़ुदा ही जानता ग़ैब की बातें,
वो ही ऊपर से ह़क़ उतारता,
ना पहले पैदा किया बातिल ने,
ना फिर वो पैदा कर सकता।

बच ना सकें, अ़जाब से जालिम,
चाहें कहें ईमान हम लाये,
कैसे हाथ पहुंचेगा तब उनका,
पहले अटकल के तीर चलाये।

35. सूर : फ़ात्तिर

सब तारीफ़ ख़ुदा ही के लिये,
किये जिसने जमीं-आसमां पैदा,
बनाता फ़रिश्तों को कासिद,
हर चीज पे वो क़ुदरत रखता।

खोल दे जो रहमत का दरवाजा,
नहीं कोई उसे बन्द करने वाला,
और अगर बन्द हो उसका दरवाजा,
नहीं कोई फिर उसे खोलने वाला।

याद करो एहसान ख़ुदा के,
पैदा करने, रोजी देने वाला,
कहां बहके फिरते हो तुम,
माबूद नहीं कोई उसके अलावा।

सच्चा है ख़ुदा का वादा,
दुनिया की जिंदगी है धोखा,
मुमकिन है धोखा दे शैतान,
खाना ना शैतान से धोखा।

भला दिखाये जायें जिसको,
सजा कर उसके आमाल बुरे,
या हो सकता वो भला आदमी,
उम्दा जो उनको लगे समझने?

ख़ुदा ही सबको रोजी देता,
पानी पर कश्ती को चलाता,
दिन को रात, रात को दिन,
वो ही सूरज-चांद चलाता।

मुकर्रर किया हर चीज का व. त,
बादशाह वो, सबका परवरदिगार,
पुकारते उसके सिवाय जिन्हें तुम,
नहीं तनिक भी उनको अधिकार।

अगर पुकारो वो सुन ना सकेंगे,
क़बूल कुछ वो कर ना सकेंगे,
करेंगे तुम्हारे शिर्क से इंकार,
ख़बर तुम्हें वो दे ना सकेंगे।

हैं सब लोग ख़ुदा के मोहताज,
वो बे-परवा, तारीफ़ के क़ाबिल,
चाहे तो कर दे नाबूद तुम्हें,
या कर दे मख़लूक नयी ग़ालिब।

सब अपना ही बोझ उठायेंगे,
ना कोई होगा मददगार,
कोई कुछ नहीं कर पाएगा,
चाहे हो वो तुम्हारा रिश्तेदार।

ऐ पैगम्बर, उन्हीं लोगों को,
नसीहत तुम दे सकते हो,
बिन-देखे ख़ुदा से डरते,
नमाज़ एहतमाम से पढ़ते जो।

होते नहीं बराबर दोनों,
अंधा और जिसको आंखें हों,
सुना नहीं सकते तुम उनको,
जीते जी ही जो मुर्दे हों।

रखते वो ही ख़ौफ़ ख़ुदा का,
होते हैं जो इल्म वाले,
मिलेगी निजात हमेशा की उन्हें,
होते जो नेक चलन वाले।

भेजी किताब बर-ह़क़ ये तुम्हें,
पहली किताबों की करती तस्दीक,
ठहराया किताब का वारिस उनको,
चुना जिन्हें ख़ुदा के नजदीक।

कुछ करते जुल्म ख़ुद अपने पर,
दोज़ख़ की आग में जलते रहते,
कुछ निकल जाते नेकी में आगे,
पाते वो जन्नत, ख़ुश उसमें रहते।

किया कुफ़्र अब भुगतो उसको,
आज मददगार कोई होगा नहीं,
करते थे नफ़रत नबियों से,
भुगतोगे ख़ुद, कोई और नहीं।

पाते सज़ा जब ना-शुक्रे,
कहते अब नेक आमाल करेंगे,
उम्र बितायी थी तुमने,
तब नबियों को झुठलाने में।

36. सूर : यासीन

यासीन, क़सम है क़ुरआन की,
भरा हुआ जो हि मत से,
ऐ मुहम्मद, तुम हो पैगम्बर,
शक नहीं कोई इस बात में।

जैसे किया पहले पैदा उसने,
बेशक करेगा मुर्दा को ज़िंदा,
रोशन किताब में लिख रखा,
हर शख़्स का उसने लेखा-जोखा।

ग़ालिब, मेहरबान ने किया नाज़िल,
तंबीह तुम लोगों की कर दो,
ना लाएंगे ईमान वो लेकिन,
ग़फ़लत में पड़े हुए हैं जो।

कहो गांव वालों का किस्सा,
दो नबियों को ख़ुदा ने भेजा,
झुठलाए गए जब वो दोनों,
ख़ुदा ने तीसरा पैगम्बर भेजा।

पड़ा हुआ है जिन पर पर्दा,
नज़र नहीं कुछ उनको आता,
करो, ना करो नसीहत उनको,
असर नहीं कुछ उन पर होता।

वो बोले हम जैसे हो तुम,
नाज़िल ना हुआ कुछ झूठ बोलते,
ना मानोगे तो संगसार करेंगे,
ना ही मुबारक हम तुम्हें समझते।

तभी दौड़ता आया एक शख़्स,
बोला मानो बात नबियों की,
नहीं चाहते कुछ बदले में,
राह दिखाते तुम को सीधी।

जिस व. त फूंका जाएगा सूर,
दौड़ेंगे कब्रों से निकल कर,
होगी आवाज एक जोर की,
होंगे खड़े सामने आ-आकर।

सुनी ना उसकी गांव वालों ने,
किया नबियों को इंकार,
नाज़िल हुआ अ़ज़ाब ख़ुदा का,
बुझा गयी उनको चिंघाड़।

ना कुछ जुल्म ख़ुदा करेगा,
करेगा सबके साथ इंसाफ़,
नेक लोग जन्नत में होंगे,
गुनाहगारों का वो करेगा हिसाब।

उसकी निशानी सूखी जमीं में,
हरा-भरा कर फसल उगाता,
दिन और रात में भी निशानी,
जिनसे जीवन का चक्र चलाता।

कहा था ऐ आदम की औलाद,
दुश्मन है शैतान से बचना,
माने ना तुम, राह से भटके,
दोज़ख़ में अब पड़ेगा जलना।

बख़्शी रोजी ख़ुदा ने जो,
काफ़िर ना ख़र्चते औरों पर,
कहते, उनको भी दे देता,
करता जो रहमत वो उन पर।

नसीहत और हिम्मत से भरा,
नेकों को हिदायत करता क़ुरआन,
सब कुछ बख़्शा ख़ुदा ने लेकिन,
शुक्र उसका नहीं करता इंसान।

और कहते, अगर तुम हो सच्चे,
तो होगा कब वह वादा पूरा,
हैं इन्तिजार में ये अ़ज़ाब के,
जब चाहे ख़ुदा तब आ पकड़ेगा।

किये जिसने जमीं-आसमां पैदा,
या पैदा फिर नहीं कर सकता,
करता जब वह जिसका इरादा,
हो जाती, जब कहता ''हो जा''।

37. सूर : साफ़्फ़ात

सफ़ बांधते पैर जमा कर,
डांट लगाते जो झिड़क कर,
खाता क़सम ख़ुदा उनकी,
पढ़ते क़ुरआन गौर कर कर।

कि माबूद तुम्हारा है बस एक,
मालिक है जो क़ायनात का,
सितारों से सजाया आसमान को,
दूर उन्हें शैतान से रखा।

दी जाती जब उनको नसीहत,
क़बूल नहीं करते हैं लोग,
मज़ाक उड़ाते निशानी देखकर,
कहते खुला जादू उसको लोग।

मर कर मिट्टी हो जाने पर,
फिर या ज़िंदा होंगे लोग,
यकीं नहीं जिनको इस पर,
कहो, जलील होंगे वो लोग।

होगी आवाज एक जोर की,
रह जाएंगे उस व. त ये देखते,
बदले का दिन तब जान जाएंगे,
रहे ये जिसको झूठ समझते।

हाल ये था गुमराहों का,
घमंड करते थे वो लोग,
कहते, दीवाने के कहने से,
कैसे माबूद छोड़ दें लोग?

लेकिन हक़ लाए हैं पैगम्बर,
पहले नबियों की करते तस्दीक,
करनी का फल तुम्हें मिलेगा,
निश्चित पाओगे तुम तकलीफ़।

हैं जो ख़ुदा के बन्दे खास,
सुख पाएंगे जन्नत में वो,
और झांक कर जब देखेंगे,
पाएंगे दोज़ख़ में गुमराहों को।

और नूह ने जब हमें पुकारा,
करी दुआ क़बूल उनकी,
घरवालों के सहित नूह को,
बड़ी मुसीबत से निज़ात मिली।

उनकी औलाद को ऐसा किया,
रह गए बस वो ही बाकी,
सारे जहां का सलाम नूह पर,
दुनियां वालों में नेक-नामी।

इब्राहीम ने करी नूह की पैरवी,
बुत परस्त थी पर उनकी कौम,
बोले इब्राहीम एक ख़ुदा ही सच्चा,
पर उन्हें जलाने में लगी कौम।

मददगार था उनका ख़ुदा,
जला ना पायी उनको कौम,
चली चाल ख़ुदा ने ऐसी,
बरबाद हो गयी ख़ुद ही कौम।

मांगी इब्राहीम ने बख़्शीश,
नेक औलाद मिली उनको,
बेटा हुआ जब थोड़ा बड़ा,
सपना एक दिखा उनको।

कहा उन्होंने बेटे को,
सपने में तुझे कुर्बान किया,
कहा बेटे ने पिता से अपने,
करो पूरा जो हु म मिला।

माना हु म ख़ुदा का दोनों ने,
लिटा दिया बेटा माथे के बल,
बंद कर फिर आंखें पिता ने,
किया क़ुर्बान करने का प्रयत्न।

इब्राहीम को तब हमने पुकारा,
कर दिखाया तुमने सच सपना,
थी तुम्हारी यह खुली आज़माइश,
दिया उनको उसका बड़ा बदला।

बेशक वो थे बन्दे मोमिन,
बख़्शे हमने उनको इसहाक,
की बरकतें उन पर नाज़िल,
नबी और नेक हुए इसहाक।

मूसा और हारून पे हमने,
एहसान किये, निजात दिलवायी,
बख़्शी उन्हें हमने साफ किताबें,
कौम को सीधी राह दिखलायी।

इल्यास भी थे एक पैगम्बर,
कौम ने उनको भी झुठलाया,
निजात दिलायी लूत को हमने,
जालिमों का कर दिया सफ़ाया।

उजड़ी पड़ी हैं वो बस्तियां,
गुजरते तुम उनके पास से,
रात और दिन देखते रहते,
लो सबक कुछ तुम उनसे।

और यूनुस ख़ुदा के पैगम्बर,
पहुंचे भाग कर कश्ती में,
निगल गयी उनको एक मछली,
पहुंचे वो उसके पेट में।

करी बयान ख़ुदा की पाकी,
रहमते ख़ुदा हुई उन पे,
निकाल बाहर मछली से उन्हें,
डाला एक खुले मैदान में।

रहे बीमार जब तक यूनुस,
कद्दू का उन पर पेड़ लगाया,
स्वस्थ हो गए जब यूनुस,
नबी ख़ुदा ने उन्हें बनाया।

कहते जो ख़ुदा रखता औलाद,
बेशक लोग वो हैं झूठे,
ना दलील कोई उनके पास,
ना किताब में लिखा उनके।

ख़ुदा पाक हर नापाकी से,
नहीं किसी से उसका रिश्ता,
ख़ालिस बन्दे जो ख़ुदा के,
कोई उन्हें बहला नहीं सकता।

हर फ़रिश्ते का है मुकाम मुकर्रर,
और सफ बांधे रहते हैं वो,
करते रहते ज़िक्र ख़ुदा का,
अपनी हद में रहते हैं वो।

कहा करते थे जो लोग,
काश, होती नसीहत की किताब,
अब लेकिन करते वो कुफ़्र,
जल्दी करते पाने को अ़जाब।

बहुत बुरा वह दिन होगा,
जिस दिन अ़जाब आ उतरेगा,
सुनाया गया डर जिनको,
अचानक ही उनको आ पकड़ेगा।

यह जो कुछ करते बयान,
पाक है उन सबसे ख़ुदा,
सलाम उसके नबियों को,
तारीफ़ का मालिक है ख़ुदा।

38. सूर : स़ाद

स्वाद् क़सम है क़ुरआन की,
है जो नसीहत देने वाला,
घमंड और विरोध जो करते,
कहता उन्हें कुफ़्र करने वाला।

ताज्जुब करते हैं कुछ लोग,
कि नबी हैं उनमें से एक,
कुछ कहते इतने माबूदों का,
माबूद बना दिया इसने एक।

कुछ कहते यह जादूगर झूठा,
बनायी हुई है इसकी बात,
करते शक नबी पर वो,
मानते उतरी नहीं कोई किताब।

शक करते जो ये लोग,
उतरा नहीं उन पर अभी अ़जाब,
हारा हुआ लश्कर है ये,
औरों की तरह होंगे बरबाद।

याद करो दाऊद को तुम,
पहाड़ मानते थे उनका फ़रमान,
ज़िक्रे ख़ुदा करते थे वो,
उनके साथ सुबह और शाम।

कहा उन्हें बादशाह बना कर,
करो फ़ैसले इंसाफ़ से तुम,
पैरवी करो ना ख़्वाहिश की,
राह भटकना कभी ना तुम।

अता किए सुलेमान दाऊद को,
बहुत खूब बन्दे थे वो,
करी हवा उनके फ़रमान में,
देवों को हु म करते थे वो।

याद करो हमारे बन्दे अय्यूब को,
पुकारा रब को दूर करो तकलीफ़,
कहा हमने मारो लात जमीं पर,
फूटा चश्मा, हुई हरी सूखी ज़मीन।

और याद करो इब्राहीम को,
इस्हाक और याकूब को भी,
इस्माईल, अलयसअ् और जुलि फ़ल,
नेक बन्दे थे ये लोग सभी।

कहो, मैं बस हिदायत करने वाला,
माबूद नहीं कोई ख़ुदा के सिवा,
जमीं-आसमां सब मख़लूक का मालिक,
ग़ालिब है वो और बख़्शने वाला।

बनाया इंसा को जब मिट्टी से,
कहा ख़ुदा ने करो सज्दा,
शैतान ना माना, अकड़ गया,
दण्ड मिला उसे लानत का।

बोला मैं उन्हें बहकाता रहूंगा,
जो ना तेरे ख़ालिस बन्दे,
कहा ख़ुदा ने भर दूंगा,
साथ तेरे सब दोज़ख़ में।

ऐ नबी कह दो लोगों से,
बदला नहीं मैं तुमसे मांगता,
नसीहत है क़ुरआन दुनिया के लिये,
चल जाएगा तुमको पता।

39. सूर : ज़ुमर

उतरी किताब ख़ुदा-ए-ग़ालिब से,
ख़ालिस इबादत करो ख़ुदा की,
जो पूजते हैं किसी और को,
हिदायत नहीं मिलती उनको कभी।

पैदा किया उसी ने तुमको,
और जो कुछ है दुनिया में,
वो ही तुम्हारा परवरदिगार है,
बादशाही उसी की दुनिया में।

ख़ुदा ही-अकेला है माबूद,
है सबसे वो बे-परवाह,
पसंद ना करता ना-शुक्री,
ना-शुक्रों को देता सज़ा।

होता जब तकलीफ़ में इंसा,
करता पुकार ख़ुदा की वो,
मिल जाती जब उसको नेमत,
भुला देता है ख़ुदा को वो।

कहो, उठा लो थोड़ा सा फ़ायदा,
फिर होंगे वो दोज़ख़ियों में,
कब हो सकते वो उनसे बेहतर,
करते जो इबादत रातों में?

करते जो दुनिया में नेकी,
होगी भलाई उनके लिए,
और जो करने वाले सब्र,
होगा सवाब उनके लिए।

कह दो, इर्शाद हुआ मुझसे,
करूं इबादत, ख़ुदा की बन्दगी,
अव्वल सबसे बनूं मुसलमां,
डरता करने से अवज्ञा उसकी।

बचते बुतों की पूजा से,
करते रुख ख़ुदा की ओर,
दे दो उनको ये ख़ुशख़बरी,
पाएंगे जन्नत ये ही लोग।

करी बयान मिसालें क़ुरआन में,
ताकि लोग नसीहत पाएं,
नाज़िल किया शुद्ध अरबी में,
ख़ौफ़ ख़ुदा का ताकि लाएं।

मरना है सबको एक दिन,
तुमको भी और उनको भी,
जाओगे सब उसके सामने,
करेगा फ़ैसला झगड़ों का सभी।

कह दो, मुझे ख़ुदा काफ़ी,
उसका ही भरोसा है मुझको,
मानो, न मानो मर्जी तुम्हारी,
हु म हिदायत का बस मुझको।

कर लेता ख़ुदा रूहें क ज,
मरने पर और सोते व. त,
रोकता रूह मरने वालों की,
बाकी रूहें, पातीं एक व. त।

गर जालिम रखते हों ख़जाना,
काम ना कुछ उनको देगा,
रहे उड़ाते हंसी अ़जाब की,
एक दिन उनको आ घेरेगा।

बख़्श देता वो गुनाह उनके,
करते जो उसकी फ़रमाबरदारी,
लेकिन जो आयतें झुठलाते,
धरी रह जाएगी शेख़ी उनकी।

बोला झूठ जिन्होंने ख़ुदा पर,
होंगे उनके मुंह काले,
निजात मिलेगी नेक लोगों को,
होंगे ख़ुश वो ख़ुदा वाले।

कह दो, ख़ुदा का हु म तुम्हें,
जो शिर्क करेगा, होगा बरबाद,
करो इबादत एक उसी की,
अदा उसी को शुक्र हजार।

चमक उठेगी क़ियामत के दिन,
यह जमीन नूर से उसके,
किताब आमाल की खोली जाएगी,
इंसाफ़ से वो करेगा फ़ैसले।

जालिमों को मिलेगा दोज़ख़,
जन्नत मिलेगी नेकों को,
अपने-अपने आमाल का बदला,
देगा वो सब लोगों को।

40. सूर : मुअ्मिन्

उतरी किताब यह उसकी तरफ़ से,
जो ख़ुदा-ए-गालिब और दाता,
गुनाह बख़्शता, तौबा क़बूलता,
सज़ा भी देता, वो करम वाला।

चाहे कोई माने कितना भी बुरा,
इबादत उसी की, उसी को पुकारो,
आमालों का बदला सबको मिलेगा,
सिफ़ारिश ना कोई, किसी को पुकारो।

जो काफ़िर हैं, आयतों पर झगड़ते,
धोखा ना दे, उनका चलना-फिरना,
पहले भी झगड़ती रहीं उम्मतें,
बचे ना वो, ना उनका ठिकाना।

मालूम नहीं या उन लोगों को,
अंजाम लोगों का, उनसे पहले,
करते थे गुनाह, वो पकड़े गए,
बदबाद हो गई, सब वो कौमें।

उठाए हुए जो लोग अर्श को,
यादे ख़ुदा करते तारीफ़ के साथ,
बख़्शीश मांगते मोमिनों के लिए,
तेरी रहमत हो हमेशा उनके साथ।

फ़िऔंन की कौम भी ऐसी थी,
मूसा को था जिसने झुठलाया,
करता था गुनाह, जुल्म लोगों पर,
मूसा का कहा, उसको ना भाया।

कहा जाएगा जिन्होंने कुफ़्र किया,
नहीं मानते थे ईमान की बात,
कई ज्यादा बेजार होता था ख़ुदा,
जितने हो तुम ख़ुद से बेजार।

एक मोमिन फ़िऔंन की कौम का,
रखता था छिपाये, जो अपना ईमान,
बोला आ जाए ख़ुदा का अ़जाब,
तो बचा ना सकेगा कोई इंसान।

करेंगे गुनाहों का वो इकरार,
पुकारा ख़ुदा को ना तन्हा,
साथ उसके शामिल किए शरीक,
मिलेगा अब ना कोई रस्ता।

समझाया अपनी कौम को उसने,
कौम ना मानी उसकी बात,
बचा लिया मूसा को ख़ुदा ने,
फ़िऔंन की कौम को मिला अ़जाब।

अपने नबी और ईमान वालों की,
करता यहां और वहां भी मदद,
बुरा घर है जालिमों के लिए,
और उन पर ख़ुदा की है लानत।

बेशक ख़ुदा का सच्चा है वादा,
तो सब्र करो और तौबा करो,
सुबह और शाम परवरदिगार को,
तारीफ़ के साथ तुम याद करो।

बिना दलील के जो लोग,
झुठलाते हैं ख़ुदा की आयतें
दिल में बड़ाई रखते वो,
सफल नहीं पर उसमें होते।

करेगा फ़र्क क़ियामत के दिन,
नेकों में और बदकारों में,
करता क़बूल दुआ जो करते,
दोज़ख़ जो रहते चूर घमंड में।

हर चीज को जो पैदा करता,
तुमको भी किया जिसने पैदा,
बस वो ही इबादत के लायक,
यों फिरते फिर तुम यहां-वहां।

आएगा साथ ना कोई शरीक,
जब जाएंगे दोज़ख़ में वो,
लौट जाएंगे सभी ख़ुदा को,
इंसाफ़ मिलेगा वहां उनको।

किया बयान कुछ नबियों का,
और कुछ तुमसे कहे नहीं,
इंसाफ़ किया लोगों के साथ,
बातिल को कुछ मिला नहीं,

या- या निशानियां झुठलाओगे,
कण-कण में उसकी क़ुदरत,
अ़जाब देख जो लाते ईमान,
काम ना आता, वो उस व. त।

41. सूर : हामीम अस्-सज्दा

क़ुरआने अरबी, समझ वालों का,
ख़ुशख़बरी सुनाता, ख़ौफ़ बताता,
पर सुनते नहीं अ सर लोग,
दिलों पे उनके पड़ा परदा।

कहो या करते उससे इंकार,
पैदा जमीं की दो दिन में,
फिर चार दिनों में पहाड़ बनाए,
और बख़्शी रोजी तुम्हें जमीं में।

फिर रुख़ किया गगन की ओर,
सात आसमां बना दिए उसने,
सितारों से सजाया दुनिया का आसमां,
और हु म दिया सबको उसने।

फिर अगर ये मुंह फेर लें,
याद दिला दो उनको अ़जाब,
कौमें आद और समूद की,
हो गयीं कैसे वो बरबाद।

करते ख़्याल कि ख़बर नहीं,
ख़ुदा को उनके आमालों की,
आंख, कान और बाकी अंग,
देंगे ख़िलाफ़ तब उनके गवाही।

कहते काफ़िर ना सुनो क़ुरआन,
गर पढ़े कोई तो शोर करो,
देंगे सज़ा हम उन्हें गुनाह की,
ये वादा ख़ुदा का यकीन करो।

बेहतर कौन भला उससे,
जो राह-दिखाए और नेकी करे,
दो उसको भी तुम अच्छा सिला,
बात जो तुमसे सख़्त करे।

बदल जाएंगे दिल उनके,
दोस्त तुम्हारे वो बन जाएंगे,
होती किस्मत बुलंद उनकी,
बर्दाश्त उसे जो कर जाएंगे।

गर कोई वस्वसा शैतान से हो,
मांग लो तुम पनाह ख़ुदा की,
ना सूरज, ना चांद को सज्दा,
सर झूके बस उसके आगे ही।

करते आयतों में जो कजराही,
बन्दे वो ख़ुदा से छिपे नहीं,
है किताब यह उतारी ख़ुदा की,
झूठ का इसमें दखल नहीं।

क़ुरआन जो होता और भाषा में,
कहते वो यों नहीं अरबी में,
क़ुरआन गैर-अरबी, मुख़ातब अरबी,
चैन ना आता कैसे भी उन्हें।

बड़ा ही ना-शुक्रा है इंसान,
नहीं मानता उसका एहसान,
जब मिल जाती राहत उसको,
भूल जाता है उसको इंसान।

42. सूर : शूरा

भेजी जैसे पहले लोगों को,
भेजता तुम्हारी तरफ़ वो आयतें,
तारीफ़ ख़ुदा की करते फ़रिश्ते,
मांगते माफ़ी लोगों के वास्ते।

भेजा तुम्हें यह अरबी क़ुरआन,
दिखलाओ रास्ता तुम लोगों को,
म का में रहने वालों को,
और आस-पास रहते हों जो।

ना कोई यार, ना मददगार,
जालिम का कोई दोस्त नहीं,
रखता सब पर वो क़ुदरत,
कारसाज़ कोई उसके सिवा नहीं।

आसमान और जमीन की कुंजियां,
है हाथ में ख़ुदा ही के,
जिसे चाहता उसे रोजी फैलाता,
तंग कर देता चाहे जिसे।

चुना तुम्हारे लिए ख़ुदा ने,
वही रास्ता दीन का,
नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा को,
जिसका उसने हु म दिया।

क़ायम रखना तुम दीन को,
और डालना ना फूट इसमें,
ख़ुदा चाहता जिसे उसे चुन लेता,
और ले आता उसे राह पे।

और ये लोग जो हुए अलग,
इल्म के बाद, अपनी जिद से,
गर ठहर चुकी होती ना बात,
कर देता फ़ैसला ख़ुदा उनमें।

उसी तरफ़ बुलाते रहना,
रहना दीन पे क़ायम तुम,
ख़्वाहिशों की उनकी, ऐ मुहम्मद,
कभी पैरवी करना ना तुम।

कह दो किताब जो हुई नाज़िल,
रखता हूँ मैं उस पर ईमान,
और हु म हुआ है मुझको,
कि मैं करुं तुममें इंसाफ़।

हमारे आमाल का बदला हमको,
तुमको बदला तुम्हारे आमाल का,
यों करें हम बहस या तकरार,
परवरदिगार वो ही हम सबका।

सच्चाई के संग नाज़िल की,
यह किताब परवरदिगार ने,
तराज़ू अद्ल और इंसाफ़ का,
दीने हक़, दिया ख़ुदा ने।

जो चाहते आख़िरत में भलाई,
मिलेगी उनको बेहतर भलाई,
और जिन्हें दुनिया की ख़्वाहिश,
उनको बस दुनिया की भलाई।

या उनके हैं वो शरीक,
ऐसा दीन जिन्होंने दिया उन्हें,
ख़ुदा ने हु म दिया ना जिसका,
देगा वो सख़्त अ़ज़ाब उन्हें।

देखोगे तुम कि जालिम लोग,
डरते होंगे अपने आमालों से,
बच ना पाएंगे वो कैसे भी,
आकर रहेगा अ़ज़ाब उन पे।

जो लाए ईमान, नेकी करते,
मिलेंगे उन्हें बहिश्त के बाग,
जो चाहेंगे वो मिलेगा उनको,
ख़ुश होंगे वो, होंगे आबाद।

कह दो, नहीं मैं बदला मांगता,
रिश्तेदारी की मुह बत तो निभाओ,
बढ़ाएगा सवाब जो नेकी करेंगे,
कद्रदान वो, सीधी राह तो आओ।

कहते या ये लोग नबी ने,
बांध लिया है ख़ुदा पर झूठ,
चाहे ख़ुदा तो तुम्हें रोक ले,
हक़ के आगे चलती ना झूठ।

जानता वो दिलों की बातें,
तौबा क़बूल करता बन्दों की,
बख़्शने वाला गुनाहों को वो,
रखता ख़बर सब करतूतों की।

कर देता गर रोजी में फैलाव,
बंदे करने लग जाते फ़साद,
जिस कदर चाहता नाज़िल करता,
इसलिये वह अन्दाजे के साथ।

वो ही तो है जो निराशा को,
करता दूर, झोली भर देता,
जमीं-आसमां में उसकी क़ुदरत,
जैसा चाहे वैसा कर देता।

वो मेहरबान, रहम वाला,
कर देगा बहुत गुनाह माफ़,
जो मुसीबत होती तुम पर,
तुम्हारे आमालों का है जवाब।

परहेजगार और रखते भरोसा,
गुस्सा हों, पर करते माफ़,
नमाज़ पढ़ते और हु म मानते,
बेहतर मिलेगा उनको लाभ।

कर देते बुराई जो दरगुजर,
उनका बदला ख़ुदा के जिम्मे,
सब्र करें, माफ़ी कर दें,
काम हैं ये तो हिम्मत के।

कह दो तुम ये गुमराहों से,
व. त रहते सीधी राह आ जाओ,
ना मिलेगा मौका फिर तुमको,
तुम्हारी मर्जी, मानो, मत मानो।

सारी दुनिया का है वो बादशाह,
जैसा चाहे वह वैसा ही करता,
मुमकिन नहीं करना बन्दों से बात,
पर भेज देता वो कोई फ़रिश्ता।

ऐसे ही हमने अपने हु म से,
भेजा रूहुल क़ुद्स के द्वारा क़ुरआन,
जानते नहीं थे इसके पहले,
तुम किताब को, ना ही ईमान।

नूर बनाया हमने उसको,
लोगों को राह दिखाने को,
हमने चुना तुम्हें, ऐ मुहम्मद,
लोगों को हिदायत करने को।

43. सूर : ज़ुख़्रुफ़

बनाया हमने अरबी क़ुरआन,
ताकि तुम इसको समझ सको,
या बाज रहेंगे नसीहत से,
योंकि तुम हद से निकले हो?

कई पैगम्बर पहले भी भेजे,
लोगों ने उड़ाया उनका मज़ाक,
सुनते बात ना नाबियों की,
करी कौमें वो हमने हलाक।

या ख़ुदा ने चुन ली बेटियां,
तुम्हें दे दिये चुन कर बेटे,
पर ख़बर जब बेटी की मिलती,
यों मुंह उनके काले पड़ जाते?

कहते जो अगर ख़ुदा चाहता,
तो हम उनको नहीं पूजते,
नहीं इल्म उन्हें कुछ इसका,
वो तो बस अटकल ही दौड़ाते।

जिन्हें पूजते थे बाप-दादा,
कहते उन्हें ही वो पूजेंगे,
चाहे सीधी राह दिखा दो,
नहीं बात वो कुछ मानेंगे।

जब उनके पास आया हक़,
कहने लगे जादू है यह तो,
किसी बड़े पर यों ना उतरा,
या ये बांटते उसकी रहमत को?

जो ख़ुदा से मुंह फेरता,
बनता उसका साथी शैतान,
समझते वो सीधे रस्ते पर,
पर उल्टी राह चलाता शैतान।

सुना नहीं सकते बहरे को तुम,
अंधे को राह दिखा नहीं सकते,
ना राह मिलेगी, जो गुमराही में,
राह पे उसको ला नहीं सकते।

लेकर रहेंगे हम बदला,
तुम जीते हो या उसके बाद,
काबू रखते हम उन पर,
किया जो वादा, मिलेगा अ़ज़ाब।

किया गया जो तुम्हें फ़रमान,
बेशक सीधी राह है वो,
पकड़े रहो नसीहत जो मिली,
तुम्हें और तुम्हारी कौम को।

भेजा था मूसा को हमने,
देकर अपनी निशानियां,
अ़ज़ाब में पकड़े गए फ़िऔंनी,
ना जब मानी निशानियां।

कहने लगे मूसा से तब,
दुआ करो परवरदिगार से,
बेशक हिदायत पाए हुए होंगे,
जो बच जाएं अ़ज़ाब से।

दूर किया जब उनसे अ़ज़ाब,
लगे तोड़ने अहद वो लोग,
ख़फ़ा किया जब हमें उन्होंने,
डुबा दिये हमने वो लोग।

चिल्ला उठे तुम्हारी कौम के लोग,
ईसा का हाल जब कहा गया,
वह तो हमारे ऐसे बन्दे थे,
जिन पर हमने फ़ज़ल किया।

या ख्याल करते ये लोग,
बात उनकी सुन नहीं सकते,
सब सुनते हम, छिपी या ज़ाहिर,
फ़रिश्ते हमारे सब लिखते रहते।

कह दो ख़ुदा जो रखता औलाद,
तो मैं पहला करने वाला इबादत,
पाक है पर वो सबका मालिक,
खेलें वों, करते रहें बक-बक।

पुकारते जिन्हें ये ख़ुदा के सिवा,
सिफ़ारिश का नहीं हक़ उनको,
इल्म और यकीन के साथ गवाही,
हक़ की दें, यह मंजूर उसको।

44. सूर : दुख़ान

मुबारक रात में नाज़िल फ़रमाया,
किए उसमें ही हि मत के काम,
भेजे नबी अपने ही हु म से,
यह उसकी रहमत का काम।

है सबका वो ही मालिक,
लेकिन यकीन ना लाते लोग,
इन्तिजार करते उस दिन का,
पकड़े जाएंगे जब वो लोग।

कहेंगे अब हम लाए ईमान,
पर तब या उसका होगा,
कहा दीवाना जब नबियों को,
या होगी ना उसकी सज़ा?

मिली फ़िऔंनियों को भी सज़ा,
मूसा को जब उन्होंने झुठलाया,
बनी इस्राईल को किया पार,
फ़िऔंनियों को दरिया में डुबाया।

कहते हैं जो लोग हमें,
मरना है, फिर उठना नहीं,
या ख़्याल करते वो लोग,
हुए हलाक या पहले नहीं?

ना बनाया जमीं-आसमां खेल में,
तदबीर से किया उनको पैदा,
काम ना कोई आएगा उस दिन,
क़ियामत को जब होगा फ़ैसला।

थूहर का पेड़, गुनाहगार का खाना,
खौलेगा पिघंले तांबे सा पेट में,
मज़ा चखेंगे तब दोज़ख़ का वो,
करते थे शक जिस दोज़ख़ में।

बागों और चश्मों में होंगे,
परहेजगार और नेक लोग,
रहेंगे बहिश्त में ही हमेशा,
सब सुख पाएंगे ये लोग।

45. सूर : जासिया

निशानियां अ ल वालों के लिए,
ज़ाहिर हैं जीने और मरने में,
दुनिया के हर प्राणी में,
दिन-रात के आने जाने में।

बनाता जो ख़्वाहिशों के माबूद,
वो तो हो रहा है गुमराह,
आंखों पर परदा डाल दिया,
बस चाहे ख़ुदा तो मिले राह।

अफ़सोस हर झुठे गुनाहगार पर,
सुनायी जाती जब उसे आयतें,
सुन लेता फिर हंसी उड़ाता,
अ़जाब ख़ुदा का उसके वास्ते।

कहते जो यहीं जीते-मरते,
दुनिया की है उनकी जिंदगी,
अटकल से लेते वो काम,
उनको है कुछ इल्म नहीं।

किया तुम्हारे क़ाबू में दरिया,
शुक्र करो तुम रोजी पाते,
जमीं-आसमां में जो कुछ हैं,
लगा दिया सब काम तुम्हारे।

सुनायी जाती जब उन्हें आयतें,
करते हैं हुज्जत वो लोग,
हो सच्चे तो बाप-दादा को,
कर लाओ ज़िंदा तुम लोग।

किया क़ायम तुम्हें हमने,
दीन के खुले रस्ते पर,
चलना ना ख़्वाहिशों के पीछे,
चले चलो उसी रस्ते पर।

कह दो, ख़ुदा ही जान बख़्शता,
देता वही है तुमको मौत,
जमा करेगा क़ियामत के दिन,
नहीं जानते पर तुम लोग।

होते जालिम एक-दूजे के दोस्त,
दोस्त परहेज़गारों का होता ख़ुदा,
लोग जो काम बुरे करते,
होता है उनका अंजाम बुरा।

जिस दिन क़ियामत होगी बरपा,
अहले बातिल घाटे में पड़ेंगे,
क़बूल ना तब होगी तौबा,
जब दोज़ख़ में वो डाले जाएंगे।

46. सूर : अह्क़ाफ़

हमने जमीं-आसमानों को,
और जो है उन दोनों में,
किया पैदा हि मत के साथ,
एक मुकर्रर समय के लिए।

हु म दिया हमने इंसा को,
करो भलाई मां-बाप के साथ,
कष्ट बड़ा सह कर वो पालते,
दुआ करते बने नेक औलाद।

फेर लेते हैं मुंह काफ़िर,
जो नसीहत की जाती उससे,
कहो भला या देखा तुमने,
ख़ुदा के सिवा पुकारते जिन्हें?

यही लोग हैं हम जिनके,
क़बूल करेंगे नेक आमाल,
बख़्श देंगे गुनाह उनके,
जन्नत का मिलेगा उनको लाभ।

दिखाओ जरा मुझे भी तो,
पैदा किया या यहां उन्होंने,
या उनकी शिर्कत आसमान में,
या लिखा या कहीं किसी ने?

जो करते मां-बाप से तल्ख़ी,
सच्ची बात ना उनकी सुनते,
यही लोग हैं जो आख़िर में,
नुकसान उठाने वाले जहन्नम के।

कौन बढ़कर उससे गुमराह,
पुकारता उसे जो ना देता जवाब,
ना जिसे ख़बर किसी पुकार की,
और दुश्मन हो जब आए अ़जाब।

गए हूद जब अपनी कौम को,
कहा इबादत करो ख़ुदा की,
बोले वो यों हमको डराते,
सच कर दिखाओ बात अ़जाब की।

या ये कहते तुमने ही बनाया,
कह दो, ख़ुदा ही गवाह काफ़ी,
जो होता है हु म मुझको,
मैं बस करता उसकी पैरवी।

बोले हूद यह इल्म ख़ुदा को,
वो ही जाने गैब की बात,
अ़जाब आया बन आंधी बादल,
कौमें आद को कर दिया बरबाद।

यह किताब अरबी जुबान में,
उससे पहले थी मूसा की किताब,
तस्दीक करती है यह उसकी,
सीधी राह दिखाती ये किताब।

कितनी बार हलाक की बस्तियां,
निशानियां अपनी करी ज़ाहिर,
यों ना फिर बचाने उनको,
माबूद उनके हुए हाज़िर?

कुछ जिन्नों ने सुना क़ुरआन,
औरों को आकर वो बोले,
सुनी हमने है एक किताब,
हुई नाज़िल जो बाद मूसा के।

इससे पहले जो उतरी किताब,
तस्दीक करती है यह उनकी,
क़बूल करो तुम इसकी बात,
राह दिखाती सीधी ये दीन की।

गर लाए ईमान, गुनाह बख़्शेगा,
इन्कारी को होगा नु सान,
खुली गुमराही में वो लोग,
सुनते नहीं जो यह फ़रमान।

जमीं-आसमां पैदा कर दिए,
लेकिन थकान ना हुई जिसको,
या उसको नहीं यह क़ुदरत,
कर दे मुर्दों को ज़िंदा वो?

जैसे सब्र करते रहे पैगम्बर,
वैसे ही तुम भी सब्र करो,
जिस दिन ये देखेंगे अ़जाब,
सोचेंगे घड़ी भर ज़िंदा थे वो।

47. सूर : मुहम्मद

जिन लोगों ने कुफ़्र किया,
रोका ख़ुदा की राह से,
भला हुआ ना कुछ उनका,
आमाल उनके सब बरबाद हुए।

नाज़िल हुई मुहम्मद पर जो,
मानते जो बर-हक़ है क़ुरआन,
गुनाह दूर हों, हालत संवरती,
नेकी करते, जो लाते ईमान।

झूठी पैरवी करते काफ़िर,
हक़ के पीछे चलते नेक,
गुनाहगार माबूदों को पूजते,
इबादत ख़ुदा की करते नेक।

काफ़िरों से जब भिड़ जाओ,
गरदनें तुम उनकी उड़ा दो,
और जो ज़िंदा पकड़े जाएं,
कैद उन्हें करके रख लो।

रख ना दें जब तक हथियार,
छोड़ो ना उनको तब तक तुम,
छोड़ दो फिर रखकर एहसान,
या माल उनसे कुछ ले लो तुम।

होते शहीद जो राहे ख़ुदा में,
आमाल उनके ना होते बरबाद,
यहां और वहां भी भलाई मिलेगी,
जन्नत में ख़ुदा उन्हें करेगा आबाद।

नेकी और ईमान वालों को,
दाखिल बहिश्त में ख़ुदा करेगा,
काफ़िर खाते हैवान हों जैसे,
दोज़ख़ ही बस उन्हें मिलेगा।

जालिमों की कितनी ही बस्तियां,
जो ताकत में बढ़कर थीं,
मददगार हुआ उनका ना कोई,
हलाक हमने वो कर दीं।

जो शख़्स ख़ुदा की रहमत से,
चल रहा हो सीधे रस्ते पे,
हो सकता कैसे उनकी तरह,
आमाल बुरे होते हैं जिनके?

खूबी यह है जन्नत की,
बहतीं उसमें हैं नहरें सभी,
पानी, दूध, शराब और शहद,
और मेवे भी मिलते सभी।

कुछ ऐसे जो सुनते सब कुछ,
पर बनते यों, कुछ सुना नहीं,
चलते अपनी ख़्वाहिश के पीछे,
दिल पर उनके मुहर लगी।

सूरः कोई यों नाज़िल नहीं होती,
कहते हैं कुछ मोमिन लोग,
लेकिन जिहाद का जब होता बयान,
विचलित हो जाते मरीज लोग।

गर रहना चाहते ख़ुदा से सच्चा,
अच्छा बहुत उनके लिए होता,
अजब नहीं गर हाकिम हो जाओ,
करो खराबी तोड़ो तुम रिश्ता।

लानत उन्हीं पर करी ख़ुदा ने,
कानों को बहरा, आंखों को अंधा,
या करते नहीं क़ुरआन पर गौर,
या उनके दिलों पर लगा ताला।

पीठ फेरते हिदायत के बाद,
और झांसे में शैतान के आते,
करते ना-ख़ुश ख़ुदा को ये,
आमाल उनके बरबाद हो जाते।

बीमार दिल या करते ख़्याल,
ज़ाहिर ना करेगा उनके कीनों को,
गर चाहता उन्हें सामने ला देता,
पर आजमाना चाहता वो लोगों को,

जिन्हें मिल गया सीधा रास्ता,
पर किया कुफ़्र उसके बाद,
बिगड़ेगा ना कुछ ख़ुदा का,
किया कराया उनका होगा बरबाद।

काफ़िर ना जाएंगे बख़्शे,
मत उनसे तम सुलह करो,
साथ तुम्हारे है परवरदिगार,
हिम्मत अपनी कम ना करो।

खेल तमाशा दुनिया की जिन्दगी,
राहे ख़ुदा ना बुख़्ल करो,
ख़ुदा बे-नियाज, तुम मुहताज,
मुंह उससे ना तुम फेरो।

48. सूर : फ़त्ह

ऐ मुहम्मद फ़तह दी तुमको,
बख़्श दें ताकि तुम्हारे गुनाह,
पूरी कर दें तुम पर नेमत,
और तुम को चलाएं सीधी राह।

मदद करे ख़ुदा तुम्हारी,
मोमिनों का दृढ़ करे ईमान,
गुनाह दूर कर दे उनके,
जन्नत में दे उन्हें स्थान।

मुनाफ़िक और मुश्रिक लोगों को,
सोचते बुरा जो ख़ुदा के लिए,
दे अ़जाब, और उन पर लानत,
दोज़ख तैयार है उनके लिए।

पैगम्बर बना भेजा, ऐ मुहम्मद,
ताकि लोगों तुम लाओ ईमान,
समझो बुज़ुर्ग उन्हें मदद करो,
करो तस्बीह सुबह और शाम।

करते बैअत जो लोग तुमसे,
बैअत ख़ुदा से वो करते,
रखे या तोड़ अहद जो अपना,
नफ़ा-नुकसान ख़ुद अपना करते।

जो रह गए पीछे, कहेंगे वो,
मजबूरी हमारी ने हमको रोका,
कहते कुछ अपनी जुबान से,
कुछ और मगर दिल में होता।

ख़ुदा जानता उनके दिल की,
सोचा, लौटोगे ना तुम लोग,
करते थे, ख़्याल बुरे-बुरे,
पड़े हलाकत में ये लोग।

जब चलोगे तुम लेने ग़नीमत,
कहेंगे ये भी साथ चलने को,
चाहते ख़ुदा का कौल बदलना,
कह दो, साथ चलें ना वो।

सोचेंगे तुम रखते हो हसद,
पर ना-समझे, ये हैं अहमक,
कह दो जल्द मिलेगा मौका,
जिसकी तुम रखते हो हसरत।

जल्द ही एक लड़ाकू कौम से,
मिलेगा तुम्हें लड़ने का मौका,
या तो वे इस्लाम ले आएंगे,
या जंग उनसे रहेगा चलता।

गर मानोगे तुम हु म ख़ुदा का,
देगा ख़ुदा तुम्हें अच्छा बदला,
फेरा मुंह पहले सा तुमने,
तो मिल के रहेगी तुम्हें सज़ा।

उसने ही तुम्हें फ़हत्याब किया,
सरहदे म का पर रोके रखा,
पहुंचे ना नु सान कहीं मोमिनों को,
इसलिए देर से फ़तह हुआ म का।

जब कर रहे थे बैअत मौमिन,
ख़ुश होकर ख़ुदा ने फ़तह बख़्शी,
जिसका किया ख़ुदा ने वादा,
उससे भी अधिक ग़नीमत बख़्शी।

करा ख़्वाब तुम्हारा ख़ुदा ने सच्चा,
मस्जिदे हराम गए सुकून के साथ,
ग़ालिब किया दीन तमान दीनों पर,
काफ़ी है ख़ुदा, नबी के साथ।

49. सूर : हुजुरात

बोलो ना जवाब में मोमिनों,
ख़ुदा और रसूल से पहले,
ऊंची करो ना आवाज अपनी,
बात नबी से करो अदब से।

बे-अ ले देते हैं आवाज,
तुमको हुजरों के बाहर से,
होता सब्र उनके लिए बेहतर,
बाहर निकल जब तुम आ जाते।

बद-किरदार गर ख़बर कोई लाए,
खूब तहक़ीक कर लिया करो,
होना ना पड़े कहीं तुम्हें शर्मिन्दा,
नादानी से तुम बचा करो।

पैगम्बर ख़ुदा के तुम्हारे बीच,
गर माने तुम्हारी सब बातें,
शायद मुश्किल में पड़ जाओ,
ख़ुदा ही जानता सब बातें।

गर मोमिन लड़ें आपस में,
सुलह करा दो उनमें तुम,
गर करे ज्यादती उनमें कोई,
लड़ों दूसरे की ओर से तुम।

जब मान ले वो हु में ख़ुदा,
बराबरी से सुलह करा दो,
पसन्द ख़ुदा को है इंसाफ़,
इंसाफ़ से निर्णय किया करो।

उड़ाए ना मज़ाक कोई किसी का,
मुमकिन है वो उससे बेहतर हो,
ना ऐब लगाओ, ना नाम बुरा,
गुनाह हैं ये, इनसे बचा करो।

तौबा ना करे वो जालिम हैं,
बचो गुमान करने से तुम,
ना कोई किसी की करे ग़ीबत,
रहो ख़ौफ़े ख़ुदा से डरते तुम।

किया पैदा एक जोड़े से तुम्हें,
बनायी तुम्हारी कौमें व कबीले,
तुम में जो ज्यादा परहेजगार,
ख़ुदा के नजदीक वो इज्जत वाले।

लाकर ईमान पड़े ना शक में,
लड़े लगा कर माल जान,
एहसान नहीं मुसलमां होने का,
लेकिन ख़ुदा का जो माने एहसान।

कहते देहाती हम ईमान ले आए,
सच में इस्लाम बस वो लाए,
सच्चे मोमिन तो हैं वो लोग,
ख़ुदा रसूल पर ईमान जो लाए।

50. सूर : क़ाफ़्

कहते हैं काफ़िर अजीब हैं ये,
हम में से एक हिदायत करता,
मर मिट्टी हो जाने पर,
दूर अ ल से फिर ज़िंदा होना।

करता इंसा जब कोई काम,
लिख देते हैं उसको फ़रिश्ते,
बेहोशी मौत की खोलती हक़ीक़त,
जिससे इंसा भागते फिरते।

लेकिन अजब वो उलझ गए,
समझा ह़क़ को झूठ उन्होंने,
या देखी नहीं ख़ुदा की क़ुदरत,
जमीं-आसमां ना देखे उन्होंने?

क़ियामत का दिन वो दिन है,
हर शख़्स हमारे सामने होगा,
देंगे फ़रिश्ते आमालों की गवाही,
दोज़ख़ में हर ना-शुक्रा होगा।

मेंह बरसाता, फसल उगाता,
करता ज़िंदा, मुर्दा जमीं को,
इसी तरह क़ियामत के दिन,
फिर पैदा करेगा वो तुमको?

कहेगा शैतान की ऐ परवरदिगार,
ना किया मैंने इसां को गुमराह,
उलझ रहा था यह ख़ुद ही,
ख़ुद ही भटका यह अपनी राह।

पैदा किया हम ही ने इंसा,
जानते हम उसके दिल की,
बहुत करीब हैं हम उसके,
रगे जान से भी ज्यादा उसकी।

मिलेगी जन्नत परहेजगारों को,
ख़ौफ़े ख़ुदा से जो रहे डरते,
बेहतर बदला मिलेगा उनको,
रुख़ ख़ुदा की तरफ़ जो करते।

बना दिया सब छह दिनों में,
जमीं-आसमां रच थके ना हम,
तो जो कुछ बकते हैं कुफ़्फ़ार,
सब्र करो बस थोड़ा सा तुम।

हम ही तो जिलाते और मारते,
पास हमारे फिर आना है तुम्हें,
फटेगी धरती झटपट निकलोगे,
यह जमा करना है आसान हमें।

भोर से पहले, सांझ के व. त,
तारीफ़ के साथ तस्बीह करो,
रात में और नमाज़ के बाद,
बयान ख़ुदा की पाकी करो।

कहते हैं जो कुछ ये लोग,
भली तरह मालूम है हमें,
जो डरते हों ख़ौफ़े ख़ुदा से,
उन्हीं को नसीहत, तुम्हारे जिम्मे।

51. सूर : जारियात

क़सम हवा की, धूल उड़ाती,
आंचल में अपने बादल लहराती,
मंद-मद चल काम बनाती,
सब चीजों को त सीम कराती।

खंगर बरसाने गुनाहगारों पर,
भेजे गए थे वो फ़रिश्ते,
बचा लिए सब मोमिन लोग,
और गुनाहगार सब ख़त्म किए।

कि वादा किया वो सच्चा है,
आएगा जरूर इंसाफ़ का दिन,
पड़े हो तुम किस झगड़े में,
आएगा अ़ज़ाब बदले के दिन।

निशानियां छिपी ऐसी कितनी,
कितनी ही कौमें हुई हलाक,
मानी बात ना नबियों की,
कौमें कर दीं वो बरबाद।

चखेंगे मज़ा जो शरारत करते,
जिसके लिए मचाते वो जल्दी,
बहिश्तों, चश्मों में ऐश करेंगे,
जो लाते ईमान, करते नेकी।

पैदा किए जिन्न और इंसान,
कि करें इबादत ख़ुदा की वो,
ना रोटी ना खाना चाहता,
रोटी और खाना देता है वो।

याद करो, इब्राहीम के मेहमां,
कहा सलाम एक-दूजे से उन्होंने,
होगा उन्हें एक दानिशमंद बेटा,
ख़ुशख़बरी इब्राहीम को दी उन्होंने।

बेशक अ़ज़ाब होगा जालिमों को,
जैसे हुआ साथियों को उनके,
यों मचाते जल्दी ये लोग,
होगी खराबी जब अ़ज़ाब देखेंगे।

52. सूर : तूर

क़सम तूर की, लिखी किताब की,
आबाद घर, ऊंची छत की,
और उबलते दरिया की क़सम,
अ़जाबे ख़ुदा होगा वाकेअ ही।

ना रोक सकेगा उसे कोई,
जब लरजेगा आसंमा कपकपा कर,
झुठलाने वालों की होगी खराबी,
उड़ेंगे पहाड़ जब ऊन बन कर।

जो खेल रहे ना-समझ बने,
आग में दोज़ख़ की वो जलेंगे,
ख़ुदा का वादा झूठा नहीं था,
पछताएंगे, पर कुछ कर ना सकेंगे।

बख़्शेगा जन्नत परहेज़गारों को,
पाएंगे ऐशो-आराम वो जिसमें,
बेशक ख़ुदा मेहरबान उन पर,
राहे ईमान जो चले दुनिया में।

ना तुम काहिन, ना दीवाने,
पर अ ल नहीं रखते काफ़िर,
कहते क़ुरआन तुम बना लाए,
या ऐसा बना सकते काफ़िर?

बैगर किसी के पैदा किए,
हो गये या काफ़िर पैदा,
या पैदा किया अपने आप को,
किये जमीं-आसंमा भी पैदा।

या रखते वो ख़ुदा के ख़जाने,
या हैं ये कहीं के दारोगा,
सीढ़ी चढ़ आसमान छू लेते,
या उन्हें इल्म गैब का?

पर यकीन नहीं ये रखते,
ना सनद कोई इनके पास,
करते शिर्क साथ ख़ुदा के,
लेकिन ख़ुदा शरीक से पाक।

छोड़ दो उन्हें अपने हाल पर,
इन्तिजार करें क़ियामत का वो,
करो सब्र हु में ख़ुदा पर,
तुम तो हमारे सम्मुख हो।

53. सूर : नज्म

क़सम तारे की कि साहिब तुम्हारे,
भूले ना रस्ता, भटके ना वो,
हु म ख़ुदा का है ये क़ुरआन,
ख़्वाहिशे नफ़्स ना कहते हैं वो।

जोर वाले ने सिखलाया क़ुरआन,
ख़ुदा ने भेजा जिब्रील को उन्हें,
ऊंचे किनारे आसंमा से उतर कर,
रूबरू ख़ुदा के बन्दे से हुए।

देखा जो उन्होंने दिल ने माना,
देखा फिर एक बार और उन्हें,
बनकर नूर बेरी पर छाया,
देखती रही एकटक निगाहें उन्हें।

देखी अपने परवरदिगार की,
बड़ी-बड़ी कितनी ही निशानियां,
क़ुरआन ख़ुदा का है फ़रमान,
ना कोई मनगढ़ंत कहानियां।

देखे तुमने लात और उज्जा,
तीसरे मनात को भी देखा,
ये तो बस नाम ही नाम,
बुत हो सकते नहीं कभी ख़ुदा।

हैं आसमानों में बहुत फ़रिश्ते,
काम ना आती उनकी सिफ़ारिश,
जब तक ना बख़्शे ख़ुदा इजाज़त,
कर सकते ना किसी की सिफ़ारिश।

कहते फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियां,
आख़िरत पर ना जिनको ईमान,
ख़बर नहीं उन्हें कुछ इसकी,
चलाते हैं बस गुमान से काम।

फेरे मुंह जो हमारी याद से,
तुम भी उससे मुंह फेर लो,
जानता ख़ुदा जो सीधी राह पे,
और भटक गया राह से जो।

जानता है ख़ुदा सबके आमाल,
देता उनको वैसा ही बदला,
जताओ ना ख़ुद को पाक साफ़,
किया उसने ही तुम्हें पैदा।

भला उसे या देखा तुमने,
फेर लिया हो मुंह जिसने,
या ख़बर पहुंची ना उस तक,
या इल्म कोई पाया उसने?

मालूम नहीं या यह उसको,
उठाएगा बोझ ना कोई किसी का,
करता जो कोशिश पाता है वो,
कोशिश का मिलता पूरा बदला।

वो ही हंसाता, वो ही रुलाता,
वो ही मारता, वो ही जिलाता,
दौलत देता, मुफ़िलस कर देता,
हलाक कौमों को कर वो डालता।

तो ए इंसान तू परवरदिगार की,
कौन-कौन सी नेमत पर झगड़ेगा,
मुहम्मद तो सुनाने वाले डर के,
कष्ट क़ियामत का कौन टाल सकेगा?

ताज्जुब करते या क़ुरआन पर,
और रोते नहीं तुम हंसते हो,
पड़ रहे हो तुम ग़फ़लत में,
करो उसकी इबादत, सज्दा करो।

54. सूर : क़मर

क़ियामत करीब आ पहुंची है,
काफ़िर लेकिन नहीं समझते,
व. त मुकर्रर सभी कामों का,
लेकिन काफ़िर उसको झुठलाते।

इबरत हासिल नहीं करते वो,
मानते नहीं किताब की बात,
परवा ना कुछ तुम भी करो,
भुगतेंगे वो जो होंगे हालात।

जमा करेगा ख़ुदा जिस दिन,
कब्रों से अपनी निकल पड़ेंगे,
बड़ा सख़्त वो दिन होगा,
नज़र ना अपनी उठा सकेंगे।

नूह झुठलाये उनकी कौम ने,
डुबा डाली हमने वो कौम,
कौमें आद ने भी झुठलाया,
लील गयी आंधी वो कौम।

झुठलायी समूद ने भी हिदायत,
लूत को कौम ने इन्कारा,
किया अ़जाब हमने नाज़िल,
जालिमों को पल में मारा।

ऐसे ही डराते हम उनको,
बुरे आमाल जो करते रहते,
किया आसान क़ुरआन को हमने,
तो है कोई जो सोचे समझे?

झुठलायी निशानियां कौमें फ़िऔंन ने,
पकड़ लिए हमने वो लोग,
या मजबूत तुम्हारे काफ़िर उनसे,
भाग जाएंगे जल्दी ये लोग।

55. सूर : रह़मान

फ़रमायी क़ुरआन की तालीम,
निहायत मेहरबान परवरदिगार ने,
उसी ने पैदा किया इंसान,
सिखलाया बोलना उसे, उसी ने,

चल रहे मुकर्रर हिसाब से,
चांद और सूरज दोनों गगन में,
कर रहे हैं उसको सज्दा,
पेड़ और पौधे सभी जमीं में।

किया उसी ने बुलंद आसमान,
जमीन बिछायी ख़लक़त के लिये,
दिये मेवे और खजूर के पेड़,
अनाज और फूल ख़ुशबू के लिये।

झुठला सकते तुम कौन नेमतें,
पैदा किया उसने तुमको,
इंसा को बनाया मिट्टी से,
शोलों से बनाया जिन्नों को।

उसने ही तराजू की क़ायम,
बढ़ो ना हद से आगे तुम,
तौलों पूरा इंसाफ़ के साथ,
कभी तौल ना होवे कम।

मालिक वही मश्रिकों, मग्रिबों का,
किए उसी ने दो दरिया जारी,
आपस में मिलते हैं वो दोनों,
पर करी उनमें एक आड़ तारी।

बख़्शे दरिया में मूंगे मोती,
जहाज़ बनाये बड़े-बड़े,
चलते जैसे पहाड़ नदी में,
है उसकी ही सभी नेमतें।

जो मख़लूक जमीं पर है,
सबको होना है फानी,
बाकी रहेगी जात ख़ुदा की,
जलाल और अ़जमत वाली।

जितने प्राणी जमीं-आसमां में,
मांगते हैं वो सभी उसी से,
हरदम लगा काम में रहता,
जो भी मिलता, मिलता उसी से।

ऐ इंसा और जिन्नों की जमात,
गर रखते हो क़ुदरत तुम लोग,
निकल जाओ जमीं-आसमां से,
पर जोर नहीं रखते तुम लोग।

छोड़े तुम पर आग के शोले,
तो कर ना सकोगे तुम मुकाबला,
होगा होलनाक वो दिन जब,
फट पड़ेगा तुम पर ये आसमां।

ना पूछेंगे उनके गुनाह,
इंसा से या जिन्नों से,
गुनाहगार सब पकड़े जाएंगे,
होगी पहचान बस चेहरों से।

डरता सामने खड़े होने से,
जो शख़्स अपने परवरदिगार के,
किस्म-किस्म के मेवों के पेड़,
उसको मिलेंगे दो बागों में।

तो तुम अपने परवरदिगार की,
झुठलाओगे कौन-कौन सी नेमत,
जलाल और अ़जमत का मालिक,
नाम में उसकी बड़ी बरकत।

बह रहे इनमें दो चश्में,
मेवों के पेड़ झुके होंगे,
सभी तरह के ऐशो-आराम,
हासिल उन्हें वहां पर होंगे।

56. सूर : वाक़िअ़

वाक़ेअ होने वाली जब हो जाए,
कोई पस्त तो कोई बुलंद होंगे,
कांपने लगेगी भुचाल से जमीन,
रेजा-रेजा हो पहाड़ उड़ने लगेंगे।

बैठेंगे जड़ाऊ तख़्तों पर वो,
ख़िदमत करेंगे नौजवां उनकी,
मिलेगी उन्हें जन्नत की हूरें,
बदला उसका जो करी नेकी।

तीन किस्म हो जाओ तुम लोग,
दाएं, बाएं और आगे बढ़ने वाले,
बाएं को अ़जाब, दाएं को ख़ूबी,
बेहतर सबसे आगे बढ़ने वाले।

दाहिने हाथ वालों की ऐश,
फल होंगे वहां, मेवे होंगे,
प्यारी और हम उम्र पत्नियां,
ख़ुशी-ख़ुशी वो रहते होंगे।

मुक़र्रब हैं यही लोग ख़ुदा के,
नेमत की बहिशत में जो होंगे,
बहुत से अगले लोगों में से,
और थोड़े पिछलों में से होंगे।

अफ़सोस बाएं हाथ वालों पर,
होगें अ़जाब में वो गिरफ्तार,
पाएंगे कष्ट तरह-तरह के,
अड़े हुए थे जो गुनाहगार।

पैदा किया हमीं ने तुमको,
फिर करेंगे पैदा, यों नहीं समझते,
निश्चित किया है मरना तुम्हारा,
किसी और जगह पैदा कर सकते।

जब गले में रूह आ जाती,
नजदीक होते हम मरने वाले के,
सच्चे हो तो रूह फेर लो,
बस में नहीं लेकिन ये तुम्हारे।

जो तुम बोते, या तुम्हीं उगाते,
पानी जो पीते, या तुम बरसाते,
हम चाहें सब उल्टा कर दें,
फिर भी तुम यों नहीं समझते?

मुक़र्रिब को मरने पर मिलता,
नेमत के बाग और आराम,
दाएं हाथ वालों को मिलता,
दाएं हाथ वालों का सलाम।

तारों की मंजिलों की हमें क़सम,
है यह बड़े रुत्बे का क़ुरआन,
उतारा गया उसकी तरफ़ से,
किताबे महफ़ूज में लिखा है क़ुरआन।

गर वो झुठलाने वाला गुमराह,
तो खौलते पानी की मेहमानी,
होगा जहन्नम में वो दाख़िल,
ना कोई शु ह ना हैरानी।

57. सूर : हदीद

करती है ख़ुदा की तस्बीह,
सब मख़लूक जमीं-आसमानों की,
ग़ालिब और हि मत वाला वो,
सब पर बादशाही है उसकी।

वो ही तो अपने बन्दों पर,
करता है खुली आयतें नाज़िल,
शफ़क़त करने वाला वो मेहरबां,
अंधेरे से उजाला कराता हासिल,

सबसे पहला, सबसे पिछला,
ज़ाहिर और पोशीदा है वो,
चाहे कहीं भी तुम चले जाओ,
हरदम तुम्हारे साथ है वो।

जमीं-आसमां विरासत ख़ुदा की,
यों नहीं करते फिर तुम ख़र्च,
बढ़ कर दर्जा उन लोगों का,
फ़तह से पहले करें जो ख़र्च।

राहे ख़ुदा में ख़र्च करो,
है ये बड़ा सवाब का काम,
पैगम्बर बुला रहे तुमको,
यों नहीं लाते तुम ईमान?

कौन है जो ख़ुदा को दे,
नेक नीयत और ख़ुलूस से क़र्ज़ा,
जन्नत देगा ख़ुदा उसको,
और करेगा ख़ुदा उसे अदा दोगुना।

जिस दिन मोमिनों को देखोगे,
और उनके ईमान का नूर,
आगे-आगे और दायीं तरफ़,
दिखेगा चलता उनका नूर।

कहा जाएगा तब उनसे,
हो बशारत यह तुमको,
आज तुम्हारे लिये बाग हैं,
हमेशा तुम जिन में रहो।

कहेंगे उस दिन मुनाफ़िक़ लोग,
नज़र हमारी तरफ़ भी कीजिए,
कहा जाएगा तब यह उनसे,
नूर तलाश कहीं और कीजिए।

दीवार बीच में उनके होगी,
जिसमें एक दरवाजा होगा,
भीतर दरवाजे के रहमत होगी,
जो बाहर, उन्हें अज़ाब होगा।

तो मोमिनों से कहेंगे मुनाफ़िक़,
या हम तुम्हारे साथ ना थे,
मोमिन कहेंगे ख़ुद बला में डाला,
करते इन्तिजार तुम हादसे की थे।

शक किया इस्लाम में तुमने,
धोखा आरजूओं ने तुम्हें दिया,
आ गया ख़ुदा का हु म, मगर,
देता रहा तुम्हें शैतान दगा।

ख़ुदा को याद करने के व. त,
और क़ुरआन सुनने के व. त,
हो जाएं दिल नर्म मोमिनों के,
आया नहीं अभी वो व. त।

ना हो जाएं उन लोगों जैसे,
जिनको दी गई थी पहले किताब,
गुजरा जमाना, दिल सख़्त हो गये,
लोग अ सर हैं अब ना-फ़रमान।

जान रखो कि दुनिया की ज़िंदगी,
बस खेल-तमाशा और जीनत,
आपस में तुम्हारा गरूर और शेख़ी,
माल और औलाद की ज्यादा तलब।

इसकी मिसाल जैसे बारिश से,
खेती उगती, जोरों पर आती,
पक कर पीली पड़ जाती,
चूरा-चूरा फिर हो जाती।

आख़िरत में काफ़िरों को अ़जाब,
बख़्शीश, ख़ुश्नूदी मोमिनों के लिये,
दुनिया की ज़िंदगी धोखे का माल,
जन्नत है ईमान वालों के लिये।

है ख़ुदा का यह फ़ज़ल,
जिसे चाहे वो अता फ़रमाए,
पड़ती नहीं मुसीबत तुम पर,
जब तक उसे ख़ुदा ना चाहे।

जो तुमसे फौत हो गया,
गम उसका ना खाया करो,
जो दिया उसको तुमने,
उस पर ना इतराया करो।

जो इतराते और शेख़ी बघारते,
उन्हें ख़ुदा दोस्त नहीं रखता,
बुख़्ल करते और मुंह फेरते,
उनकी ख़ुदा परवा ना करता।

भेजे पैगम्बर, किताबें बख़्शीं,
दिया तराज़ू इंसाफ़ करने को,
शस्त्रों के लिये दिया लौहा,
और रक्षा अपनी करने को।

भेजे हमने नूह और इब्राहीम,
सिलसिला नबियों का जारी रखा,
व. त-व. त पर उतारीं किताबें,
इंजील के संग ईसा को भेजा।

करी उनकी जिन्होंने पैरवी,
दिलों में शफ़क़त, मेहर डाली,
लज़्ज़तों से की किनाराकशी तो,
उन्होंने ख़ुद नयी बात निकाली।

दिया ना हु म उनको हमने,
ख़ुद सोचा ख़ुश करेंगे हमको,
बनाना चाहिए था फिर जैसा उसे,
निभा ना सके उस बात को वो।

जो उनमें से लाए ईमान,
हमने उनका बदला दिया,
उसके ही हाथ देना फ़ज़ल,
जिस पर चाहा, फ़ज़ल किया।

58. सूर : मुजादला

झगड़ती थी जो औरत तुमसे,
शौहर की शिकायत करती थी,
बातचीत सुन रहा था ख़ुदा,
इल्तिजा ख़ुदा ने उसकी सुन ली।

कह देते जो पत्नि को मां,
हो नहीं जाती मां कहने से,
मां तो बस वो ही होती,
पैदा हुए पेट से जिसके।

बेशक ना-माकूल और झूठी बात,
पर ख़ुदा माफ़ करने वाला,
सब कुछ देखता जानता वो,
गुनाह बन्दों के बख़्शने वाला।

कह बैठे जो बीवी को मां,
फिर रूजूअ कौल से कर ले,
एक गुलाम आजाद करे वो,
हम-बिस्तर होने से पहले।

इस हु म से नसीहत की जाती,
जो करते तुम, है ख़ुदा ख़बरदार,
मिले ना लेकिन जिसको गुलाम,
रोजे रखे वो दो महीने लगातार।

रख सकता ना गर रोजे,
भोजन कराए वो साठ मुहताज,
ख़ुदा की हदें, ना माने जो,
उन्हें दर्द देने वाला अ़जाब।

सब कुछ ख़ुदा जानता, सुनता,
चाहे कानाफूसी भी करे कोई,
होता वह गुनाह और जुल्म,
नाफ़रमानी रसूल की जो करे कोई।

देते ये दुआ जिस कलिमे से,
और कहते हैं अपने दिल में,
जो नबी को कहते हैं हम,
देता ना सज़ा यों ख़ुदा हमें?

दोज़ख़ ही काफ़ी होगा उन्हें,
किए जाएंगे दाखिल उसमें,
ऐ पैगम्बर उन्हें कह दो,
बुरी जगह उन्हें दोज़ख़ में।

ऐ मोमिनों, कानाफूसी करो तो,
नेकी परहेज की बातें करना,
जमा होंगे तुम जिसके सामने,
परवरदिगार से डरते रहना।

पहुंचा नहीं सकता कोई नु सान,
जब तक हु में ख़ुदा ना हो,
गम ना होगा तुम्हें मोमिनों,
जो रखते भरोसा ख़ुदा पे हो।

जब हु म मिले खुल कर बैठो,
तुम खुल कर तब बैठा करो,
और हु म हो खड़े होने का,
तब तुम उठ खड़े हुआ करो।

जो ले आए तुम में ईमान,
इल्म अता जिन्हें किया गया,
ख़ुदा जानता तुम्हारे सब काम,
दर्ज़ा बुलंद उनका किया गया।

भला देखा ना तुमने उन्हें,
जो करते दोस्ती ऐसों से,
जिन पर ख़ुदा का ग़ज़ब हुआ,
तुम में ना वे उनमें से।

यकीनन बुरा जो करते ये,
क़समों को अपनी ढ़ाल बनाते,
जब अ़जाब का मज़ा चखेंगे,
काम ना कुछ देंगी क़समें।

किया शैतान ने क़ाबू उन्हें,
याद ख़ुदा की उन्हें भुला दी,
यह जमाअत शैतान का लश्कर,
दोज़ख़ जाएगा यह लश्कर ही।

ख़ुदा, रसूल का जो दुश्मन,
ईमान वाले ना उनके दोस्त,
चाहे वो हों भाई-बंधु,
दूर ही रहते हैं वो लोग।

होते हैं उनमें ये लोग,
दिलों में जिनके लिखा ईमान,
गैबी फैज से मदद मिलती,
लकीर पत्थर की उनका ईमान।

59. सूर : हश्र

तस्बीह करती सब चीज़ें ख़ुदा की,
है वो ग़ालिब और हि मत वाला,
उसी ने कुफ़्फार अहले किताब को,
पहले हश्र में घरों से निकाला।

समझे थे जो किलों में सुरक्षित,
बचे ना वो अ़जाबे ख़ुदा से,
ना गुमान था जिसका उन्हें,
आ लिया ख़ुदा ने उन्हें वहां से।

की थी मुख़ालफ़त उन लोगों ने,
ख़ुदा और उसके रसूल की,
करता जो शख़्स उनकी मुख़ालफ़त,
सज़ा मिलती उसे सख़्त अ़जाब की।

दिलवाया जो माल नबी को,
उसमें तुम्हारा कुछ ह़क़ नहीं,
जिन्हें चाहता ख़ुदा मुसल्लत करता,
करी कोई मश. क़त तुमने नहीं।

यह माल ख़ुदा, पैगम्बर का,
रिश्ते वालों, जरूरतमंदों का,
गरीब वतन छोड़ने वाले और,
जिन्हें ख़ुदा मुकर्रर करे, उनका।

कहते मुनाफ़िक कुफ़्फ़ारों से,
साथ हम निभाएंगे तुम्हारा।
पर झूठे शैतान से ये,
व. त आए कर जाते किनारा।

चाहिए हर शख़्स को देखे,
भेजा उसने या कल के वास्ते,
सब आमाल से ख़बरदार ख़ुदा,
रहें ईमान वाले उससे डरते।

वही ख़ुदा है सब जानने वाला,
बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला,
पाक जात, सलामत, सबका बादशाह,
निगहबान ग़ालिब और बड़ाई वाला।

60. सूर : मुम्तहिन

मोमिनों अगर निकले हो,
राहे ख़ुदा में म का से तुम,
मेरे और अपने दुश्मनों को,
दोस्त कभी ना बनाओ तुम।

नेक चलन तुम पर जरूर है,
इब्राहीम और साथियों का उनके,
कहा कौम से बे ताल्लुक हैं वो,
जब तक वो बुतों को पूजते।

वो इन्कारी दीने हक़ के,
चाहते निकालना देश से तुमको,
भटक गया वो राह से सीधी,
जो पैगाम पोशीदा भेजता उनको।

अदावत और दुश्मनी रहेगी हम में,
जब तक तुम ईमान ना लाते,
हुए ना क़ायल इब्राहीम कौम के
और पलट गए अपने पिता से॥

गर काफ़िर ग़ालिब हों तुम पर,
बन जाएंगे वो तुम्हारे दुश्मन,
तकलीफ़ देंगे और यह चाहेंगे,
तुम भी काफ़िर जाओ बन।

भरोसा तुमीं पर ऐ परवरदिगार,
तेरी ही तरफ़ हम रूजूअ करते,
हुज़ूर में तेरे लौट कर आता,
गुनाह माफ़ कर ऐ ख़ुदा हमारे।

रिश्ते नाते या औलाद तुम्हारी,
ना काम आएंगे क़ियामत के दिन,
जो करते तुम ख़ुदा देखता,
करेगा फ़ैसला ख़ुदा ही उस दिन।

अजब नहीं कि पैदा कर दे,
ख़ुदा दोस्ती उन में, तुम में,
जिसने दीन पे जंग ना करी,
या घर से निकाला ना तुम्हें।

मगर मंजूर नहीं उसे दोस्ती,
दीन पर जिसने जंग करी,
या घरों से तुम्हें निकाला,
या उन लोगों की मदद करी।

गर मोमिन औरतें बैअत करें,
ना चोरी ना शिर्क करेंगी,
ना बदकारी, ना औलाद क़त्ल,
ना बुहतान वो कोई बांधेगी।

मोमिनों आएं जब पास तुम्हारे,
मोमिन औरतें वतन छोड़ के,
भेजो ना वापस कुफ़्फ़ार के पास,
कर लो निकाह महर दे के।

ले लो बैअत तुम उनसे,
गर ना करें वो ना-फ़रमानी,
मांगो उनके लिए बख़्शाशें,
बेशक ख़ुदा करता मेहरबानी।

काफ़िर औरतें वापस दे दो,
लेकर उनसे जो किया ख़र्चा,
औरतें अपनी वापस ले आओ,
चाहे जंग तुम्हें पड़े करना।

61. सूर : सफ़्फ़

यों कहते ऐसी बात मोमिनों,
जो तुम किया नहीं करते,
इससे सख़्त बेजार ख़ुदा,
कहते कुछ, तुम कुछ करते।

देखा ख़ुदा ने जब कौम को,
कि उन लोगों ने टेढ़ अपनाया,
टेढ़े कर दिये दिल उनके,
दूर कर दिया हिदायत का साया।

शीशा पिलाई दीवार हो जैसे,
ऐसे अपने पांव जमा कर,
राहे ख़ुदा में जो लड़ते,
रहते महबूबे ख़ुदा बन कर।

तस्दीक तौरात की करी ईसा ने,
और बनी इस्राईल से ये कहा,
मेरे बाद जो आएंगे पैगम्बर,
नाम अहमद होगा उनका।

याद करो वह व. त कि जब,
मूसा ने कहा अपनी कौम से,
यों देते तुम मुझे तकलीफ़,
ख़ुदा का भेजा आया हूँ मैं।

कौन भला उससे जालिम,
ख़ुदा पर झूठे बुहतान जो बांधे,
कर के रहेगा ख़ुदा रोशनी,
कितना भी वो चाहें बुझा दें।

वही तो है जिसने नबी को,
दीने हक़ देकर भेजा,
सब दीनों पर करने ग़ालिब,
चाहे लगे मुश्रिकों को बुरा।

बख़्श देगा तुम्हारे वो गुनाह,
करेगा तुम्हें बहिश्त में दाख़िल,
मिलेगी मदद और होगी फ़त्ह,
करेगा अपनी रहमत वो नाज़िल।

देती जो अ़जाब से मु त,
ऐसी तिजारत तुम्हें मैं बताता,
राहे ख़ुदा में करना जिहाद,
ख़ुदा, रसूल पे ईमान का लाना।

62. सूर : जुमुअ़ :

उसी ने भेजा, उनमें से,
बना के पैगम्बर, अपढ़ों में,
आयतें पढ़ते, पाक करते,
और सिखाते हिकमत वो उन्हें।

झुठलाते जो ख़ुदा की आयतें,
उनको वा हिदायत नहीं देता,
ख़ूब जानता ख़ुदा ज़ालिमों को,
मौत के दिन वो बता देगा।

भेजा उनमें से औरों को,
जो अभी नहीं मिले उनसे,
है ख़ुदा का फ़ज़ल उन पर,
जिसे चाहता, करता अता उसे।

अज़ान सुनो जब नमाज़े जुमे की,
ख़ुदा की याद में जल्दी करो,
बेहतर रोजी और निजात बख़्शता,
उसको ही तुम याद करो।

जिनको अता करी तौरात,
उसका जिसने पालन ना किया,
उसकी मिसाल गधे की सी,
बड़ी-बड़ी किताबों से लदा हुआ।

63. सूर : मुनाफ़िक़ून

जब मुनाफ़िक़ तुम्हारे पास आते,
इकरार करने का करते ढ़ोंग,
अपनी क़समों को ढ़ाल बनाते,
पर करते काम बुरे ये लोग।

कहते, उन पर ना ख़र्च करो,
रसूल के पास लोग जो रहते,
सभी ख़जाने हैं उसके ही,
लेकिन मुनाफ़िक़ ये नहीं समझते।

एतकाद ना रखते ये दिल में,
लाते ईमान फिर काफ़िर हो जाते,
दुश्मन है तुम्हारे, बैख़ौफ़ ना रहना,
यहां-वहां फिरते ये बहके।

मोमिनों तुम्हें माल और औलाद,
यादे ख़ुदा से ग़ाफ़िल ना करे,
दिया जो माल तुम्हें हमने,
करो ख़र्च, मौत आने से पहले।

मांगो ना मांगो माग़्फ़िरत तुम,
हरगिज ना ख़ुदा उनको बख़्शेगा,
ना-फ़रमानों को हिदायत नहीं देता,
हलाक ख़ुदा उनको कर देगा।

जब सिर पर मौत खड़ी होगी,
मांगे ना मिलेगी मोहलत तुमको,
व. त हाथ से निकल जाएगा,
जो करना है अभी कर लो।

64. सूर : तगाबुन

जो चीज जमीं-आसमां में हैं,
ख़ुदा की तस्बीह करती हैं सब,
उसी की सच्ची बादशाही है,
उसी की सब पर है क़ुदरत।

सब जानता वो छिपा या ज़ाहिर,
दिल के भेदों को भी जानता,
या करते तुम या ना करते,
कुछ भी नहीं उससे है छिपा।

काफ़िर हो या हो मोमिन,
सबको उसने ही किया पैदा,
जमीं-आसमां भी पैदा किए,
बनायी तुम्हारी सूरतें पाकीजा।

ख़बर नहीं या यह तुमको,
काफ़िर जो हुए, उन्हें मिली सज़ा,
मुंह फेरा जो उन्होंने ख़ुदा से,
ख़ुदा ने भी उनसे मुंह फेरा।

जो काफ़िर हैं सोचते ये,
उठेंगे वो हरगिज न दोबारा,
कह दो, मेरे ख़ुदा की क़सम,
करेगा वो ज़िंदा तुम्हें दोबारा।

लाते जो ईमान ख़ुदा पर,
उनके दिल को हिदायत मिलती,
एक भरोसा ख़ुदा का सच्चा,
करो इताअत ख़ुदा, रसूल की।

मोमिनों तुम्हारे रिश्ते नातों में,
है तुम्हारे कुछ दुश्मन भी,
बचो उनसे, माफ़ कर दो,
करेगा तुम पर वो मेहरबानी।

करते ख़र्च जो उसके वास्ते,
डरते ख़ुदा से, हु म मानते,
देता उन्हें वो दोगुना बदला,
वो ही सीधी राह भी पाते।

65. सूर : त्तलाक़

ऐ नबी, कह दो मुसलमानों से,
जब त्तलाक़ तुम देने लगो,
दो त्तलाक़ इद्दत के शुरु में,
और इद्दत को तुम गिनते रहो।

घर से ना निकालो इद्दत में,
ना निकलें वो ख़ुद घर से,
गर न करें खुली बे-हयाई,
रहने दो उन्हें तुम घर में।

लांघता जो ख़ुदा की हद को,
जुल्म वो ख़ुद पर करता,
ना मालूम या मर्जी उसकी,
शायद कोई रास्ता कर दे पैदा।

जब मियाद करीब आ जाए,
सोच समझ तब करो फ़ैसला,
साथ रहने दो अच्छी तरह,
या अच्छी तरह करो अलहदा।

करो गवाही देने के लिए,
इंसाफ़ पसन्द दो मर्द गवाह,
है जरूरी ईमान वालों को,
खरे ईमान पर उतरें गवाह।

रखता जो ईमान ख़ुदा पर,
और ख़ुदा से जो कोई डरेगा,
गुमान न हो, उसे वहां से,
रोजी देगा और किफ़ायत करेगा।

किया इद्दत का व. त मुकर्रर,
ख़ुदा ने ईमान वालों के लिए,
होते काम उनके आसान,
जो ख़ुदा से रहते डर के।

जिस जगह तुम ख़ुद रहते हो,
इद्दत के दिनों वहां रखो उन्हें,
गैर वाजिब तकलीफ़ ना दो,
ना नीयत तंग करने की उन्हें।

गर ह़ामिल: हो पत्नि तुम्हारी,
बच्चा जनने तक ख़र्चा दो,
करो ख़र्च हैसियत के मुताबिक,
दूध पिलाएं तो उजरत दो।

और बहुत सी कौमों ने,
करी सरकशी, हु म ना माना,
चखा मज़ा, मिली सज़ा उन्हें,
पड़ा उनको नु सान उठाना।

सो डरो ख़ुदा से अ ल वालों,
मानों तुम बात पैगम्बर की,
देतीं हैं नसीहत तुम्हें आयतें,
तम से निकाल करतीं रोशनी।

उसने ही बनाये सात आसमां,
फिर वैसी ही जमीनें बनायी,
उनमें ख़ुदा के हु म उतरते,
उसकी क़ुदरत सब पर छायी।

66. सूर : तह़रीम

ए पैगम्बर, जो चीज ख़ुदा ने,
जायज़ करी है तुम्हारे लिये,
किनाराकशी यों करते उससे,
पत्नियों की ख़ुश्नूदी के लिये?

और ख़ुदा मेहरबां बख़्शने वाला,
करता क़समों का मुकर्रर कुफ़्फ़ारा,
ख़ुदा ही तुम्हारा कारसाज़ है,
जानने वाला और हि. मत वाला।

जब कही एक भेद की बात,
पैगम्बर ने अपनी बीवी से,
रख ना सकीं उसे पेट में,
बात नबी तक आयी लौट के।

कहा नबी ने उन दोनों को,
तौबा करो तुम ख़ुदा के आगे,
बेहतर उससे बख़्शीश मांगना,
जो दिल हो जाएं कुछ टेढ़े।

अपने आप को, घर वालों को,
ऐ मोमिनों, जहन्नम से बचाओ,
बदला मिलेगा जो किया तुमने,
कोई बहाने ना आज बनाओ।

साफ़ दिल से करो तौबा,
आशा है गुनाह को दूर करेगा,
पैगम्बर और ईमान वालों को,
ख़ुदा उस दिन रुसवा ना करेगा।

उनका नूर चल रहा होगा,
उनके आगे और दायीं तरफ़,
और करेंगे वो ख़ुदा से इल्तिजा,
पुर नूर कर, और हमें माफ़ कर।

लड़ो और उन पर सख़्ती करो,
काफ़िर और मुनाफ़िक से तुम,
दोज़ख़ है जो उनका ठिकाना,
बुरी जगह है, कह दो, तुम।

नूह की बीवी, लूत की बीवी,
काफ़िरों के लिए मिसाल फ़रमायी,
करी दोनों ने उनकी ख़ियानत,
ख़ुदा ने उन्हें दोज़ख़ फ़रमायी।

फ़िर्औन की बीवी, इम्रान की बेटी,
ये हैं मिसाल मोमिनों के लिये,
करती थीं इल्तिजा वो ख़ुदा से,
हो ख़ुदा की रहमत उनके लिये।

67. सूर : मुल्क

बादशाही है जिसके हाथों में,
ख़ुदा बड़ी बरकत वाला,
हर चीज पर क़ुदरत रखता है,
है जबरदस्त और बख़्शने वाला।

बनाए जो उसने सात आसमां,
या तू उसमें कमी देखता,
आंख उठा कर देख जरा तू,
नहीं मुकाबला उसकी क़ुदरत का।

किया जिन्होंने इन्कार ख़ुदा से,
जहन्नम का अ़जाब उनके लिये,
या हिदायत करने आया ना कोई,
पूछा जाएगा तब यह उनसे?

कहेंगे वो आया था जरूर,
पर हमने ही उसे झुठलाया,
कहते थे उसे ग़लत हो तुम,
इर्शाद ख़ुदा ने ना फ़रमाया।

और कहेंगे जो सुनते समझते,
तो हम दोज़ख़ियों में ना होते,
कर लेंगे गुनाहों का इकरार,
पर दोज़ख़ में वो रहेंगे रोते।

बिन देखे जो ख़ुदा से डरते,
बख़्शिश उन्हें और बड़ा बदला,
पैदा किया जिसने अनजान नहीं,
दिलों की बातें उसे है पता।

जमीं नर्म की, रोजी दी तुम्हें,
जाना लौटकर पास उसके,
ख़ौफ़ नहीं या उसका तुम्हें,
जिसे क़ुदरत जो चाहे कर दे?

झुठलाया जिन्होंने उनसे पहले,
देखो या उनका अंजाम हुआ,
कौन है ऐसा इस दुनिया में,
करे जो मदद, ख़ुदा के सिवा?

पूछते काफ़िर गर सच्चे हो,
पूरी होगी कब यह धमकी,
होगा वादा जिस दिन पूरा,
उड़ जाएगी रौनक मुंह की।

68. सूर : क़लम

नून, क़लम, क़लम वालों की क़सम,
ऐ मुहम्मद, नहीं हो तुम दीवाने,
अख़्लाक बुलंद है बड़ा तुम्हारा,
देखेंगे जल्द ये हैं कौन दीवाने?

ख़ूब जानता है तुम्हारा परवरदिगार,
कौन भटका, कौन सीधी-राह पर,
ये चाहते तुम नर्म हो जाओ,
लाना ना भरोसा, इन झूठों पर।

आज़माइश की उनकी इस तरह,
बाग वालों की करी थी जैसे,
कहा उन्होंने जब क़समें खाकर,
मेवे तोड़ लेंगे सुबह होते होते।

और कहा ना उन्होंने 'इन्शाअल्लाह',
सो गए अपने घर वो जा,
फिर गयी बाग पर एक आफ़त,
हो गया बाग कटी खेती सा।

बड़े सवेरे जा पहुंचे बाग में,
मन में मनाते, फ़कीर ना आए,
देखी उन्होंने जब बाग की हालत,
सोचा शायद वो रस्ता भूल आए।

बोले वो हम ही कुसूरवार थे,
बढ़ गये थे हद से आगे,
रूजूअ लाते हम ख़ुदा की तरफ,
उम्मीद वो हम पर दया करे।

हो गया है या तुमको,
कैसी तज्वीजें तुम करते हो,
या लिखा है किसी किताब में,
या हमने क़सम कोई खायी हो?

या खायी क़सम की क़ियामत तक,
हु म करोगे तुम जिसका,
होगी हाज़िर वह चीज तुम्हें,
लेता है कौन इसका जिम्मा?

या इस कौल में शामिल हैं,
शरीक कोई और भी उनके,
गर सच्चे हैं जो ये लोग,
अपने शरीकों को ला करें सामने।

जिस दिन मुश्किल की घड़ी होगी,
और बुलाए जाएंगे कुफ़्फ़ार सज्दे को,
तब वो सज्दा कर ना सकेंगे,
उठा ना सकेंगे अपनी नज़रों को।

तो समझ लेने दो तुम मुझको,
इस क़लाम को जो झुठलाते,
उनको ख़बर भी ना होगी,
पकड़ लेंगे हम उनको ऐसे।

करो इन्तिजार हु मे ख़ुदा का,
और थोड़ा सा सब्र करो,
काफ़िर घूरते जब सुनते क़ुरआन,
उनकी ना तुम फ़िक्र करो।

69. सूर : हा. क़ा

या जानो, या सचमुच होने वाली,
झुठलाया कौमों ने, वो खड़खड़ाने वाली,
समूद कड़क से, आद आंधी से,
हलाक उन कौमों को करने वाली।

फ़िर्औनी और जो लोग पहले थे,
करते थे जो काम गुनाह के,
नाफ़रमानी करते थे ख़ुदा की,
पकड़ा बड़ा सख़्त उन्हें ख़ुदा ने।

सूर एक बार जब फूंकी जाएगी,
उठेंगे जमीन और पहाड़ उस दिन,
टूट-टूट कर होंगे वे बराबर,
हो पड़ेगी, होने वाली उस दिन।

क़ियामत के दिन फट जाएगा आसमां,
फ़रिश्ते उतर आएंगे किनारों पर,
आठ फ़रिश्ते उस दिन होंगे उठाए,
तुम्हारे परवरदिगार का अर्श कांधो पर।

पेश किए जाओगे उस दिन,
तुम अपने आमालों के साथ,
भले बुरे तुम्हारे आमालों का,
होगा उस दिन हिसाब-किताब।

बुरे आमाल जिनके होंगे,
दोज़ख़ में वो भेजे जाएंगे,
काम ना देगा माल-असबाब,
ना दोस्त किसी को वो पाएंगे।

तो क़सम हमें उन चीजों की,
जो तुम्हें नज़र आती, न आती,
श्रेष्ठ फ़रिश्ते की ज़ुबां का पैग़ाम,
किसी शायर का क़लाम, क़ुरआन नहीं।

गर पैगम्बर कहते कुछ झूठ,
तो हाथ पकड़ लेते हम उनका,
फिर काट डालते गर्दन की रग,
कोई रोकने वाला हमें ना होता।

यह किताब परहेजगारों को नसीहत,
पर तुम में कुछ झुठलाने वाले,
काफ़िरों को हसरत की वजह है,
बेशक क़ाबिल है ये यकीन के।

70. सूर : मआ़रिज

तलब किया अ़जाब एक ने,
नाज़िल वह होकर रहेगा,
आसमानों के मालिक ख़ुदा का,
हु म कोई नहीं टाल सकेगा।

ख़ुदा है मालिक जिन दर्जो का,
रूहुल अमीन व फ़रिश्ते चढ़ते उधर,
होगा अ़जाब नाज़िल किस दिन,
जिसका अंदाज़ा पचास हज़ार बरस।

करो हौसले के साथ बर्दाश्त,
वो दूर समझते, पर करीब हमारे,
आसमां होगा पिघले तांबे सा,
और पहाड़ धुंकी हुई ऊन जैसे।

पूछेगा ना दोस्त, दोस्त को,
सोचेंगे अ़जाब टल जाए कैसे,
धन-दौलत और बीवी बेटे,
जो चाहे वह वो सब ले ले।

पर हरगिज़ ना वो छोड़े जाएंगे,
आग दोज़ख़ की उन्हें बुलाएगी,
दीने हक़ से मुंह फेरा था,
गुनाहगारी ना वो बख़्शी जाएगी।

लेकिन नमाज़ जो नियम से पढ़ते,
माल में हिस्सा औरों का देते,
सच समझते जो आख़िरत को,
और अ़जाबे ख़ुदा से जो डरते।

जो रखते अपने ऊपर संयम,
निकलते नहीं हद से आगे,
क़ायम रहते अपने कौल पर,
लोग बहिश्त में ये ही जाएंगे।

तो या हुआ उन काफ़िरों को,
कि तुम्हारी तरफ़ दौड़े चले आते,
या रखता उम्मीद की हर शख़्स,
दाख़िल होगा नेमत के बाग में?

हरगिज नहीं होगा ऐसा,
रहने दो उन्हें बातिल में,
ताकत रखते हैं कि हम,
बेहतर लोग बदल लाएं।

वादा किया उनसे जिस दिन का,
आ मौजूद होने दो उसको,
दौड़ेंगे तब क़ब्रों से निकल कर,
जैसे दौड़ते शिकार के जाल को।

71. सूर : नूह

भेजे नूह उनकी कौम को,
ताकि हिदायत वा उनको करें,
उन पर अ़जाब आने से पहले,
नसीहत वो अपनी कौम को करें।

कहा नूह ने कौम को अपनी,
करो इबादत और ख़ुदा से डरो,
एक व. त की देता है मोहलत,
फिर गुनाह तुम्हारे ना बख़्शेगा वो।

ना सुनी जब बात नूह की,
अर्ज करी उन्होंने परवरदिगार से,
बुलाता रहा मैं उन्हें रात-दिन,
लेकिन वो और भी रहे भागते।

कहा, माफ़ फ़रमायेगा वो तुम्हें,
जो तुम कर लेते तौबा,
कानों में उंगली देते रहे,
अकड़ बैठे और कपड़ा ओढ़ा।

कहा जो तुम माफ़ी मांगोगे,
बख़्शा देगा वो बख़्शाने वाला,
आसमान से मेंह बरसा कर,
बना देगा तुम्हें दौलत वाला।

या देखा नहीं कैसे ख़ुदा ने,
बना दिए ऊपर तले सात आसमां,
चांद को नूर, सूरज को चिराग,
और तुम्हें किया जमीं से पैदा।

लौटा देगा फिर जमीं में,
और उसी से निकालेगा तुम्हें,
रास्ते बनाए चलने फिरने को,
फर्श बनाया जमीं को उसने।

और अर्ज करी, ऐ परवरदिगार,
माबूद ना छोड़ेंगे, कहते हैं ये,
गुमराह किया बहुतों को उन्होंने,
कर दे तू भी गुमराह इन्हें।

किए जो गुनाह उनके कारण,
डुबा दिया उन्हें ख़ुदा ने,
उसके सिवा ना मददगार,
डाले गए फिर वो आग में।

और दुआ करी फिर नूह ने,
ना बसा जमीं पर कोई काफ़िर,
गर रहने देगा जो तू उन्हें,
गुमराह करेंगे बन्दों को काफ़िर।

मुझे और मां-बाप को मेरे,
और ले ईमान जो घर आए,
माफ़ फ़रमा उन सबको तू,
और तबाही, जालिमों के लिए।

72. सूर : जिन्न

ऐ पैगम्बर, लोगों से कह दो,
कि जिन्नों ने जब क़ुरआन सुना,
तो कहने लगे आपस में वो,
हमने एक अजीब क़ुरआन सुना।

भलाई का रास्ता बतलाता क़ुरआन,
उस पर ले आए हम ईमान,
ना बनाएंगे ख़ुदा के साथ शरीक,
बहुत बड़ी परवरदिगार की शान।

जो हम में से कुछ बेवक़ूफ,
गढ़ते ख़ुदा के बारे में झूठ,
ना बीवी ख़ुदा की ना औलाद,
ना समझे हम लोगों का झूठ।

कुछ इंसान जिन्नों को मानते,
समझे ख़ुदा ना जिलाएगा उन्हें,
लेकिन भाग लें वो कहीं भी,
पकड़ ही लेगा ख़ुदा उन्हें।

सुनता जो हिदायत की किताब,
और लाता उस पर ईमान,
डर उसे ना किसी जुल्म का,
और ना उसे होगा नुकसान।

और उन्हें यह भी कह दो,
गर वो सीधी राह पे होते,
आज़माइश उनकी करने के लिए,
पीने को बहुत हम पानी देते।

कि मस्जिदें ख़ास ख़ुदा की हैं,
करो ना शरीक ख़ुदा के साथ,
यादे ख़ुदा से जो मुंह फेरेगा,
देगा उसे वह सख़्त अ़जाब।

कह दो, कि इबादत करता हूँ,
मैं तो अपने परवरदिगार की,
ख़बर नहीं कुछ मुझको,
तुम्हारे नुकसान और नफ़े की।

दे सकता नहीं कोई पनाह,
सिवा ख़ुदा, उसके अ़जाब से,
हु म और पैगाम ख़ुदा का,
पहुंचाना ही बस जिम्में मेरे।

ना-फ़रमानी जो शख़्स करेंगे,
ख़ुदा और उसके पैगम्बर की,
रहेंगे हमेशा-हमेशा उसमें,
पाएंगे सज़ा वो जहन्नम की।

देख लेंगे जब उस दिन को,
जिसका उनसे किया जाता वादा,
तब हो जाएगा मालूम इनको,
ना कोई दोस्त, ना मदद वहां।

कह दो कि मैं नहीं जानता,
कब होगा दिन जिसका वादा,
करता नहीं वो किसी पर ज़ाहिर,
वो ही ग़ैब का जानने वाला।

73. सूर : मुज़्ज़म्मिल

ऐ मुहम्मद, कियाम करो रात को,
आधी रात या कुछ कम ज्यादा,
ठहर-ठहर कर पढ़ा करो क़ुरआन,
नाज़िल जल्द भारी फ़रमान होगा।

बेहतर है रात में जागना,
नफ़्स को ये क़ाबू में रखता,
होता अच्छा ज़िक्रे ख़ुदा भी,
दिन तो और कामों में गुजरता।

हर तरफ़ से ध्यान हटा कर,
उसी तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ,
हर घड़ी करो उसी का ज़िक्र,
उसी को कारसाज़ अपना बनाओ।

सहते रहो दिल दुखाना उनका,
और किनारा उनसे कर लो,
दौलत वाले जो झुठलाते रहते,
समझ मुझे उनसे लेने दो।

थोड़ी सी मोहलत दे दो उन्हें,
फिर हम बेड़ियों में जकड़ लेंगे,
भड़कती आग और गुलूगीर खाना,
देंगे दर्दनाक अ़जाब हम उन्हें।

कांपने लगे जिस दिन जमीन,
पहाड़ हो जाएं रेत के टीले,
मूसा की तरह मुहम्मद उस दिन,
होंगे गवाह वो तुम्हारे मुकाबले।

बचोगे उस दिन तुम कैसे,
जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा,
फ़िऔंन ना बचा, तुम कैसे बचोगे,
जब आसमां ये फट पड़ेगा।

किया करते थे तुम रात में कियाम,
कभी आधी रात और कभी ज्यादा,
खूब जानता है तुम्हारा परवरदिगार,
रखता वो रात-दिन का अन्दाजा।

जानता वो निबाह नहीं सकोगे,
पढ़ो क़ुरआन आसान हो जितना,
करोगे जो तुम नेक आमाल,
पाओगे उससे ज्यादा तुम बदला।

हां, जिस नबी को पसंद फ़रमाए,
उसे बता देता ग़ैब की बातें,
निगेहबान मुकर्रर उन पर करता,
हर चीज को रखता अपने ताबे।

74. सूर : मुद्दस्सिर

ऐ मुहम्मद, जो कपड़ा हो लपेटे,
उठो लोगों को हिदायत कर दो,
करो बड़ाई अपने परवरदिगार की,
और कपड़ों को अपने पाक रखो।

करो ना एहसान इस नीयत से,
कि ज्यादा के तुम तालिब हो,
दूर रहो नापाकी से और,
सब्र तुम उसके लिए करो।

फूंका जाएगा जिस दिन सूर,
दिन होगा वह मुश्किल का,
समझ लेने दो हमें उससे,
अकेला किया जिसे हमने पैदा।

और ज्यादा उसको माल दिया,
बेटे भी दिए उसको हमने,
हो रहा वो आयतों का दुश्मन,
पर रखता ख़्वाहिश हम ज्यादा दें।

ऐसा होगा हरगिज भी नहीं,
चढ़ाएंगे हम उसे सऊद पर,
कैसी उसने की तज्वीज,
करता घमंड मुंह फेर कर।

कहता है यह जादू है,
ख़ुदा का नहीं, इंसा का क़लाम,
सक़र में उसे दाख़िल करेंगे,
और करेंगे उसका काम तमाम।

किए दारोगा दोज़ख़ के फ़रिश्ते,
करें किताब वाले ताकि यकीन,
शक ना लाएं नेक लोग,
अहले किताब और जो मोमिन।

दिल में मर्ज या हों काफ़िर,
पूछें या है म. सूद ख़ुदा का,
करता गुमराह वो इसी तरह,
और देता हिदायत जिसे चाहता।

हां, हां, चांद की हमें क़सम,
रात की और रोशन सुबह की,
दोज़ख़ की आग बड़ी आफ़त है,
हर बशर को वजह खौ़फ़ की।

रेहन रखा हुआ हर शख़्स,
बदले में अपने आमालों के,
नेक लोग जाएंगे बहिश्त में,
जालिम होंगे दोज़ख़ के हवाले।

पूछेंगे नेक जब दोज़ख़ियों से,
पढ़ी ना नमाज़ कहेंगे वो,
ना फ़कीरों को खाना खिलाया,
हक़ पर ईमान ना लाए वो।

काम ना देगी उनको सिफ़ारिश,
मुंह फेर रहे जो नसीहत से,
चाहते उन पर उतरे किताब,
पर होगा नहीं कभी भी ऐसे।

नहीं आख़िरत का उन्हें है ख़ौफ़,
नसीहत है यह कोई शक नहीं,
तो जो चाहे इसका रखे याद,
ख़ुदा चाहे जैसा, होता है वही।

75. सूर : क़ियाम

क़सम क़ियामत की, नफ़्से लव्वामा की,
उठा कर सब खड़े किये जाएंगे,
सोचता इंसान हम कर ना सकेंगे,
बिखरा पिंजर और मिट्टी दुरुस्त करेंगे।

पूछते जो कब होगी क़ियामत,
चुंधियाएंगी आंखें, चांद गहना जाएगा,
किए जाएंगे सूरज-चांद जमा,
कहीं भाग जाऊं, इंसान चाहेगा।

पर पनाह ना कोई मिलेगी,
बस ख़ुदा के पास ठिकाना,
आमाल उसके होंगे ज़ाहिर,
बनेगा गवाह वो ख़ुद अपना।

ऐ मुहम्मद, वह्य, पढ़ने के लिए,
ज़ुबान अपनी तुम चलाया ना करो,
हमारे जिम्में जमा करना, पढ़ाना,
वह जो पढ़े तुम सुना करो।

पर लोगों तुम्हारी दुनिया से दोस्ती,
और आख़िरत को छोड़ देते हो,
चमकेंगे बहुत से मुंह उस दिन,
देखेंगे जब वो अपने परवरदिगार को।

और बहुत से होंगे उदास,
सोचेंगे मुसीबत वाक़ेअ होने को,
फंसी होगी जान गले में,
तैयारी चलने की परवरदिगार को।

तो ना-समझ उसे बन्दे ने,
ना की तस्दीक, क़लामें ख़ुदा की,
पढ़ी ना नमाज़ मुंह फेर लिया,
बस अकड़ दिखाई और नादानी की।

अफ़सोस है उस पर, फिर अफ़सोस,
या छोड़ दिया जाएगा यूं ही,
पैदा किया उसको जिसने,
या फिर जिलाने की क़ुदरत नहीं?

76. सूर : दह्र

ज़िक्र के काबिल ना था इंसान,
अपने पैदा होने से पहले,
बनाया हमीं ने देखता, सुनता,
एक मिले-जुले नुत्फ़े से उसे।

पैदा कर उसे राह दिखायी,
चाहे शुक्र करे चाहे ना-शुक्रा,
जंजीर, तौक और दहकती आग,
काफ़िरों को दोज़ख़ की सज़ा।

नेकी वाले सब ऐश करेंगे,
पाएंगे वो जन्नत का मज़ा,
औरों की जरूरत करी पूरी,
तकलीफ़ें सही, उसका बदला।

सब्र रखा दुनिया में उन्होंने,
रहमत ख़ुदा की उन्हें मिलेगी,
र ाी भर ना होगी तकलीफ़,
जन्नत में सब खुशी मिलेगी।

धीरे-धीरे किया है नाज़िल,
ऐ मुहम्मद, तुम पर क़ुरआन,
सब्र करो, हु म है जैसा,
यादे ख़ुदा सुबह और शाम।

बयान करो पाकी उसकी,
देर रात तक सज्दा करो,
कहा ना मानों ना-शुक्रों का,
राज़ी में उसकी राज़ी रहो।

77. सूर : मुर्सलात

नर्म-नर्म चलती हवाओं की क़सम,
जोर पकड़ कर झ कड़ हो जाती,
फैला देती फाड़ कर बदल,
जुदा-जुदा फिर उन्हें कर देती।

क़सम है फिर फ़रिश्तों की,
जो वह्य तुम तक हैं लाते,
किया जाता है जिसका वादा,
दिन जरूर वो रहेगा आ के।

जाती रहे जब चमक तारों की,
और आसमान जब फट जाएं,
उड़े-उड़े जब फिरें पहाड़,
और पैगम्बर फ़हराम किए जाएं।

देर की गई इसलिए इनमें,
कि फ़ैसले का आ जाए दिन,
या ख़बर तुम्हें वह या है,
झूठों की खराबी है उस दिन।

या हलाक किया ना लोगों को,
इन पिछलों को भी भेजते पीछे,
करते ऐसा ही गुनाहगारों के साथ,
पाएंगे खराबी उस दिन झूठे।

या तुम्हें पैदा किया ना हमने,
बनाया ना जमीं को समेटने वाली,
उस पर ऊंचे पहाड़ रख दिए,
और पिलाया तुमको मीठा पानी।

जिस चीज़ को तुम झुठलाते थे,
अब तुम उसकी ओर चलो,
प्रचण्ड बड़ी एक आग है वो,
बच ना सकोगे, चाहे जो हो।

उठा लो किसी कदर फ़ायदे,
पर गुनाहगार तुम बेशक हो,
झुकते नहीं तुम ख़ुदा के आगे,
तुम्हें होगी खराबी उस दिन को।

78. सूर : नबा

किस चीज के बारे पूछते ये,
या बड़ी ख़बर के बारे में,
देखो, जान लेंगे ये बहुत जल्द,
इख़्तिलाफ़ कर रहे ये जिसमें।

या जमीं को बनाया ना बिछौना,
पहाड़ों को उसकी मेखें ठहराया,
पैदा किया तुम को जोड़ा-जोड़ा,
नींद को आराम की वजह बनाया।

रात को पर्दा किया मुकर्रर,
दिन रोजी का व. त किया,
ऊपर तले सात आसमां बनाए,
सूरज को रोशन चिराग किया।

और बादल से मेंह बरसाया,
ताकि फ़सल करो तुम पैदा,
बाग लगाओ घने-घने,
और पियो पानी तुम ठंडा।

बेशक मुकर्रर है फ़ैसले का दिन,
उस दिन सूर फूंका जाएगा,
जुट के जुट हो जाओगे जमा,
आसमां उस दिन खोला जाएगा।

बेशक दोज़ख़ घात में हैं,
सरकशों का है वही ठिकाना,
पड़े रहेंगे उसमें मुद्दतों,
बहुत बुरा दोज़ख़ है ठिकाना।

कामियाबी है परहेजगारों को,
सब आराम व सुख होगा,
ना झूठ, ना बात बेहूदा,
बदला ख़ुदा से बड़ा मिलेगा।

रूहुल अमीन और फ़रिश्ते जब,
सफ़ बांध कर होंगे खड़ें,
कोई कुछ ना बोल सकेगा,
इजाज़त ना जब तक वो बख़्शे।

कर दिया आगाह अ़जाब से,
बहुत जल्द जो आने वाला,
दिन बर-हक़, शख़्स जो चाहे,
ख़ुदा के पास बना ले ठिकाना।

79. सूर : नाज़िआ़त

क़सम है उन फ़रिश्तों की,
डूब कर जो खींच लेते हैं,
खोल देते हैं आसानी से और,
उनकी जो तैरते-फिरते हैं।

फिर बढ़ते हैं लपक कर आगे,
करते इन्तिजाम सब कामों का,
आकर रहेगा जरूर वह दिन,
जब भोचाल जमीं को आएगा।

डरते होंगे दिल लोगों के,
और आंखें झुकी हुई होंगी,
कहेंगे काफ़िर बिखरी हड्डियां,
या उस दिन जमा होंगी?

भला पहुंची मूसा की हिकायत,
जब तुवा में उन्हें पुकारा,
हु म दिया फ़िऔ़न को जाओ,
सरकश बड़ा वो हो रहा।

कहो, चाहते या होना पाक,
तो मैं तुम्हें रास्ता दिखाऊं,
ख़ौफ़े ख़ुदा हो तुममें पैदा,
ख़ुदा का मैं पैगाम सुनाऊं।

मूसा झुठलाए, फ़िऔ़न ना माना,
बोला सबका हूँ मैं मालिक,
हुआ शिकार अ़जाबे ख़ुदा का,
करो किस्से से इबरत हासिल।

भला मुश्किल या तुम्हें बनाना,
बना दिया जिसने आसमान,
छत को उसकी ऊंची किया,
फिर उसको कर दिया समान।

रात अंधेरी बनायी उसी ने,
उसी ने दिन में धूप करी,
फैला दिया जमीं को उसने,
उसी ने पानी और फ़सल करी।

तो जिस दिन बड़ी आफत आएगी,
याद करेंगे सब अपने आमाल,
सरकशों का दोज़ख़ है ठिकाना,
बहिश्त जो करते नेक आमाल।

पूछते जो कब होगी क़ियामत,
कह दो मालूम ख़ुदा को ये,
देख लेंगे जब वे उसको,
सोचेंगे यहां कुछ पल ही रहे।

80. सूर : अ–ब–स

आया एक अंधा पास तुम्हारे,
या ख़बर वो पाकी हासिल करता,
मुतवज्जह हो तुम और की तरफ़,
जो परवाह नहीं तुम्हारी करता।

ऐसा ना–शुक्रा है इंसान,
कि जिसने बनाया है इसको,
मानता नहीं उसी का हु म,
जिसने दिया सब कुछ उसको।

आया जो तुम्हारे पास दौड़ते,
और ख़ुदा से जो डरता,
बेरुखी करते तुम उससे,
जो क़ुरआन सुनना है चाहता।

तो जब क़ियामत का गुल मचेगा,
दूर रिश्तों से हर कोई भागेगा,
ख़ुश होंगे उस दिन नेक लोग,
और काफ़िरों का मुंह स्याह होगा।

देखो यह क़ुरआन नसीहत है,
लिखा अदब के क़ाबिल पन्नों में,
रखे हुए हैं, बुलन्द मुकाम पर,
जो चाहें इसको याद रखें।

81. सूर : त वीर

लपेट लिया जाएगा जब सूरज,
तारे बे–नूर जब हो जाएंगे,
चलाए जाएंगे जिस दिन पहाड़,
और दरिया आग हो जाएंगे।

मिला दी जाएगी जब रूहें,
अमलों के दफ्तर खोले जाएंगे,
खींची जाएगी आसमां की ख़ाल,
दोज़ख़ में आग को भड़काएंगे।

नेक आमाल वालों के लिये,
लायी जाएगी जब बहिश्त क़रीब,
मालूम कर लेगा तब हर शख़्स,
कैसे आमाल हैं उसके करीब?

नहीं कलाम यह शैतान का,
फिर किधर को तुम जाते,
नसीहत यह लोगों के लिये,
सीधी राह जो चलना चाहे।

बेशक बुलंद दर्जा फ़रिश्ते की,
जुबां का पैगाम है क़ुरआन,
दीवाने नहीं हैं तुम्हारे रफीक,
देखा फ़रिश्ता पूरब के आसमान।

82. सूर : इन्फ़ितार

जिस दिन आसमान फट जाएगा,
झड़ पड़ेंगे जब तारे,
दरिया बह कर मिल जाएंगे,
उखेड़ दी जाएंगी जब कब्रें।

निगहबान हैं तुम पर मुकर्रर,
जो तुम करते, लिखते जाते,
बदला मिलेगा तुम्हें वैसा ही,
जैसा करते, वो उसे जानते।

कर लेगा हर शख़्स मालूम,
कि उसने आगे या भेजा,
ख़ुदा के बारे में तुझको,
ऐ इंसान किसने दिया धोखा?

और तुम्हें मालूम नहीं है,
बदले का दिन कैसा होगा,
मदद ना करेगा, कोई किसी की,
हु म ख़ुदा का ही बस होगा।

उसी ने तो बनाया तुझको,
ठीक किया तेरे अंगों को,
हैरत और अफ़सोस कि तू ने,
झुठला दिया उसके बदले को।

83. सूर : मुतफ़्फ़िफ़ीन

कभी जो करते नाप तौल में,
लेते पूरा पर देते हैं कम,
या नहीं जानते उठाए जाएंगे,
होंगे ख़ुदा के वो पेशे कदम।

इल्लीयीन में नेकों के आमाल,
हाज़िर जिसके पास फ़रिश्ते,
चैन में होंगे, तख़्तों पर बैठे,
ताजा चेहरे, राहत से हंसते।

सिज्जीन में लिखे झूठों के आमाल,
उस दिन खराबी झुठलाने वालों की,
जंग लगा है उनके दिलों पर,
जलेंगे वो आग में दोज़ख़ की।

मोमिनों से हंसी करते थे काफ़िर,
करते थे हिकारत से वो इशारे,
तो आज हंसी करेंगे मोमिन,
मिलेंगे जब उन्हें आमालों के बदले।

84. सूर : इन्शिक़ाक़

आसमान जब फट जाएगा,
जब जमीं होगी हमवार,
और जो कुछ उसके भीतर,
देगी उसे बाहर निकाल।

रहते थे मस्त अपने अहल में,
सोचा ना ख़ुदा को फिर जाएंगे,
सब देख रहा था परवरदिगार,
लोग ना अब ये बख़्शे जाएंगे।

इर्शादे ख़ुदा की तामील करेंगे,
और उनको यह है लाज़िम,
जा मिलोगे परवरदिगार से,
उस दिन क़ियामत होगी क़ायम।

हमें शाम की लाली की क़सम,
क़सम रात की, और चांद की,
तुम दर्जा-दर्जा ऊंचे चढ़ोगे,
यों लाते लोग ईमान नहीं?

आमालनामा दाहिने हाथ में जिनके,
हिसाब आसान और वो ख़ुश होंगे,
जिन्हें आमालनामा मिलेगा पीछे से,
दोज़ख़ में लोग वो दाख़िल होंगे।

जब पढ़ा जाता क़ुरआन सामने,
तो करते नहीं ये लोग सज्दा,
काफ़िर जो झुठलाते, अ़ज़ाब पाएंगे,
ईमान और नेकों को बड़ा बदला।

85. सूर : बुरूज

बुर्ज वाले आसमां की क़सम,
और उस दिन की जिसका वादा,
क़सम हाज़िर होने वाले की,
और उसकी जो हाज़िर होगा।

सख़्त बहुत है पकड़ ख़ुदा की,
वो ही पैदा करता है दोबारा,
अर्श का मालिक, बड़ी शान वाला,
कर देता वो, जो वो चाहता।

कि कर दिए गए वो हलाक,
खोदी जिन्होंने आग की खन्दक,
बैठ किनारों पर देख रहे थे,
मोमिन जलें खन्दकों के अन्दर।

नहीं झूठ इस किताब में कुछ,
बल्कि क़ुरआन है अजीमुश्शान,
लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ,
बख़्शीश पाते जो लाते ईमान।

दी जिन्होंने तकलीफ़ मोमिनों को,
लेकिन ना करी जिन्होंने तौबा,
दोज़ख़ का अ़ज़ाब होगा उन्हें,
और अ़ज़ाब जलने का भी होगा।

86. सूर : त्तारिक़

आसमान और जो रात को आए,
चमकने वाले उस तारे की क़सम,
कि ऐसा कोई नफ़्स नहीं है,
जिस पर किए ना निगेहबां क़ायम।

करेगा ईरादा वो जिस दिन,
जांचेगा वो भेद दिलों के,
ना मददगार कोई इंसा का,
ना क़ाबू होगा कुछ उसके।

तो चाहिए इंसा को देखना,
कि वह काहे से हुआ पैदा,
पैदा किया पहली बार उसी ने,
बेशक वो करेगा फिर से पैदा।

क़सम आसमां की जो मेंह बरसाता,
क़सम जमीं की जो फट जाती,
करता जुदा हक़ को बातिल से,
यह कलाम कोई बेहूदा बात नहीं।

87. सूर : अअूला

करो तस्बीह ख़ुदा के नाम की,
इंसा को बनाया, फिर ठीक किया,
जिसने ठहराया उसका अन्दाजा,
और फिर उन्हें रास्ता बतलाया।

हम तुम्हें पढ़ा देंगे ऐसे,
भूलोगे फिर ना उसे कभी,
ख़ुदा जानता सब बातें तुम्हारी,
चाहें जाहिर हों या हो छिपी।

नफ़ा देने की उम्मीद जहां तक,
उन्हें तुम नसीहत रहो करते,
जिसे ख़ौफ़े ख़ुदा, पकड़ेगा नसीहत,
बदबख़्त रहेगा मगर भागते।

होगा आग में वो दाख़िल,
ना मरेगा वहां, ना जिएगा,
मुराद मिली जो पाक हुआ,
नमाज़ पढ़ी और ज़िक्र किया।

लेकिन करते हो तुम लोग,
स्वीकार जिंदगी को दुनिया की,
लिखी हुई सहीफ़ों में है,
बेहतर आख़िरत जो रहती बाकी।

88. सूर : ग़ाशियः

होगी बरपा क़ियामत जिस दिन,
बहुत से लोग जलील होंगे,
सख़्त मेहनत करेंगे, थके मांदे,
दहकती आग में दाख़िल होंगे।

एक खौलते हुए चश्में का,
मिलेगा उन्हें पानी पीने को,
और सिवा कांटेदार झाड़ के,
कुछ ना मिलेगा खाने को।

और बहुत से ख़ुश होंगे तब,
ऊंचे बहिश्त में मिलेगा ठिकाना,
मिलेंगे उन्हें ऐशो-आराम,
अम्न और चैन का वो ठिकाना।

देखते नहीं या ये लोग,
बनाए कैसे हमने ऊंट अजीब,
बुलंद किया आसमां कैसा,
और बिछायी हमने कैसे जमीन?

काम तुम्हारा नसीहत करना है,
नियु त नहीं तुम उन पर दारोगा,
जो मुंह फेरते, उन्हें देंगे अ़जाब,
जब लौटेंगे हमें तब हिसाब होगा।

89. सूर : फ़ज्र

क़सम फ़ज्र की, दस रातों की,
क़सम जुफ़्त और ताक़ की,
काफ़िरों को जरूर अ़जाब होगा,
क़सम जाती हुई रात की।

या देखा नहीं कि परवरदिगार ने,
या किया आद, समूद के साथ,
फ़िऔंन भी जो हुआ था सरकश,
उन सबको कर दिया हलाक।

अजीब मख़लूक है मगर इंसान,
जब ख़ुदा उसको आजमाता,
उसे इज्ज़त देता, बख़्शता नेमत,
मुझे इज्ज़त बख़्शी, वो इतराता।

जब आजमाता मुश्किल में उसे,
कहता किया जलील ख़ुदा ने,
बदला उसी के आमालों का,
जुल्म किए थे जो उसने।

जिस दिन हाज़िर होगी दोज़ख़,
तो इंसा उस दिन चेतेगा,
कहेगा काश कुछ किया होता,
पर तब पछताये, कुछ ना होगा।

लौट चल अपने ख़ुदा की तरफ़,
ऐ रूह, इत्मीनान पाने वाली,
हो जा शामिल मेरे बन्दों में,
तू उससे, वो तुझसे राज़ी।

90. सूर : ब-लद

हमें इस शहर म का की क़सम,
आदम और उसकी औलाद की,
कि तकलीफ़ में बनाया हमने इंसान,
या क़ाबू हमारा इंसान पर नहीं?

कहता उसने माल बरबाद किया,
या उसे किसी ने देखा नहीं,
दी उसे जुबां, दो होंठ दिए,
या हमने दी उसे आंखें नहीं?

भले बुरे दोनों रास्ते दिखाए,
पर घाटी से होकर ना गुजरा,
ना करी सहायता कभी किसी की,
हमारे आयतों से भी मुकरा।

पर वो लोग जो झुठलाते,
मानते नहीं हमारी आयतों को,
बद-बख्त हैं वो सज़ा पाएंगे,
पाएंगे वो दोज़ख़ की आग को।

फिर उनमें भी हुआ दाख़िल,
ईमान और नेक आमाल वालों में,
सब्र की नसीहत, शफ़क़त की वसीयत,
यही लोग शामिल सआदत वालों में।

91. सूर : शम्स

सूरज की क़सम, रोशनी की क़सम,
क़सम चांद की, जब पीछे निकले,
और दिन की जब चमका दे,
रात की जब उसे छिपा ले।

कि पाक रखा नफ़्स को जिसने,
मिल गयी उसे अपनी मुराद,
घाटे में रहा वो शख़्स जिसने,
मिलायी अपनी नफ़्स में खाक।

आसमान और उसे बनाया जिसने,
जमीं और उसे फैलाया जिसने,
इंसा को बनाया, उसे ठीक किया,
और उसकी, समझ दी उसे जिसने।

समूद कौम ने झुठलाया नबी को,
काट दी उन्होंने ऊंटनी की कूंचे,
अ़ज़ाब नाज़िल किया समूद कौम पर,
हलाक कर दिया उन्हें ख़ुदा ने।

92. सूर : लैल

क़सम रात की दिन छिपा ले,
दिन की क़सम जब चमक उठे,
और क़सम उसकी जिसने,
नर और मादा, दोनों पैदा किए।

मालूम ख़ुदा को है लोगों,
करते कोशिश तुम तरह-तरह की,
कोई माल ख़र्चते राहे ख़ुदा में,
कोई परहेज, और करते नेकी।

कोई कंजूस और बे-परवाह,
नेक बात को झूठ समझते,
ऐसे ही लोगों से हम,
पेश सख़्ती से हैं आते।

डराया तुम्हें भड़कती आग से,
दाख़िल उसमें वो होगा,
बद-बख़्त बड़ा इस दुनिया में,
जिसने झुठलाया और मुंह फेरा।

नेक लोगों को देंगे हम,
आसान तरीके की तौफ़ीक,
आख़िरत और दुनिया भी,
हैं हमारी ही दोनों चीज।

जो देगा माल पाकी के लिए,
ना उतारने को कोई एहसान,
रजामंदी ख़ुदा की हासिल करने को,
मिलता जल्द उसको ईमान।

93. सूर : ज़ुहा

सूरज की रोशनी की क़सम,
रात की जब अंधियारा हुआ,
ऐ मुहम्मद, तुम्हारे परवरदिगार ने,
ना तुम्हें छोड़ा, ना नाराज हुआ।

दी जगह तुम्हें यतीम पाकर,
अनजान थे सीधा मार्ग दिखाया,
पाया तंगदस्त परवरदिगार ने,
दिया माल, गनी कर दिखाया।

आख़िरत तुम्हारे लिए बेहतर है,
दुनिया के हाल से कई ज्यादा,
हो जाओगे ख़ुश बहुत जल्द,
अता फ़रमाएगा ख़ुदा कुछ ऐसा।

तो तुम भी किसी यतीम पर,
सितम कोई कभी ना करना,
झिड़कना ना भिक्षु को कभी,
बयान नेमतों का करते रहना।

94. सूर : इन्शिराह़

ऐ मुहम्मद, सीना तुम्हारा,
या हमने नहीं खोल दिया,
तोड़ रखी थी पीठ जिसने,
बोझा या ना उतार दिया?

ज़िक्र किया तुम्हारा बुलंद,
आसानी है मुश्किल के साथ,
करो इबादत जब फ़ारिग हो,
और ख़ुदा को अपने याद।

95. सूर : तीन

क़सम इंजीर की, जैतून की क़सम,
और क़सम हमें तूरे सीनीन की,
पैदा किया अच्छी सूरत में रखा,
क़सम अम्न वाले शहर म का की।

तो ऐ आदम की औलाद,
झुठलाता यों बदले का दिन,
यों तुझको है यकीन नहीं,
ख़ुदा है सबसे बड़ा हाकिम?

पैदा किया फिर हालत बदली,
पस्त से पस्त उसे कर दिया,
मगर नेक और ईमान वालों को,
बे-इन्तिहा बदला हमने दिया।

96. सूर : अ़लक़

पढ़ो ऐ मुहम्मद, पढ़ो, पढ़ो,
लेकर नाम ख़ुदा का पढ़ो,
पैदा किया जिसने दुनिया को,
करम वाला वो ख़ुदा पढ़ो।

या उसको मालूम नहीं,
कि देख रहा है ख़ुदा उसे,
गर बाज ना वो आएगा तो,
देंगे हम इसकी सज़ा उसे।

कलाम के जरिए इल्म सिखाया,
सिखाया वो जिसका इल्म ना था,
सरकश मगर हो जाता इंसान,
जब वो ख़ुद को गनी देखता।

देखो उसका कहा ना मानना,
और करते रहना सज्दा तुम,
इबादत करना सदा ख़ुदा की,
क़ुर्ब हासिल करो ख़ुदा का तुम।

कुछ शक़ नहीं कि बन्दों को,
लौट कर जाना ख़ुदा की तरफ़,
चलते जो सीधी राह पे हों,
मना करता भला यों कोई शख़्स?

97. सूर : क़द्र

नाज़िल करना शुरू किया,
शबे क़द्र में हमने क़ुरआन,
मालूम तुम्हें या शबे क़द्र,
हज़ार महीनों से जो महान।

रूहुल अमीन और फ़रिश्ते,
इसी रात में सब वो उतरते,
अमान और सलामती सुबह तक,
काम सब हु में ख़ुदा से करते।

98. सूर : बय्यिन

जब तक खुली दलील ना आती,
जो काफ़िर हैं उनके पास,
रहते ना वो बाज कुफ़्र से,
मुश्रिक लोग और अहले-किताब।

नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें,
दीन यही तो है सच्चा,
पड़ेंगे वो दोज़ख़ की आग में,
रहेंगे वो उसमें ही सदा।

अलग-अलग हुए जो अहले किताब,
हुए खुली दलील आने के बाद,
हु म हुआ था उन्हें करने का,
इबादत, अमन के इख़लास के साथ।

जो लाते ईमान, नेकी करते,
बेहतर तमाम ख़लकत से वो,
वो भी और ख़ुदा भी ख़ुश,
जन्नत में रहेंगे हमेशा वो।

99. सूर : ज़िल्ज़ाल

डोल उठेगी जिस दिन धरती,
निकाल डालेगी बोझ भीतर से,
कहेगा इंसान इसे या हुआ,
करेगी हाल बयान वो अपने।

जो भी किया उन्होंने होगा,
आमाल उन्हें वे दिखाएं जाएंगे।

भेजा होगा हु म ख़ुदा ने,
लोग जमा होकर आएंगे,

जरा भी नेकी करी जिसने,
देख लेगा वो उसको,
और करी जिसने भी बुराई,
देखेगा वो भी उसको।

100. सूर : आ़दियात

क़सम दौड़ने वाले घोड़ों की,
जो दौड़ते सरपट, हांप उठते,
पत्थरों पर ताल मारकर,
आग निकालते खुर से अपने।

पहुंच के जल्दी मंजिल पर,
सुबह को छापा मारते वो,
गर्द उड़ा अपनी चाल से,
दुश्मन के खेमें घुसते वो।

कि इंसान ख़ुदा का ना-शुक्रा,
और आगाह है वह उससे,
सख़्त मुह बत है करने वाला,
इंसा अपनी धन-दौलत से।

या नहीं जानता इंसा वह व. त,
जब मुर्दों को बाहर निकलना होगा,
ज़ाहिर कर देगा भेद दिलों के,
बेशक वो दिन ख़ुदा जानता होगा।

101. सूर : क़ारिअ़ः

खड़खड़ाने वाली, या खड़खड़ाने वाली,
तुम या जानो, या खड़खड़ाने वाली,
खड़खड़ाने वाली वह क़ियामत है,
हर चीज हिलाकर रख देने वाली।

होंगे उस दिन लोग ऐसे,
जैसे बिखरे हुए पतंगे हों,
पहाड़ हो जाएंगे ऐसे जैसे,
रंगी धुंकी हुई ऊन हों।

जिसके आमाल भारी निकलेंगे,
वह दिल पसन्द ऐश में होगा,
जिसके आमाल हल्के निकलेंगे,
लौटना उसको हाबिया में होगा।

102. सूर : तकासुर

कर दिया है तुमको ग़ाफ़िल,
धन-दौलत की ख़्वाहिश ने,
कब्रें भी तुमने जा देखीं,
पर आया नहीं यकीन तुम्हें।

होता तुम्हें जो यकीन का इल्म,
तो पड़ते नहीं तुम ग़फ़लत में,
जब दोज़ख़ देखोगे यकीन आ जाएगा,
पूछे जाओगे नेमत के बारे में।

103. सूर : अ़स्र

क़सम अ़स्र की, नु सान में इंसा,
जो ईमान ले आए सिवा उनके,
नेकी, आपस में ह़क़ की तल्कीन,
ताकीद सब्र की जो करते रहे।

104. सूर : हु-म-ज़ः

खराबी है हर चुग़लख़ोर की,
करते इशारे और ताने मारते,
गिन-गिन कर माल जमा करते,
हमेशा जिंदगी की वजह समझते।

लेकिन ऐसा हरगिज नहीं होगा,
हुतमा में वो डाला जाएगा,
ख़ुदा की भड़कायी आग है हुतमा,
बन्द जिसमें वो किया जाएगा।

105. सूर : फ़ील

या देखा नहीं कि परवरदिगार ने,
या हाथी वालों के साथ किया,
भेजे जानवर जो फेंकते थे पत्थर,
खाये भुस सा उन्हें कर दिया।

106. सूर : क़ुरैश

करें एक ख़ुदा की इबादत,
अम्नों-चैन से रहते-सहते,
जाड़े-गर्मी में कुरैश वाले,
बिना रोक-टोक सफर करते।

107. सूर : माऊ़न

या देखा वो शख़्स तुमने,
जो बदले के दिन को झुठलाता,
देता है जो यतीमों को ध का,
फ़कीरों के लिए तग़ीब नहीं देता।

खराबी है ऐसे नमाज़ियों की,
जो नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं रहते,
करते हैं काम, दिखावे का वो,
औरों को चीजें बरतने नहीं देते।

108. सूर : कौसर

ऐ मुहम्मद, अता की तुम्हें कौसर,
तो पढ़ो नमाज़, ख़ुदा के लिए,
दुश्मन तुम्हारे ही होंगे बे-औलाद,
करो क़ुर्बानी ख़ुदा के लिए।

109. सूर : काफ़िरून

ऐ पैगम्बर, कह दो कि काफ़िरों,
नहीं पूजता मैं तुम्हारे बुतों को,
और जिसकी मैं करता इबादत,
पूजते नहीं तुम मेरे ख़ुदा को।

जिन्हें पूजते तुम, पूजूंगा नहीं,
मेरी बन्दगी, मेरे ही सर,
तुम रहो दीन पर अपने,
मैं रहूंगा अपने दीन पर।

110. सूर : नस्र

आई मदद ख़ुदा, लो फ़त्तह हुई,
लोग दीन में ले रहे दाख़िला,
तस्बीह करो और मग़्फ़िरत मांगों,
बेशक ख़ुदा बड़ा माफ़ करने वाला।

111. सूर : ल-हब

अबू लहब के टूटे हाथ,
और हलाक हो वो जल्दी,
ना कुछ काम आए माल,
ना उसने जो कमाई करी।

दाख़िल होगा भड़कती आग में,
साथ में उसकी जोरु होगी,
उठाए फिरती है सर पर ईंधन,
गले में उसके रस्सी होगी।

112. सूर : इख़्लास़

कहो कि एक है वो अल्लाह,
माबूदे बरह़क़ और है बे-नियाज़,
हमसर नहीं कोई उसका,
बेटा ना वो किसी का बाप।

113. सूर : फ़लक़

कहो कि मांगता हूँ पनाह,
मैं सुबह के मालिक की,
हर चीज की बुराई से,
जो भी उसने पैदा की।

अंधेरी रात की बुराई से,
गंडों पर फूंकने वालियों से,
और हसद जब करने लगे,
हसद वाले की बुराई से।

114. सूर : नास

कहो कि पनाह मांगता हूँ मैं,
लोगों के परवरदिगार की,
ह़क़ीकी बादशाह है जो सबका,
उस माबूदे बरह़क़ की।

पनाह, शैतान की बुराई से,
जो ख़ुद हट जाता है पीछे,
डालता वस्वसे लोगों के दिल में,
चाहे इंसा हों या जिन्नों से।

दुआए मासुर

ऐ ख़ुदा, मेरे मरने के बाद,
इस क़ुरआन पाक के वसीले से,
हालाते क़ब्र से मुझे मानूस कर,
और नवाज तू अपनी रहमत से।

अमन के साथ, दिन और रात,
करूं तिलावत ये नसीब अता कर,
दलील बना उसे तू मेरे लिए,
और दुआ ये मेरी क़बूल कर।

इमाम बना मेरे लिए क़ुरआन,
नूर, हिदायत और रहमत बना,
जो भूल गया, उसे याद दिला,
जो ना आता, मुझको सिखला।

आमीन्, आमीन्, आमीन्

श दार्थ

अख़्लाक–चरित्र
अफ़्ज़ल–श्रेष्ठ
अहद–वचन, करार
अ़ज़ाब–यातना
अ़ज़मत–प्रतिष्ठा
अ़द्ल–एक वस्तु को दूसरी से बराबर करना
आमाल–आशा, उम्मीद, कर्म का प्रतिफल
इंशिक़ाक़–फट जाना
इंशिराह–हृदय का खुल जाना, प्रसन्नता
इबादत–पूजा
इ लीस–शैतान
इम्रान–आबादी
इलका–दैवीय विचार
ऐहराम–हाजियों के वस्त्र
कफ़्फ़ारा–प्रायश्चित
क़स़्स़्– किस्सा कहना
कहफ़–गुफा
क़ादिर–क़ाबू रखने वाला
क़ारिअ–दुर्घटना, हादिसा
क़ियाम–नमाज़ में खड़े होने की अवस्था
ख़ल्क़त–सृष्टि
ख़ूंबहा–ख़ून की कीमत
खैरात–दान
ग़नी–धनवान
ग़नीमत–युद्ध में जीता हुआ माल
ग़ालिब–विजेता
ग़ाशिय–नरक की आग, महाप्रलय
जलाल–तेज
ज़ल्ज़ाल–कंपाना
जानशीन–उ ाराधिकारी
ज़ुख़रुफ़–सजावट
ज़ुफ़्त–समसंख्या
तग़ाबुन–घाटा पहुंचाने वाला
तस्दीक–पुष्टि
तकासुर–प्रचुरता
त. वा–संयम
तस्बीह–माला जपना
त़हक़ीक– पड़ताल
ताक़–विषम संख्या
तिजारत–व्यापार
दानिशमंद–इल्मवाला
दीवारे आराफ़–स्वर्ग और नरक के बीच की दीवार
दोज़ख़–नरक
नफ़्स–वासना
नबी–पैगम्बर

नम्ल–पिपीलिका, चींटी
नहूल–शहद की म खी
नाख़लफ़–कपूत
नाज़िल–उतरना
निसा–स्त्रियां
फ़ज़ीलत–श्रेष्ठता
फ़ज्र–भोर
फ़तह–विजय
फ़ात्तिर–सृष्टिकर्ता
फ़ील–हाथी
बनीइस्राईल–यहूदियों की उपाधि
बीय्यन–ठोस प्रमाण
बरहक़–सत्य, दुरुस्त
बातिल–झूठ
बुख़्ल–कंजूसी
बुह्तान–इल्जाम
बेनियाज़–नि:स्पृह
मआ़रिज–सीढ़ीयां
मश. क़त–कष्ट
माबूद–हस्ती, ईष्ट
मुख़ातब–सुनने वाले
मुजादला–लड़ाई
मुनाफ़िक़–मिथ्याचारी
मुफ़्लिसी–दरिद्रता
मुम्तहिन–इम्तहान लेने वाला

मुर्सल–भेजी हुई वस्तु
मुश्रिक–शिर्क (परमात्मा के साथ
शरीक) करने वाले
मुसल्लत–आच्छादित,
विवश किया हुआ
रगे जान–सबसे बड़ी ख़ून की
रग जो दिल में जाती है
रुजू–प्रवृ ा
लैल–रात्रि
वस्वसा–बुरा विचार
वुस्अत–सार्म्थय
शरीअत–धार्मिक कानून
शिर्क–परमात्मा में उसके सिवा
किसी और को भी
सम्मिलित करना
शुअरा–कविगण
शूरा–परामर्श
सिफ़त–प्रशंसा
सूर–क़ियामत के दिन
बजने वाली तुरही
सूर:–क़ुरआन की सूरत (Chapter)
ह़दीद–लौहा, फौलाद
ह़ामिल:–गर्भवती
ह़ि मत–बुद्धिमता